अभ्यास - 3

स्वाभाविक दृष्टि व अज्ञात केंद्र का भूमिका अभ्यास
(क) शीर्षकः

अन घुष ये शास्त्रीय श्लोक के विषय में विद्वानों में सहित है। पारसेन्दु हरिधाम (स.स. 1630-65) के रचनाकाल की दृष्टि से रक्षा कार्य रामचंद्र द्वारा नवंबर 1680 से 1682 की अवधि की पारसेन्दु घुष की लीला दी है। कुछ पारसेन्दु के द्वारा वर्णित नायिका पाकरण "कब्र कबनुआ" का प्रकाशन घुमो 1870 के आर्थिक लुत्फ से आरम्भ हुआ था, एवं बच्चे के चेहरे पारसेन्दु घुष का उदय नामनाम उत्तेजक है।

भ्रात। घुष के आर्थिक का वर्णित घुमो 1670 में प्रकाशित करार का। पाकरण नायिका के प्रकाशन के ही पाला जाय, तो पारसेन्दु घुष का हीरामायण घुमो 1870 में नामनाम उत्तेजक है।

(ख) नारकणः

पारसेन्दु-पूर्व रीतिकालीन काव्यका में एकान्तित शृंगारलिका की अभिज्ञता है। इन वर्णित में कई तथा शृंगारलिका है। रीतिकालीन काव्यका का काव्यका का प्रायः था। बांध यह है कि गुरु घुष की नव आर्थिक नामनाम के लाभ उसे शृंगारलिका का मैदान न का एक। वह आवरणों की होतीं। पारसेन्दु ने उस पौर शृंगारलिका से काव्यका का उदय का। उनकी प्रकाश का। प्राकार करते हुए आवरणीय हकार। प्राकार भांतियां ने कहा है: "पारसेन्दु के प्रेमवर्धक आवरण-वार्तिकाय की हुदसिंह वे रंगत कर राज्यकों और रूपार्जिक के दस्तार में जल्दी गया था, पारसेन्दु ने काव्यका को जीवन गायक की कविताओं के पौर में उत्तेजना। उन्होंने उन तत्त्व वो अपने मात्र आवरणीय में स्थान किया और हृदय तरक से उसी दृष्टिकोण से रंगत कर जीवन के आवरण लाये रंगत। उनका
वचना काल्य पूर्वजनन प्राणवात्रा का उच्छ तूक है। इस नवी शाही ने हिंदी काल्य लहर या शृंगार के प्रबंध में वजी आ रही थी। अन्य उच्छ और निर्गुण, निरत और रंग, रंगमंच और रंग, रंगमंच और रंगकल्याण की कार्यों में बहुत हुई हिंदी कला का मारवंदु ने वर्धित तिलात कला नव और शहीद-सुन्दर है नवा उत्कर लोक-भिखने के रायपथ पर धृत कर रखिया। इस तरह देखा जाता तो बीतन और कला का द्वार खुला सम्पन्न गुण: स्थायिक हुआ। काल्य का लंब बदला, पाल बदला, रंग बदला। रंगीन गाने और रंग पक्षेव पेश किए नए की कला की शाखाएं कुला मे एक कालंडी है। उन उच्छते व ज्ञानते विदेश में यह ज्ञानते क्रांति की प्रभुत्व प्रमुख हो गई थी। उने प्रभुत्व का बशक करण का आदित्यार है। मारवंदु का प्रभुत्व यह आदित्यार के गृह प्रभुत्व थे और उनके व्यक्तिगत आदित्यारका उपाय पारंपरिक। यह आदित्यार नवाब की कला के आदित्यार थे। अपनी स्वीकृतिवानी की कारण क्या नया, क्या पता, गरीब और उन्हैंगी उपरुर्वीक आदित्या। और व्यक्ति वाचन की सहायता से नया नया है तंत्र को प्रमुख हो गया। वह अपनी उपर और स्वीकार स्वाध्याय का प्रमुख बनाया। इस वरस वह प्रभुत्वों के कारणों के रूप में मारवंदु का मानन कर नही नही। इसकी इस क्रांति का नाम अवश्य है और दो अवधिकालिक है। इसके अवधि है।

(६) स्वीकृति प्रभुत्व प्रभुत्वों:

का का का मारवंदु स्वीकृति प्रभुत्वों के नियम में उल्लेख के देने।

1. सरायी नरैण गुप्ता का वह कथा उल्लेखनीय है: मारवंदु का काल्य की
2. हिंदी प्रभुत्व एक निरंतर ता है और अनेक समय की और गुणहृदय है। उनके उपर भोर

1. सरायशहीर प्रलय शरीरी: हिंदी लोकसंस्कार उपाय उद्यम और विकास, पृ.१५६७.
2. मारवंदु: हिंदी कला का ज्ञानत युग, पृ.२३।
3. मारवंदु नवाब हिंदी कला में धार्मिक, पृ.५०।
कन्या प्रवृत्तियों का तरह हैं:

(१) माता-पुत्रता और बच्चों का काल्पनिक उपयोग
(२) सार्थक, सार्थकता एवं आधुनिक विचारों का काल्पनिक उपयोग
(३) दैवत्व तथा पररत्न (४) सार्थक सार्थक बनाए

परिपरारी रूपी सार्थकता का संस्करण (फ) सार्थकता की पाठ्य

१. छात्र पुरुष-पुरुष ने पारस्तेन्द्र-पुरुष की प्रति प्रवृत्ति ये लाहौली हैं: राष्ट्रीयता, सार्थकता, पतित-पतियों, प्रवृत्ति-कारण, हरण-हरण, राष्ट्र-राष्ट्र, लघु-लघु, सार्थक और कालिक ।

२. यह गट प्रवृत्ति है पररत्नविद्या देने वाले जीने के दैवत्व की प्रकृति जियम न दिखाई पड़ता है, राष्ट्र और शासकों के प्रति प्रवृत्त की एक विशेषता और रस्सू के प्रति प्रवृत्त हुसैनी वित्तवाद और राष्ट्रीय नीचे पानियाँ एवं वाराणसी वारे में एक शाफ़ बूढ़े दृष्टि सांझ होता है।

पर्याप्त स्त्री राष्ट्रीयता पुल ने राष्ट्रविद्या या राष्ट्रविद्या देने छात्रों और राष्ट्रीय पुल है रूप में राष्ट्रविद्या का रस्सू का स्थान वेप में दीर्घ हूँता है।

पारस्तेन्द्र-पुरुष राष्ट्रविद्या का दृष्टि स्थिरवाद था, का अनुसार वे स्वाधीन हैं, उसकी उन्नति के लिए मान्यताओं एवं वाराणसी वारे में स्वभाव बने नाटन में काफ़ नियम है।

एक बाय यह कहते हैं कि पारस्तेन्द्र-पुरुष के दैवत्व और राष्ट्रविद्या राष्ट्र-राष्ट्रीय नीचे पानियाँ वाराणसी वार में पौधा गांव नहीं हैं; परन्तु एक विशेष राष्ट्र की पाठ्य की जन्म आते हैं जो कही समय नहीं परिपरारी बोलता है।

पारस्तेन्द्र ने बन-बागान के अभ्यूद्व पककर अपने लार्थकता की मात्यम देश बनाने की आजाना की छुट किया। छात्र राष्ट्रविद्या राष्ट्र ने पारस्तेन्द्र-पुरुष के लार्थकता की अनुकूली लार्थकता कहते हैं वह कही अन्यां में दिखा है। उसका लार्थकता पुराने परअपार

1. छात्र कृत्रिम पाराग्राफ दुर्गा: आधुनिक काल्पनिक काल्पनिक पाठ्य चारा, पृ.२५-२६।
2. छात्र पुरुष-पुरुष राष्ट्रविद्या का विविधता (भाषानव विषयक छात्र शोधक) पृ.२५५।
हाँ तो उन्होंने उन्हें सोचा उपयोग नहीं दिया गया। और पी। उनकी शांति में
मनुष्य की एकांक, समानता तथा प्रातुना की। पहले-पहल बच्चों के तथा शांति
हुई है। मात्र उसी का प्रस्ताव करता है र हान्देन्द्रका के नाम वाणि वाणि में कहे
बाद पर मात्र की प्रातुना वाणि हुई है। वे थोड़े-थोड़े प्रति थे का: गीताँ 
एवं नाटकों में विशेष रूप से कंद्राकी के मात्र-पावन का दुनिया प्रस्ताव हुआ।
हुआ है। साथ में रंगिन ताल में बच्चों का शांति बाणी उसका साधन में
प्रवर्तित हुआ है। परन्तु यह कहीं ना दर्शना का किंगारा वाले शाक्ति नहीं है।
उस शुरु का प्रमुख बाणी पर प्रत्यक्ष विकसित है। प्रत्यावर्तन की प्रमुख उस शुरु 
की उल्लेखनीय प्रमुख है। पार्सेन्द्र उद्वारका प्रत्यक्ष वाणि और मात्माजय संस्कृति
के प्रति विराज रखने वाले कर्म के बाद, यह उनकी वाणि में प्रातुना का विराज
बन रहा है।

(क) पार्सेन्द्र कालीन कार्यक में निर्दिष्ठ नाम-मुख्य:

दैवी किनारा:

मात्र-प्रथा प्रथावर्तन का काम किया गया। यह उस शुरु का वाणि में
चेतना की व्यक्त करता प्रयाग मात्रा में हुई है। वह एक ऐसा चुना है। जो
विवेक नहीं है। प्रत्येक वेतन का क्रिया, वैदिक भवन निवार के होते हैं, जै: वह
वाणि कुल है निर्दिष्ठ प्रायोगिक है। वेतन का उल्लेख तो उसके लिए प्रयाग करने में
रूपतित स्तर अने, उसमें प्रत्य बन बन बनाता है। मनुष्य के निर्दिष्टों का
परिवर्तन-स्वरूपण होने के वह एक पश्चात्तांतक या नामिनक गुल मनाता है।
और वह गुला ज्ञान-देवता गुल होने पर रागार्थ-गुल अनष्ट है।

शरीर स्वरूप एक पश्चात्तांतक है निधान उद्वारा मात्रुद्वारा की स्कन्दनाथ और
उसकी संस्कृति की रासाय कहा है। डाक कीरि नारायण जूहे के व ने कहा अभार
किस कार्य में वार्तिक वैदिक है तब पदार्थ की और तीर्त हो और तीलका उपयोग
नाकुटानिम की स्वस्नता, प्रभूति तथा उन्नति हो सूच देवे भविष्य की रचना कह जाते हैं।

1. देवरे अंत ते गृह-ग्राम रूप में।
2. वर्तमान काव्य की काशीति ते प्राण चारौं के रूप में, और
3. विष्णु की भावना ते भरी हुई बिन्नता के निलयन धारा।

पारस्वनु काव्य के एक काव्य राजावर्ण गरीबवानी। ने पाल की उच्च देश के रूप में गणना कर, उसकी विधालोगी की, निर्माणों की पुरुषत्व का वर्णन कर देश-प्रेम जोतिश्मण निकाय है। वे हिंसें हैं:

द्यारी उच्च पाल देश
उसे देख और चारा है, उन विमनिर्मि अविष्कार।
वे गंगा विद्वान नदी है, विज्ञानिक परिवेश
राजावर्ण नित्य प्रति वाकाइ, जो जो रवि-रामेश।

ये और मलान नहायुलाई और हुलाई और देश-दुःखा, काव्य शायर ते व्यक्ता का व्यक्त करता है:

जहाँ शायर भर हरिभक्षक नखु भवात्म, भवाती।
जहाँ राम दुर्विभिन्न दाङुकव समाज।
जहाँ जीव करन की जाता दिलाशी।
वही रही साहित्य कला काव्या राजप्रा।
अ जहाँ देवता वही वहुँ जूझांश हुत परिवार्।
हर वा पाल दुःखा न देखो जाइ।

1. सरस्वती नारायण युक्त: काव्यकाव्य भर, पृ० ५१।
2. जहाँ "", "", पृ० ५६ वे उज्जवल
3. पारस्वनु: पारस्वनु नाटकवाणी, पृ० ५३।
भारत की सुरक्षा कार्य है फिर आज वन गयी है, क्योंकि पार्श्वीय नीति के प्राचीन काल नागरस्य प्रवीण लाभ पक्ष है और इसके क्षेत्र उन्होंने ढाई-डब्लू प्रवीण मत हुआ है:

लाख न हो भारत पूरा भारी।
सबकी रिवाज में हरी हुलारी।
राजा, किस तुलना में बढ़ पायो।
उस रिवाज पालन हुलिया वनारी।

उस भारी हुलिया वनारी देखन व्याख्या के उपाध्येय वंशया -

प्राचीन उदाहरण, हो पानीका।
बहुई रहे हुत घरीन ध्वीराज
हाँ रवीरी निकल तु भारी।
बहुई लहरा भारत मंजारी।!

वो जैसे आपे पार्वती - कार्यकल्प व्यंग्य प्रशंसिकाओं में व्याख्या गया है, किस एक और शायरों का युग राजनीति का उपकरण की उस युग में घिरा है, एक ध्वीनावृक्ष स्वतंत्र में उस कार दी ध्वीलकार दीया पड़ती है। उनकी पान्निका एवं पारम्परिक में निहत लाभ से हुलिया की स्पर्शवती नहीं प्राप्त होती है। राजप्रेम या राजप्ति का युग राजपारति हुलिया जनन क्रांति जाता है, वह शायरों नुहा है।

इसके आने राज्यकारों के युग 1857 में भारत में सुप्रभावन के अलावा पर राजहार के उपाध्याय ने तीन वर्षे का व्यापक प्रमाण राखी है।

वाहँ! रखन रखत सदा नैवा पाल निवास।

-------------------------------------------
1. पार्वती इन्द्राकुमारी : पृ २०३।
2. वक्ती। , पृ २०३-२०४।
कन्यन की पारलेंदु ने ग्रंथिर राज्य की और उनकी परिस्थिति को है, तथा:

परस-ग्रन्थि पल्ल प्रसन्न जीवन जागरूक।
बूटन- देवता राक्षसः पद परस्पर रंग जागरूक॥

तो पारलेंदुजी के संभावना पल्ल ने कहीं प्रकाश पा फ्यामा है और उनकी जागरूकता बाँट उठाई है:

स्त्रीयोऽविषयः ज्ञान न्याय नीतिः कि बाँट।
श्रेष्ठो वासु नीरजः कहिः काहुः कुल कहाँ॥

पारलेंदु काशीन ज्ञान में नारायण वार परमार्थार्थार्थां कृ। नारायण की पहचान है ही। परस्पर व्यवस्था में लज्जाग्रस्ता की चर्चा है नारायण का अवूर्तत्व की सुवश्चल है। हुई वह पारलेंदु कांड में सहस्राण्त एक मार्गदर्शक रंग श्री कृपया में व्यवस्था व्यवस्था के धार्मिक पुरुष का साधन उन्मोचन करारे कथित के में है:

यारो यह नारीं फळका घर।
हुई कर या नाक दृष्टि तर बोलके चढ़ाया घर।
वर्जन ही ने दाँतें यह दुरे पड़े घर बरन।
ग्राम नहीं दुरदरा वा गरी गरी बिये पाये घर॥

अवने एक प्रकाश नामक पारलु दुःख में भी कथानिम-व्यवस्था का विशिष्ट उच्चार


1. पारलेंदु प्रथाकरी, पृ ६३६।
2. वहीं "" पृ ७०२।
3. वहीं "" पृ ६६४।
4. वहीं "" पृ ६४२।
उन्होंने कहा है:
वहुत हरी फैली चर्म, अद्भुत भुकावत का बने।
तो हरे हरे बाल उस कार जो खुलते हैं। फूलकला पर अभिमान व्यावहार वर्तमान शरीर अवस्था नै कर्माणि -व्यवस्था है। नूतन की पुराणी वही है।

बाल-व्यावह ने पुराणे जूता का उस जूता में कारण निरोध हुआ है।
उक्तह जूतमान इति नूतन वार्त्तात है:
बाल-व्यावह का विचार उज्ज्वल उनकाम एकता बिधि;
बाल-निःशंस मित्र निवास दूर लाग लै स्वयं दूरिः।
या ते कारण विवार बाल-व्यावह नूतन की कर्माणि;
संवा विना केहिं दूरे अभिज्ञान व्यवहारः।

हेमस्वर श्री सो महर्षि भारता -
हेमस्वर कछाके- यो उन पाण्डुर जूता शा उचन हंसकाम है, उनके प्रचंड श्रीमय या उनकी मर्म फूलकला की पुराणे जूता या क्षत्रिय फूल झेलती है और यही मंडल अपने संवार साधारण अनुभवत है, उक्तह महलपुर व्यवहार है। वह अध्यात्मिक जान है।

मार्द्वेनुद की कार्या में एक शरीर व्यावह जूता के मार्द्वेनुद व्यावहार प्रमाण है। उनके शरीर वारणि ने मर्म शरीर की पुराणे जूता है। ये मंडलयं सर्व प्रथ्यु मार्द्वेनुद की प्रमाण है नीति नाधार है। वहाँ मार्द्वेनुद शास्त्रहरू के कुछ शास्त्र है,
कहीं गी ज्ञानार्थीयता से कारण उनके पाण्डुर में संबंधित का दृष्टि नहीं हावा।
(६९०)

वैद्यः  वृंद के खा फा पार मौर्छ की जाये  
गरन-पद-कमण - पाक की रज बार्यें खिर नीजी ।  
बाक्क जल सून को गड़ीया ऊप दुबा भिंत पीज़  
की रायज़ पुज़ बह घर दुह गल्लिया हरत नीजी ॥ ६  

उसके कन्या प्रेम का एक उदाहरण 'दिये विनाह नहीं' रखा गाया । बैठे उसके पत्र  
हुज्जा के वे उद्याचः  

राह क्यों एक म्यान वास्त दौँ ।  
दिन त्यान में दार-रस श्यामी देख्स क्यों मार्ये कोप ॥  
अनुभाग का देख इसी उन के चुराक जो मूषी ॥  
हरावलं प्रभ ताई कबीर-'ज्ञान काटी तो फिरारे फुक-फुके ॥ १  

जान की वेप्पार ज्ञान की - प्रेम की लेख्विका पद्म करने के लिए एक किसी वास्तवका  
है ? प्रेम को कहाँ जल क्षला उनकी अदाहुत कल्यन की ज्ञानी की हिती है। 

उनकी पत्नी की ज्ञानका में क्षितिजता का प्रमाण नहीं है । जले प्रेम का  
प्रभाप उनके का श्रेष्ठ है । कहीं भी कन्या परिपाणी उनेंग ग्राह नहीं है ।  

प्रशंसा लाभ करने पर दुर कते यारे ।  
कर्भ को लक्ष्मण करने सूच यी नहीं उठाते ॥ १  

बापब -  

प्रभृति जल करने यागी येथ्य ।  

उपकर हाय वाप प्रलंब करने हृदि चौथे मीठ ॥  
वहे काद लक्ष्मणके श्रीवी है का देवका का जैन ।  
कपली वारी और जीवने रा जैन नहीं दैन ॥ ५  

------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

१. नारायणदेव : ग्रन्थार्थकरी, पृष्ठ ६१२।  
२. कायसी, पृष्ठ ५८५।  
३. नारायण : वाणिर अदनपाप्त (वाणिरिक हिन्दी) काल्य वारा हर उद्धृत)  
४. नारायणदेव : ग्रन्थार्थकरी, पृष्ठ ६१६-६३७, ( जैन द्राक्षर से )
एक परम देवताशिव श्रृंगार पर सवे-कथा ने वे मानते थे।

उन्हें तो पार्श्वकार है न्यारी।
रजनी दारी, प्रान बंगते हिन्दु होते वो न्यारी।

निपातिये हुमए को अंतर? नुआ भोग भानि है का मे नाको मुख खो।

उनकी यहां साधारण जो एक नैसर्गिक मुख्य है उस तरह में कितनी उत्पात का प्राकृत है। कई वर्ग के भोजन वर्ग निर्धारण का एक मूल्य वाला उपर जाता, जब उसके भोजन-मार्ग में पार्षद पैदे रौंगियों एवं धन्यादेह का योगदान करने है।

नारी के मूल्य कार्यकालः

पार्षदुं झार मं नारी-विश्वाल व विश्व-विवाह वाद के समय में वो प्रथा की उत्पात होती है।

(१) जिन काळनाटके में पार्श्वारुण्य पृष्ठ से परिशोधित नारी-विश्वास एवं विश्व-विवाह के विलुप्त स्वर है उदाहरण के यहाँ कार्य के विश्व-विवाह वाले विश्व-विवाह के प्रारंभ है।

(२) जिन कालनाटके में नारी-विश्वास एवं विश्व-विवाह के प्रारंभ धर्म व सामाजिक दृष्टिकोण पृष्ठ है।

यहां देखा जायें कि वो रूपरेखा के तीन एक विश्व विश्वश्रेणी प्रतिग्रहित है, वह विश्वम् विश्वश्रेणियाँ विश्वम् मान्यता, वारणा और मुल्यों का जन्म लेता है। एक पार्श्वारुण्य की नैसर्गिक मूल्य वो दुरागर नवीन, प्रामाणिक मूल्यों के उदय के रूप में वहांकि बनकर है।

-------------------------------------------------------------------------------------------------

२. पार्षदुं : द्राक्षवाली, पुज ६७३, (भैन भूषण दे)
राधाबरण गोस्वामी का दृष्टिकोण उस युग में व्यापक था। उसकी विचारधारा उनके जीवन के साथ-साथ उनकी दृष्टिकोण उस युग में शुरुआती धारणा है।

विचारधारा व्यक्त करना उनके पहले दर्शन नहीं है, उनके विचार की उपयुक्तता है। व्यक्ति विचारधारा के दुर्लभों के प्रति उनकी सहायता दृष्टिकोण होती है। वे विचार को दूर्लभों के उपरान्त के लिए उपलब्ध है प्रारंभिक कहर करते हैं। व्यक्तिगत व्यापक व्यक्ति का मानने वाले हैं और वे इस व्यक्ति को देखने हैं उनका वे विचार करते हैं। योजनाओं के गुण का व्यक्तिगत व्यक्ति का आधार व्यक्ति के प्रुद्योग की नाप होते या उपलब्ध होते देखकर व्यक्तिगत धीरी पर तीव्र व्यक्ति करते हैं। हमें विचारधारा का वे नीचे विचार करते हैं, उनके विचारधारा उनकी एक धीरी से स्वाभाविक होते हैं:

"विचारधारा उनकी दृष्टिकोण में एक आकर्षीत धारणा है, वह विचारधारा उनकी प्राचीन परम्परा के प्रति उनके विचारधारा का प्रारंभिक कहर करते हैं।"

हुई का कौन नहीं गई हूट, बुझे के पर आये हैं कुट।
हुटाओं व्यक्ति देखकर मन, नहीं हुआ कुटी चिह्नित कर।

हुई विचारधारा दृष्टिकोण रहे वाले कवार्तकों में पात्रतेंदु प्रकट है। व्यक्ति विचारधारा की वस्तु हैं, दृष्टि पात्रतेंदु वारण में प्यारा अवात यह नाचता है।
पात्रतेंदु में स्त्री की प्रति और उसकी विचारधारा के प्रति वस्तुकोण व्यक्ति की है। वापस हरिकेन्द्र श्री-विचारधारा का प्रमाण आया रहते हैं। वे नारी और पुरुष में में भी नारी ग्यांग तारा रात्रि, विचारधारा और जैन में पुरुष कलाश बालते हैं। जैसे-जैसे हरी बालों रामकेश, वहाँ वित करों शिक्षित।
वह नारी बालों पुरुष या में कुट न चिह्नित।

----------------------------------
1. डा० सेंफो नारायण शुक्ला: वाद्यक नारायणाचार, भोज ६७ व्य उद्धृत।
2. वर्षा "" "" "" भोज ६७ ""
(1933)

वीरा, व अनुभव सकी वार्तकी ऋषार्गि ।
शीघ्र जान विचारित युग अपना लक्ष जग नारि ।
नारी गर -अनें की वार्तकं स्वार्थांन रनय ॥

पंक्तित ग्राम्य नारण्यन फिन भी अपने सनाते के दोराते से युग उपयोग के वे विवकासों एवं वाक्कों के प्रवाद तब वहाँ पुराण रहते थे।

कार्य-पुरुष की दृष्टि से वार्तक-दुनि की कार्यना:

वार्तक-दुनि या कार्य-पुरुष उनी निनी विवकासों के कारण जीवन दुन्या में पिन्न लीटे हैं। वे मुल वार्तक की वार्तक से पद पर (वार्तिन) प्रारंभित करते हैं। वार्तक-दुनि रीतिकार्यन कार्यकाल ने संस्कृत-कार्य-शास्त्र न मन्िान कार्यकान्त दे कहीं पिन्न स्यायण नहीं की है। संस्कृत वार्तक के विवकास संस्कृत ने कार्य की जात्मा के सम्बन्ध में अपने-अपने का प्रदर्शण करते। उनके कार्य की जात्मा रख है, 'वहीं वर्तमान स्वीकृत हो जा।

वार्तक वार्त दुनि ने व र कार्यकारे कार्य-वर्तमान: प्रकाशि ॥

कार्यवाच से रख के 'किन्द्रिय' मी की अपे का प्रकाशन नहीं होता' तक हुमस्व मिला है। हम उस चाट में प्रकष्ट रवरवरा को उन तीनों रवरवरा के आयार पर देते। तथा उन रवरवरा में सबके की 'कल्याणप्रक कवितावर्त है, तथा उनके 'लक्ष्यांका की पावना निर्धार है तथा उनके 'दूरकर' का प्रारंभन किया गया है तथा उन रवरवरा को पहुँचवात तथा सहमति के निम्न दर्शकों होते हैं...वार्ति...

पार्तक-दुनि कार्यकारे वार्ते दुनि माना में कार्यकारि की अ वहीं हैः

-----------------------------

9. वार्तक-दुनि : वार्तकारकी... (वार्तक-दुनि ग्रन्थाधारिकी)
10. वार्ताक मरत दुनि : वार्तक काल 128, 2-34
9. मन्त्र-नावना के फल या वायर्फी गीत- रक्षार।
10. लघुक-सुत्तार, सन्तान-सन्तार, दैव-श्रृणि वार्ता के समक्ष भैरव गीत के विषय में प्राकृतिक रूप से लिखा है।
11. काव्य और वस्त्रायमित्र, रीति-नियम वार्ता के विषय में प्राकृतिक रूप से लिखा है।

इनके अतिरिक्त दूसरे प्रकार की रचनाओं में - हरे ग्रहार की रचनाओं में लघुक-सुत्तार की पावना निरंजन है। सत्सरीकान्त वार्ता की रीति-नियमित्र के निराकरण के साथ साथ धर्म निरंजन का स्वर है। फल या वायर्फी गीत के हेतु है। परन्तु उन रचनाओं में - उन पदों व वायर्फी गीत के हेतु है। काव्य की उपस्थिति की वार्ता में मौजूद हुई वार्ता की वार्ता की रीति-नियमित्र है। स्थान पर कथन का वायर्फी गीत है। उनमें वायुक्त व राम-नलन को जगा कर्ता वही प्राकृतिक रूप से मन्त्र-नावना का है। उपर वायुक्त या तरह को मन्त्र-नावना का है। वही कृति चन्द्र वायुक्त का है। उनमें वायर्फी गीत का समक्ष वार्ता की रचना में प्राकृतिक रूप से राम-नलन का निकल काव्य है। वही कृति चन्द्र वायुक्त का समक्ष वार्ता की रचना में प्राकृतिक रूप से राम-नलन का निकल काव्य है।
भाषा का प्रयोग फिरता है, का: राजमुख़ि की दृष्टि से पारसेन्दु के बैठकी में मनान्द्र के कर्मचारी से ही बस्त्र का। राजावक द्वारा अतिथि प्रदर्शन बनाने के लिए राजनीतिक दृष्टि से अंतर्गत है। पारसेन्दु गन्नावरी के ज्ञापक प्रेरणा वारदात, प्रेम ममतवाट और प्रेम मास्टर के राजनीतिक कार्य करने के लिए उन्हें मनाने से उपस्थित का सिमटा हो गया। जबाबदार राजनीति द्वारा न हो उनके विश्वास में रहा है: वे बिल्कुल वातावरण के अन्य सार खुश का अभाव था। पारसेन्दु का रुढ़ित से एक पहलुपूर्वक कार्य - ठाकुर कामरोज की पाक्रूण मनोभ्रमण के कार्य था।

केल्यं-दार्शिता, पालुका, रेत-पीठी और रास पुरा भाषा मात्रा उनकी राजनीति के रूपक चरण है। जबली व्यवस्था के रूपांतरण के उद्देश्य पारसेन्दु कृषि कार्यकारी में लंबे समय दृष्टि से होता है। प्रेमजी शर्मा-देसा नामक नाटय-पुरुष की विशेषता कहा उसके कार्य में दृष्टि रखी नहीं है। प्रेमजी का परिवार कर्मन कहां की पाहक नहीं लगा पड़ा है। केवल परिवार का कार्यरत करने हेतु गुप्त प्रेमजी निभाया नहीं है। एक वात स्वरूप है कि नक्षत्र है ओर की दिना में ललित द्वारा पाहक कार्यकारी की तारीख करीं तथा नायि नहीं रखने लाया। राजनीति पारसेन्दु की बड़ी वहीं की राजनीति का वाच्य वालक पहलू न होकर गैर-वाच्यवादी पहलू की वर्तमान पिा या करता है, इसलिए डाकु द्राणार वचन का अभाव है।

निष्कांश रूप में वह तहा या सकता है कि पारसेन्दु हारिहरसंथ हिंदी शास्त्रीय के द्वारा अपने एक ऐसे कथासंग्रह पर वक्तव्यित हुए हैं किसी समय अभावित और अपहरण प्रवृत्तियां, देश और राज के प्रांत प्रेरणा, अव्यवस्थाएं के गंभीर और उन्होंने उल्लम सोने की प्रेरणा एक लावण दृष्टि से होती है। जब हो एक दिन पर आर्यात्मा और नवीन के एक विश्वास में उनकी बायु का संबंध दिया है। सावधान। संस्कृत जी के नामांक, निराकार वाचन का विशेष उस दृश्य की कार्यकला का नया रूप है। रंगवाले रंगवाले कुंडलियां के साथ स्वान पर विश्व कुंडल की पावना दे गुण राजपूत द्वारा एकल करते हैं उनकी परशुराम वृत्ति के उदाहरण है। उन्हीं दृश्य के दैश प्रेरणा विश्वास

-----------------------------
1. डाकु  गणपतिबन्ध  गुप्त : हिंदी शास्त्रीय का वैश्वानर इतिहास  पृ ६२२
2. जबाबदार राजनीति  हुड़ : विश्वासी वाङ्मय  पृ २०  १८४।
3. डाकु  सुनीलवन्द्र  गुप्त : हिंदी शास्त्रीय का इतिहास  पृ ५७० (प्रो दैश के०)
विषयक रक्षावेणि उनरि वृद्धि की नायकताओँ दे स्वाधीन ज्यादा कृषि राष्ट्र के संपर्क में प्रति की आवश्यकता है। राज-नैतिक की भूमिका पी हम-नारायण भारती रहती। शासनों के बुलायेर के प्रति एक रूप वार्तालाप के साथ और दीन-दरबारकुर्मण्डल के प्रति सहारुणता की नामना शासित प्रकृति हु। कृषि की कार्यक्षेत्र युग की क्रमवार प्रति वस्त्र प्रकृति है। यह वर्तमान काल की विश्वास का प्रति स्वभाव इस कृषि की विशेषता है। विश्वविद्यालय कर्तवा ने प्रमुख को पुनर्खण्ड करते हुए पकड़ता हिसाब और व्यवस्थापन की साधन सीट बदल लेते हुए वर्तमान अनुभुति का जोर नारायण से विविधता बुलेख का उन्नयन और वाणिज्य में विनाश किया। कृषि विभाग से हस्तक्षेप पर्यन्त प्रति सहारुणता प्रकृति उनकी उपयोगिता का, कार्य नारायण का दृष्टि है। युग की निम्न-निम्न जानकारी की उपयोग का कारण है, कृषि की भावना। अविश्वसनीबारी के एक कृषि में बांधने के साइ उत्साह की उन्नति का उनके ही प्रति विश्वसनीयता शासन। उस कृषि की अन्य वर्तमान एवं उत्थीतियाँ को प्रति विश्वसनीयता की उपयोग करते में उन्नयन के कपिल नवीन जानकारी का परिवर्तन किया। जोर युग के संग्रह में कई पारंपरिक पुलियाँ के आशा रघु नवीन के उदय में भी प्रकृति प्रतियोगिता के लुप्त में अर्घी बच्चा हु।

(व) युग का विवाद दृष्टि का चँद्रकांत नायक कृषि की चर्चा करते हुए नक्षत्र की दृष्टि का नायक करते हुए।

चर्चा: विवाद क्षेत्र के चर्चा के संपर्क में विचारों में प्रकृति है, हिन्दी नारायण के विचार में कोई फलस्वरूप नहीं है। वाचन कृषि कर्तारों ने इस युग का स्वार्थ लंबे १९७० से १९७९ तक गाव माना है। जयपुर खूँझ वृथा १९७३ से १९७८ तक माना है। युग का विज्ञानिक गुरु ने इस युग का चर्चा करते हुए १९०० से १९६० तक माना है। वातावरण विज्ञान के प्रति युग की नारायण की。

nota

1, वातावरण विज्ञान सूचित: हिन्दी वार्तालाप का विज्ञान, पृ ५५२।
2, वातावरण विज्ञान सूचित: हिन्दी वार्तालाप का विज्ञानिक विचार, पृ ६५३।
बहुत उन्नति का कार लाया है। उन्होंने उसका जार्मा यहाैं ६६०० वि ६६२० तक बढ़ाया है। २. डाः नैन्द्र ने विवेकानंद का जीवन व्यवस्था-काल कार करके उसका जीवांकन यहाैं ६६०० वि ६६२० तक पाया है। ३. डाः देवीन्द्र ने जापानी नेपाली। को हास्य तिवार विषयक को चित्र के पीड़ा राजनीतिक रिवीव वरण का जीवांकन यहाैं ६६०० वि ६६२० तक पाया है। ३. जापानी विवेक अंतः कार्य का विवेकानंद का जीवन यहाैं ६६०० वि ६६२० तक पाया है। विवेकानंद का जीवन का जीवांकन यहाैं ६६०० वि ६६२० तक पाया है।

नामकरण:

आपातर शुल्की जानकारी कार का विविधाय विवेकमें विवेकानंद का रिवीव उद्योग का नए स्वतंत्रता पाया है। उस यूनने 'विवेकानंद' के प्रमाण की है स्वीकार करते हैं।

इस कैररी नामकरण शुल्क में अपने पूर्वप्रिय जापानी राजनीति शुल्क की विवेक रिवीव उद्योग का जीवन को व्यापक अर्थ का कार की नाकाम बनवाने का स्वतंत्र रिवीवानी की है। ५. डाः उपाध्याय का तारा का जीवन यहाैं ६६०० वि ६६२० तक पाया है। उसका नाम 'विवेकानंद' का रिवीव का जीवन यहाैं ६६०० वि ६६२० तक पाया है।
(२२३)

डॉल कीनबाज़ गुप्त ने उनके प्रभाव का उलझन इस तरह किया है : रहस्यी दार्शनिक
प्राचीन के रंगीनियों का उल्लास पढ़ा कि उनके दार्शनिक शैव का कार्य रंगीनी
पुल के नाम से प्रशब्द को गया। ——— पानी और लाल बोले एक नहीं थी की
बारे ज्ञान के लाख बि. वाले वार्ता ( के ) बुम में रंगीनी का कार्य पहला
है। ६ रंगीनी की बहुतों सुवारी प्रतिवन्द्र के बारे, इस युग के नामकरण के
विषय में जो पत्र उपर लिखा गया है, इस उदयन मानते हैं। वर्षों ने संपादक,
रंगीनी, पानी-सुवारी के प्रथम सम्बन्धी, पारसीय संस्कृति के परम्परागत और
पत्र मैत्री पुस्तक के प्रथम से उनको उस युग को निर्देश
दिखाता है। यह युग का नामकरण शुरू का प्रथम उपवर्त के लिए स्वीकार किया है।

(२) रंगीनी पुल के प्रथम दुर्गा की:

आदर्शवाद : इस युग की कथा पर दिखाया कहते हैं वर्ष के प्रभाव दुर्गा की
हुआ है, यह है आदर्शवाद है म्यान्य-का दुर्गा की। आदर्शवाद की फिलाहारा
का दिन जिसके की विश्वासियों है। आदर्शवाद के अयोग्य जिन हैं दिखला
बारें में काफी विद्वान दुर्गाओं पर रचित है। इसका पुरा प्रश्न वह है कि इस
स्तर का आयुष्यकाल एक भेद से नहीं हुआ है। यह केन-को धार्मिकों के सम्बन्धी
में देहर ज्ञातत्वादित्यों की श्रमाधिकारी में देह तथा हत्या और अन्य राजा के
सब्बाधिकार में लल्लू है। लल्लू बहुत वर्जन है गैर जानक आदर्श केन का है।
स्तर का अवधार से जन्म हुआ है, उनकी शर्ताशर्त यह है कि वह ये
स्तर के अवधार के अनुसार पर्याधि शैवन
पुनर्जन्म कर जाने नहीं है। यह युग अवधारन के शैवन का विवेचन है, स्वाधिक
वहीं वास्तवीक बिन्द है। १२ आदर्शवाद में यह लल्लू है प्राप्त उर्दु आधन.

---------------------------------------------------------------------------------------------

१. डॉल कीनबाज़ गुप्त : महाद्वीर प्रभाव रंगीनी और उनका सुहा े, प्रस्तावना में
है, '२० वा.

२. डॉल कीनबाज़ गुप्त : वातावरण कीनबाज़ की मुल्य प्राप्त करते हैं, आधर्मक के प्रथम
२३१.
उदाहरण एवं कंप, और नकलनकारी मात्र वाले विचारों की अवधारणा शीर्ष है। बाश्वीवाद वाले वाले वाध्यवाद का महरसीका उपयोग लेता है, व्याख्याता का
उपयोग नहीं करता; व्याख्याता की साधन ही है जिनकी जो उपयोग लेता नहीं वहीं उनकी द्वारका है।

हस्तिवाद :

प्रारंभिक कार्यक दार्शनिक परिष्करित्वात् हैं प्रभाव यह नहीं है। अब उसे मनुष्य बन-नाश में हुए विविधता परिवर्तन की। रिक्रिया में प्रत्यावर्तन कर रहा था। विविधता का स्वीकार कर वहाँ वे रहा था। प्रत्येक वस्तु की एक स्तरीय व्याख्या करने का कारण आ गया था। यह प्रत्येक में प्रायः वचन एवं वार्ता प्रवाह की ओर और तेल ही केन उठाये गये, प्रारंभ रहे। रास्ते में उद्देश्य शस्त्रेवाद का नव-संकेत और व्याख्या के सबसे व्यवस्था की लोक रहा। राज्य राजा राजपूताना ने रहने लगे जिसे लोग रामकालारी का, करने जा लेने सार्वभौम सम्बन्ध न मानते पर मार्गी रवाणी किया। बिदिए के कहाँ वहाँ वहाँ पर यहीं पर नहीं वार्ता सुवर्ण किया। वार्ता प्रवाह के प्रतीत जो भी व्याख्या वर्तमान ने पुरातात्त्विक और वातावरणविज्ञान का द्रुत रहकर विवरण किया।

उदाहरणस्वदेशी शक्ति की प्रतिष्ठा करता है। उक्ता नामक वह फिर प्रत्येक वस्तु की शक्ति की स्ववक्तारी पर कहते हैं पश्चात्त्व की उसी धीमी-व्यवस्था के अंग में राजनीति बन जाता है। इस प्रशासन उच्च का अन्वेषण या उच्च की लोक प्रतीत खाता पर नागरिकों युद्ध का बन पड़ता है। यहाँ दो शुद्धित का उत्साहित का कार्यक्रम वाले शैक्षणिक नहीं रह तक़ी हैं। उन्हें प्राचीन, व्यवस्था में एवं की प्रीति के देवियों जैसे के अन्वेषण और विश्वास की व्यवस्था साधन हो जाती है, यद्यपि दुर्भिकादेवी कहीं जाती हैं। २। सनेहे दृष्टिकोण को अपना कर व्याख्या उच्च-दृष्टिकोण का निर्देश नाम सम्बन्ध नहीं और उदार पायथ जो लागत है। उसी दृष्टिकोण दृष्टिकोण के

1. दोहे शुद्धि का रक्षा में शुद्धि, पुस्तक ॥

2. दोहे शुद्धि का रक्षा में शुद्धि, पुस्तक ॥
परिणाम स्थान बैठायाँ तो स्थान पर कर्न की प्रविष्टा , तपस्या के स्थान पर
धारण कर् ने वह ना का सहाय स्थान हुआ। तेन्द्र वे अव्र ने फूलसूप
मत्स्य का कुंज बढ़ गया। स्वामी रबेकानाथ ने बैठायाँ दर्शन की गुमायार करा-
कर छोड़ने का कारणिकता का उस महत्वपूर्ण कार्य करार करन-वर्तन की प्रविष्टा
की। भानुमा गांव की राजनीतिक के धोंग में दर्शन-प्रौढ़ का आउद्रा रहा था वह
मानवीय उज्ज्वलता की वाँ मलाउ तत्त्व-बदलिस्त्रें उक्त सेव के करा अनुमा। इस तरह
उद्धो सुंदर दुर्लभस्तृति उपज्ण हुआ।

मानवस्वभाव : 
----------------------------------

मानवनेत्र दृष्टि के क्रममें वे आत्मसेवे की रिहाई-पैदा न लघु बसने को
रखे गहरावर्तिक अवधि बाराथिया है इति विक्रो छिदोक या मानवकालकाली। प्रथुत कहते है वे\nउनी मानव के बदले उस दृष्टि न मन जोरि है। इसी पलायन ग्रहण का है। फल अङ्ग
राजनीतिक दर्शन ने मानवनेत्र काल काल हल्का को अनुभाव। मद्यधर्म का है।
उस अति ये प्रवर्तक में स्पष्टता की गयी है। स्वातंत्र्य का आपट ये स्वातत्र्य को विधान
का स्वर जानते है स्तुति जानते है। क्या भाषा पर विषयक अध्यात्मवाद का
स्थान पर बनावत की प्रविष्टा लौटी है।\n
---

9. लाल इण्डिया : रजस्वी काव्यां में सुगृहार , मूल अंश।
राज्य, तथा, सर्वाधिक और पर-संघ काव्यात छैव सुगन्ध का विकास किया गया है। वे गुण ही पुस्तक की प्रतिस्पर्धा की भान्दणी हैं। १ यह है, रवि-श्रीनि। २ इस मानववाद या मानववादक श्रवण के कारण परम्परा की रचना के स्थान पर इतिहास में महत्त्व मुद्यह के प्रति प्रेम करने का एक प्रतिवर्त मानव वाचक है। मतुष्य का हर प्रश्न है बहाना आकर उसे रुली बनाना मानववाद का कार्य कर गया। इसके अभाव है हमारे कर्म-नाम-नीति द्वारा परिवर्तन आ गया। मनुष्य को रुप भी स्वतंत्र में बहाना करता कर्म-कर्मिया माना गया।

राज्यवादः

बाण्डबुक बलवत्त्य स्वरूप विकास राजनीतिक वैश्विक श्रेयन के कारण राज्यवादः

राज्य रुप हैं: भूमि, भूरि में हलने वाले धार्मिक और ऐतिहासिक का एक साथ होना। वही जुल्य शल्य और विकास के लिए उभरे वज्र में वाले धार्मिक कर्म राज्य के रूप में वस्त्रहृदं । वंद्योद्यों में वाँचन के वाश, राजस्थान और खिला व्यवस्था डावरा राज्य के रूप क्लास्त और मंडल के नामकरण और ज्ञान राज्यवादः हैं। राज्यवादः हैं: भूमि रूप हैं: एक शताब्दिः और हुबर ताललित। राज्य के बाण्डबुक में व्याख्या और उभय एवं विश्वास या कर्म राज्य के रूप बनता है। ३ राज्य के विकास को गार्ब गान, राज्य की विशेष विश्लेषक पुरुष प्रथा करना, राज्य की पारंपरिक प्रति में वापस प्रवेश करना राज्यवादः के वेषात्मक कार्य है। शासक राज्यवादः मुद्रण पुस्तक की उन्माता में लाल बायाधारक नहीं बनता। जनि उपभोक्ता शासक का शासक है भावना और विरोध का कारण कर जाता है।

<table>
<thead>
<tr>
<th>नं.</th>
<th>व्याख्या</th>
<th>भाषा</th>
<th>कमांड</th>
<th>पृष्ठ</th>
<th>संख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>१.</td>
<td>भाव हजारी राजस्थान रूप</td>
<td>हिंदी</td>
<td>वाणिज्य</td>
<td>४०</td>
<td>४३८</td>
</tr>
<tr>
<td>२.</td>
<td>भाव राजस्थान राज</td>
<td>हिंदी</td>
<td>इतिहास</td>
<td>४०</td>
<td>३२३</td>
</tr>
<tr>
<td>३.</td>
<td>भाव लुप्तमन्द</td>
<td>हिंदी</td>
<td>काव्य</td>
<td>४०</td>
<td>३०</td>
</tr>
</tbody>
</table>
(२२१)

पारे ही देश की प्रायश्चित में अन्य देशों, नागर-व्यवहारों को विरोधाभास बताना देश-प्रेम की संस्कृति का धारक है। राष्ट्रविधा का प्रभा उत्तराखण्ड घाट ६७७ के प्रचंड लोक-आन्दोलन में रहित है, यथार्थ वह आन्दोलन का फल रहा। पारासेन्दु-युग में उसका एक बार राजनैतिक से मिला-जुला होने पर तेजस्वी नहीं दीय पड़ा। नवरूजन के लूँ में उसका खक्क स्थापन तक उस्मान था। परंतु गरीबी के नीतिवेद्य में राष्ट्रविधा का संक्षेप खक्क प्रकट हुआ। वहाँ हिंदु सूत्र एवं बायं संस्कृति का ही बदलाव नहीं, नागर में रहने वाली समस्त देशी-विदेशी जातियों के राष्ट्र का उत्तराखण्ड से विकास बुद्धिशास्त्र था, वहाँ प्रारंभ-प्रारंभी की संस्कृतियों का एक विस्तार में विकास कराया था।

(६) सुधौ भीतिविवादः

रिश्वद्वंद्वी दूर के कर्मचार एवं तुलना वृद्धिचरण के परिष्करण के प्रारंभ के पहले संस्कृत में विकास की प्रवाह प्रवृत्तियों को परिचय में देखें। यह सुधौ की प्रवाह प्रवृत्तियों का यथार्थ भाव पड़ता है: (१) राष्ट्रविधा या देशसेवक का हक्की-व्यव है (२) वात-मान्य पानका या नागरकालिक विचार वारा का स्तर (३) सीता एवं बादश के परिवार का गान (४) विद्वान का बापह (५) वर्ष विषय का वैदिक एवं विज्ञान (६) साहित्य का तुलना वृद्धिका। जावों के बाहर यह क्रांति में सहाय हो उसको तो विमोचित नहीं होते हैं।

१. कृत्ती बाली की प्रवृत्ति प्रलोभों का अवस्थित होना
२. कायन वप का चम्पी प्रकारों का प्रयोग
३. आदि में वैदिक एवं अकालन्त विन्दु

इन प्रवृत्तियों से विश्वसंग्रह से हृ यह ये देख सकते हैं कि पारासेन्दु-काल की कानूनों ने राजनैतिक एवं देशसेवक का निर्धारण हुआ च्वर प्राप्त होता है, वहाँ विश्वदृष्टि दूर के तत्काल के कानून में सुधे देशप्रेम की व्यवहार प्रमुख होती है। देश प्रेम की कई मुद्र दर्शाते हैं इस दूर में कजी गयी है। पारासेन्दु दूर में नागरकालिक विचारवाद का विकास
उस नाता में नहीं हुआ रंजन नाता में दिल्ली युगः के काव्य में हुआ है। स्त्री
पुरुष के संपर्क, पीड़ा एवं दुःखी। उन्होंने प्राव वहाँ स्थित एवं नानकेश्वर
गुणाँ के प्रवास एवं उनका त्वरीतर आर्द्र पानकतावादी प्रवृत्ति के
त्वरित यह कहीं तथा रुप में हुआ। नीति एवं बाहर की महत्ता का
गान एवं युग की कर्मवाला में खोदें न्यायों से गाया गया है। यह दिल्लीकी युग के नेता एवं काव्य के नीति, उपदेश के अंग्रेज़ी यूनिवर्सिटी में
एं न-युग के जन्म होने दी थी आंतरिक की पाबंदी के प्रवास आंतरिक होने के कारण
सम्पन्न युग के काव्य में उपेक्षातस्तक और नैसकता का न्याय हुआ।
इसका यह बारे में यह शासित अनुक्रम के प्रवास को हर्षनी राष्ट्रीय एवं निदान के प्रवास
में आते हैं जब युग की कार्यवाला ने भारदेशतवाद का प्रयास लेना रखा।
पुरानी मंडिय एवं पारंपरिक की युग में निरस्त मिलता है। काव्या
में विशिष्टता का आर्द्र बिशेषताओं स्वीकृत होता गया है। इसका एवं यह किंग
पुरानी पारंपरिक की नहीं। विष्णु वास्तवार्द्ध के प्राचीन में युगकी का प्रवास युग
हो गया है। विष्णुका संविदार युग युग की विशेषता है। यह युग में किंगे
विश्वास देखा नहीं मिला बिल के द्रुष्ट गयी हो। कई ज्ञान के युग के
उपरिवार प्रवृत्ति काव्य का एक अल्पसमय स्वतंत्र अविष्कार कि गये। राजीवाली
काव्य के निश्चित के बानी के प्रवास को विशिष्ट आदर्श स्वभाव में विशिष्ट नहीं।
प्रवृत्ति के गुणों की कार्य की विशेषता कि गया उस युग में निकेत जाता है।
युग के प्रवास काव्या
शीर्ष पाठक, वाराणसी, विश्वासवाद रूप और पत्ता रामनाथ विश्वास की
काव्या में प्रवृत्ति विश्वास अल्पसमय वर्णन का है। उस युग में विशेषताओं वाला
और काहेदी काव्या के अनुसार की प्रवृत्ति विश्वास हुई है। शीर्ष पाठक एवं
विश्वासवाद रूप ने कुवाड़ की प्रवृत्ति में वर्णन विश्वास है। उसी युग में ब्यूनी दी
काव्या ने प्रबंधन का आदर्श किंग लड़ डिली को स्वशक्त कर एक नयी क्रान्ति
कर है। उसी विश्वास की भाषा के नहीं यह स्वतः, उस रंगकरे में निर्वृत्त
करने का कार्य कह युग हुए दिल्लीकी के सत्काराओं के सम्पन्न हो सकता। उस युग में
प्रवृत्ति एवं दुर्लक उपयोग काव्य लोगों की रक्षा हुई है। कथाफल काव्य-काव्य लोगों

(२४)

के तर विषय सार अर्पित हुए। मुख्य रचनाएँ ने हुई। प्रत्येक प्रस्तुत के विषय आधारों की रचनाएँ ने पाठक को वास्तव आकृति दिया। प्रस्तुत के कई रूप- पहला-कायदा, दक्षिण-कायदा एवं साक्षरता की प्रमुख वातावरण में रचनाएँ हुई। इन्हें के विवाह में कैवळ विषय, कायदा तक ही कायदा-पुस्तक सीमित नहीं रही, परन्तु, राजा, भूमि, कृषि, वार निविदा, हरितीश्वर एवं जानवर बनाएं का कायदामूर्त बना। उद्योगों-पर संबंध भी विशेष व्यवहार हुआ। उसौंसू-एक संस्कृत वेतन उपजन का "प्रस्तुत" में "कायदा प्रयोग" गतित हुआ। हरितीश्वर एवं जानवर इन्हें गुप्तक्री हेतु ध्वस्त प्रयोग गिता।

(२) राष्ट्रीय कार्य कार्यरताएँ में निरूपित मानव-पुलिका:

राष्ट्रीय या देशमें:

राष्ट्र या देश के प्रति लागू एवं आवश्यक की पावना ने मुक्त प्रेम या प्रवृति है। मुल्य के बनाते आदीय। उसे मुल्य-प्रत्यय से बताया गया है जब मुल्य-प्रत्यय का लगता है नक्शा मुल्य से विश्वसनीय व्यक्ति है का: हरितीश्वर मानव-पुलिका है है। का: देश प्रेम का मुल्य के मानव-पुलिका के मूलतः जानयो। जातिक राष्ट्रीय सार्थकों के प्रति दोऽ कार्यावरोधों - पारंपरिक उप से संबंधवं युग एवं दशकियों युग में उनकी मामलक अवस्था है। मार्ग के सौंदर्य की प्रवृत्ति, गौरव, जानवर, देशवासियों की विशेषता पर प्रकृत सहायता देश-प्रेम के बनाते आदीय।

मार्ग की श्रेष्ठता का यह प्रति तैयार मंथली है: नया, गौरव, प्रकृति का पृथ्वी ढीला-स्थान का। कैदा फाँसी निर्देश विविध अवृत्त और गोष्ट बना।

उपरोक्त तथा उन्हें वास्तव चित्र देश का उल्लेख नहीं है?

उसका कौन कायदा गुप्त है, वह कैसा? नातीसूत्र है।

१२. मैथसिरण गुप्त: मार्ग पार्श्व, जून ६०.
अपने पुर्ववर्ती की प्रशंसा में कांच रखना ही जाता है:

वे आश्चर्य ही थे जो कहीं अपने कंठ की जीवन न थे,
वे स्वार्थ-रत ही चाँद की निदर्शन करने पीने न थे।
छोटे के उपरांत-विवेक का आन्य क्षेत्र थे वहीं
विश्वास-लेखन किया तरह वे बेड़ा लगते थे कहीं।

ठाडुर गौपालक ईश्वर विश्व कृत्य भव्य मार्ग की कल्पना के पक्ष-नाम से कहते हैं:

हे कंठ-विविध के रंग-रमण भाषा।
हुमाना के ठीक स्थान ठीक भाषा।
हे जन्म-विविध शाक काम।
हे दिव्य काम, हे दिव्य-नाम।
हे ज्योति के उपर गाया गाया,
हे विश्व-निर्माण मार्ग तिलाइ।

मार्ग की कवय-दृष्टि के गर्वत का गान उसी पुष्प पुष्प कहते हैं:

पुष्प दृष्टि यह हमें चिन्ह दे सुलाकारी,
भाषा के लिए मातृ दृष्टि है यहीं स्पर्शी।
कहाँ की क्या, कहीं का तृण का है यह न्यायी।
स्वतन्त्र गुरूज्या और कहीं क्या गई निदारी।

उपयुक्त प्रवक्ता में वेश-गौरस के ध्वनि वेश स्पर्श आरंभ होता है।

-------------------------------
1. वैभवविकरण पुस्तक : मार्ग-नामक, पृ. २३।
2. ठाडुर गौपालक शरण विंड़ : आदर्णक काव्य, पृ. २३।
3. विवाराम शरण पुस्तक : पाँचवी विख्यात, पृ. २६।
(२२४)

दुर्योगी और देश की दुर्लभता से कारण कांवा दूध का व्यक्ति ही न होना स्वाभाविक है। पालन-नारायण का युगल की दुनिया से अलग व्यक्ति बन आते हैं:

उन्हें प्राप्त है यमकाप मथि लुगे पत्ते है,
गर्भों वहाँ पुले पूले फंसे है।
है लक खिलका ही क्षमा में और उपयोग हार में
की तथा राती हज़ार वाला निवास है साथ में।

इन परिवारों को पढ़ने के बाद पत्थरा निराशाजन की याद जा जाती है -

वह गेट उनका गेट वह धमका दुका क्या एक है।
पानी धलाने को पर्याप्त हार्दिकों में ठेक है? ६

देश में तुलन के अस्तित्व को निभाये विना पढ़ पर की शास्त्री देशलोगी दुकान को कैसे संपत्ति है? देश की जीवन के लिए शारीर जीवन न्यायवादक करना पड़े वह त्याग की जीवन का एकांत ज्योध है, वानन्द है:

प्रभा दुस्त है वह कुण्डला है
मिलश्वर होगी शारणि
कल्याणकर हर्षकर कब में
श्रेण नेमा शारणि। २

ताँ करी निराशा के नेम-उंडों से जला होने के लिए देशवासियों को वागन करना का सम्मेल देना थी। देशलोग का एक कार्य है:

होकर निराशा करी नै नैठो, नित्य उपडानि रखो;
जल देश हितकर कार्य में अवश्य वक्याविनि रखो।

-------------------------------------

१. नैपारी शारण सुन्द : पालन-नारायण, पृ० ६४।
२. रामचरित मनाहारि : निजन, पृ० ५३-५४।
नीति विभाग गुल्म: या नीति गुल्मः

नव वर्ष का पापन करने, वाराणसी कहाँ की प्राप्ति हो।
हुसू दाह, बाराब स्वामी वर्षक सिद्ध हो। ¹

नीति विभाग गुल्म: या नीति गुल्मः

नवीन गुल्म ने बीड़न के प्रसाददार के विचार नीति गुल्म की जननार्यता पर भाष्क आरंभ करता है। जिस नीतिमाला बीड़न काश करती है वह भी तकनी है। नीति और नीति के तामार नहीं है।

बीड़न कहे उन्मल बनाम ने जिस गुल्म की कल्यंत्र तकनी है। दारियार कर्म-फल है विवेकन की कल्पना में विवेकतेत्र करता आया है। नैसर्गिक बस्ती की पालती का गुल्म नारायण बनाम के मानन पर रंग कर है उस में स्थान है। इस कल्पना की एकूण वफाद रामनी की जीवन है। जीवन में पुल्लुं वह वह, पुल्लुं का साध करते वर्षे,उसके कहने या हुए कहने। पुल्लुं की इस बात की पल्लया बाद करते हुए रहते हैं।

कथा हुरा का नाम ही। रहता वह इतनें में
वह पन्थ है जिसमें कर्म हो ठीक समय शोक में। ²

और उसी बात की कार्य पुल्लुं विवेकतेत्र के साथ परिवर्तन करते हैं:

विवेक बीड़न बनाम भी कही बनाम में पुकार फलदार नहीं,
विवेक की विवेक पर भिक्षी का वह कर्म बाद नहीं। ³

नीति विभाग गुल्म के प्रारंभ में कहीं कार्यकल्प को लाने की गाय ऐसा दीपा प्रारंभ की बुद्धिकाल होता है।

उपरोक्त विधि के प्रारंभ में कहीं कार्यकल्प को लाने की गाय ऐसा दीपा प्रारंभ की बुद्धिकाल होता है।

¹ माहा पार्वती, पु १६५-१६६।
² जवाक्र वेन, पु ५७।
³ वहीं पु ६५।
सबसे नीतिशास्त्र कहता है, दुष्ट-वंश हुआ का दायता है
रिख्य पत्र में पायी रखता है, वहीं कुछ बोझा जाता है॥

लोचन प्रसाद पाण्डेय ने नैतिक गुरुओं के लिए नीति की महत्ता का प्रतिपादन
किया है:

बन्धु कर्ता को प्यार न करना निस्कर्ते ही करता,
विस्मयुक्त व्यक्तित्व न करना निस्कर्ते ही करता।
जाति-देश उपकार न करना निस्कर्ते ही करता,
जन्म हुआ निस्कर्ते न परना उपनीय ही करता।

कल्याण निहर्ष्या या कल्याण:

अपने कार्य में पूर्ण आस्था रखते हुए निहर्ष्या के धार उज्ज ग्रामाण्य से
पूर्ण करना मुख्य बीतन की उन्नति के लिए निविष्ट बीतनायाम वें है एक है।

वीमद भागवानीता में थी कहीं गुरु की महिमा मंडली है।

स्वी के कृष्णीपिठाय; लंचवार्ड हृदज नर ||

लोचन उन्ने उपनीय ब्यापारक कर्म व एक निहर्ष्या से रत रहता हुआ
पुरुष उपनीय बिंदु ( मौन ) ग्रामाण्य करता है।

किसी कल्याण के पूर्ण उच्च दारिचल से पूरा करने में वह सुल-अनन्त बिंदु है वही
बीतन का भवनांकुण्ड उपयोग है। कल्याण है। कोई ने मुहत-है गुरु है,
जिसी अनन्त की
प्राप्ति हो सकती है। पारि-रामायण तिबो में छिंटे 2072 हुरी होते हैं।

-------------------------

टिप्पणी
1. रामचरित उपाध्याय के पाँच से जुलूस का ( मौन ) दिवसाश्व बारो नैन (प) 40544
2. लोचन प्रसाद पाण्डेय : नर जन्म की शाक्तिता कस्ता, वर्तवन बारुवर 6900
3. वीमद भागवानीता व १५ १४५
वह बीमन का जवाबचं न्यूल है। वह ना पारतिय संकृति में बीमन-पन्ने या बीमन- 
कार्य के नाम ही बिभिन्न हुआ है। कवि पुष्पक कविता का उपमान के संगीत 
क्षण में ही क्षण की प्रशंसा बताते हैं:

हुँ शोक जब जो जा पड़े, तो कैने फुलक सब हटाए, 
हौंगी सफ़लता तबाहे नहीं क्षण पढ़ पर हुए रहें।

वार क्षण पर है रहस्य प्राण का बाउंस देना पड़े तांता वह पुस्तकान उत्तर 
होगा। ऐसे बीर के रूप क्षण पूर्णी, या धर्म तब कुद्रा प्राप्त है। कविता की 
निक्खर में गुप्तवाच कहते हैं:

है सुनह की इनक्षण कविता के रूप है।

बीमन का उदय क्षण उपमा से बदल ही है। यदि क्षण की बीमन का उदय 
है तो उपमा के विषय में कौन लोगेंगा? यही बादशु गुस्ताक ने उपमा रूप से 
बताया है:

उपमा से पीछे के किसी तितलितन न क्षण-उदय हो, 
कब तक रहें तो प्राण तन में दुःख का हो पढ़ा लो।
क्षण तब न एक पावन मित्यां नींत चंदन घो,
श्रन्माचिर वायु वित्तियि में विविधता करारण न रचा लो।

न्याय:

न्याय का बार्षर निर्मित सृजनात्मक पर कार्यक्रम है। न्याय की 
बार्षरिता न्याय के सृजनात्मक का उभरे पाकर दुःख बनती है। रघुप्रसाद कविता के

9. क्रुद्धकर, पृ 45
2. बहर, पृ 46
3. मारवा-मारवा, पृ 186.
अवार पर वो कुछ जिन्हें प्राप्त है, उसे न फिराने पर मषात में विचारण उत्पन्न होती है। और विचारण है दुरद, विषय क्षान्ति और विकृत वाद्य उत्पन्न होते हैं। अतः न्याय के लिए जुड़ना उसके जिस देखनर्स की कारण पुष्प कार्य है।

महामार के एक तौर भागान्तु की विश्लेषता के समय भर पर कहा गया आकर्षण नीति है विधानों के विषय था। कवि गुडवली का यह बता है। उनकी कारणी न्याय का सम्बंध करती हुई कविता का प्रतिकार कर उठती हैः

प्रतिकार पर आयात करना सर्वप्रथम कविता है
सम्भाल करता वात यह सदा श्यूर-भन सुदाय है।

वननें अधिकारों ने बोलना रहना करते हैं पत्र है दुःखम्य है। न्याय के लिए वि-कविता के साथ संबंध करता पत्र। पत्र नहीं है।

वननें लोकर बोलें रहना, वह नहीं दुःखम्य है
न्यायाथी कपने बन्धु को पत्र। दुनिया बनी है।

पंजाबी नम्नमें ग्रंथार्थी के पारंपर्य संहिताया में एकतम आभास के आयात कर न्याय के प्रति विनिर्द्ध माताया गया है। और पारंपर्य का नामक एक एक विचारकी के

न्याय के प्रति विनिर्द्ध कहता है। और नामक का नामक एक विचारकी के

वननें उसे लेगियर धीर धीर के वनन में।

करता निवारण भारती के तु वनन में है।

न्याय वनन में, धीर वनन के वनन में।

-----------------------------------------------
1. पवित्र, 6. 65.
2. उकी, 50 5.
3. अधुर नायाकायाना ग्रंथिः भारतीय काव्य, 4, 50 25.

-----------------------------------------------
(२३६)

हाँ, कपलाकान्त पाटल ने पान्तवी-हुल्लों के विषय में कहा है कि कीठ शाखा, स्वल्प-निष्ठा एवं बलिंदर वांगर द्विवेदी ने कहींति विवेकानन्द: पान्तवी मुख्य है। इसमें कीठ शाखा वहाँ जिन हों से कारण न्याय का पथ अग्नि है और अन्याय का निरोध करता है।

ल्यागः

पान्तवी मार्गुर्य है क्या मुख्य पान्तवी से ल्यागः का महत्त्व विकसित है?

संघर्ष उर उअर बोलों के अरुंद उठते करना अथवा बोलों के अरुंद बनते करना ल्यागः है। ल्यागः में उठाया का आयोजन है। ल्यागः की परिसंह को गान पान्तवी में सुना ते प्रभाव है। ऐश्वर्य उपाध्यय में ल्यागः की अखिल परिसंह कान्तिगत्वी गवती है। वह नाम तुलका से आयोजन है। वो अलान नाम तृस्तान है वहाँ तुलका का निर्माण है और उसका नाम पर शायगा कर। और ल्यागः करने से ते ते शेष रहता है उसका तु उपन्यास कर। पहले बदलबंब का ल्यागः इस प्रभाव है। एक नहर ल्यागः के जरा बहीर और संस्थ बैश्य की तुण-ता धारकर ल्यागः करना हारंह वृहतों की महत्त्व परिसंह का परिवर्तन है। अपने केंद्र ते बीमा जगहों-ता बीमा है, स्वाधीन हाँ वाइ की परिषद ने मह वतन मुद्दता के जरा स्वाधीनता नहीं है, स्वास्थ्य के दुकान इतरे ल्यागः का पुरा बनाना है। पुराण को पुरा बनाने में ल्यागः का पुरा अध्याय सिद्ध हो जाना है।

'साकेजे' के राम कर्न बेकर वन बोड़ना नहीं बाल्वे। उन्हें लिए राज्य तृण-ता है, जात: ल्यागः है। गुप्तके के सब्जे ने देखे ते बीराम का कथन दृष्ट्य है:

'और किस्सि? राज्य तैहे?

-----------------------------
1. हाँ, कपलाकान्त पाटल: मेरीशहरण गुल्म, पृ. ६३०।
2. ऐश्वर्य उपाध्यय, . . . . गुल्म पत्र।
४८० है जै तुषा ल्याये, फिरे,
प्राण परम गारिन बौद्ध
करे बेकार वन गाई१।
तुमके मुख महल्ल भिजा
सब प्रेम का तब रिज़ा।

बाल सबह ग्रेम की ल्यान के विना निश्चायण है। ल्यान की पारहन पर की मुिध पीठन की बजता बायहित किह की जाती है। कवि बी रामनरेख मिशाठी ने तबु ग्रेम को ल्यान पर विनेहत कराते हुए कहा:

सबहा ग्रेम बही है फैलाक़ी,
उसी आल्यात्मा पर ही निरहूर
ल्यान विना निश्चायण ग्रेम है
करूऱ्याम पर ग्राण निश्चायर।

सौकर्ष - परिहास - विश्वासः

पारसवाल्य हसर्य है मानका की रहत-विना वल्लुः, वर्ण-तत्व नहीं है,
वनस्क पुरुष है। यह परिहास शायन है विविधताओं का वरिष्ठ तथा परिष्ठाकली
कुषीक्ष, जै यह लघुत्तम है कि भारता में नैस्कल्य का अर्थक्षात न पिठी
है, पर यह उसका क्लर्तित तत्व अस्वाभाव है। ३ हौफल्कहे दे गुलक की अपनी मारना
का ऊपर अनन्त पुष्पाक्वाथालितिक रीति से समृद्ध बनता है। उसके अनन्तपुष्प मनकी शहीदिवं शिनाज़ा को जाकर एक सिहाल परिमुख ने फसने का रखता है।
वारा पर की यह वर्षा रथाति पुष्प है उसबे वार्तिक होने की रथाति का रथी-
वायक है। सबहा वर्ण पुष्प को सबा विवाहका की जरूर है जाता है।

का: ४८० ६६।
२. उदाहरण: हसर्या कारिक्य का उदाहरण, पू६ ५०७ एं । जोश (बिशाठी की का
३. एन्डोलादा के रोली ऑफ ऑडिटिविटी वु.६. पृ५३६

हेतु त्रिमी)
(२३०)

हिंदी के काव्यों में लोकगीत का पावन ओरक भ्रमण किया है।
इसी पावन से प्रकाशित हो लोकगीत, परिवार और विशेषगत मुख्य का भ्रमण उन काव्यों की रचनाओं में प्राप्त होता है। लोकगीत-परिवार और विशेषगत एक सरसों जागरूकता का मुख्य है। कवि ठाकुर गोपालशरण निंदन ठाकुर-मित्र के रूप अपने को विशेष ज्ञान-विद्वान में भ्रम करने की हृदय रखते हैं:

अ तो मेरा जयु दीवान
अ के विशेष दीवान में
उर का रंगाबाह हो मेरे
वन के जानन्द रमण में।

रूप के रंग लोक प्रकार का उत्सर्ग स्वभीत वार्तकता की ती कथा है। कवि की कामना है:

लब्ध शेषेक वन जाओँ
में वन का तन-मन-वन है
बन्धु वन जाओ वंदनकर
में विकास ग्रीक विनक में।

इस गुन के महाकाव्य 'ग्रीकवास' में दी कृत्वर का वस्तु अर्थिक एवं वक्तव्यी न होकर, अर्थिक, सूचना सज्जन एवं मानवीय है। वै कुछ वेदना का परामर्श है।

कृत्वर का प्रभा से नैति के रूप में भर रात्रा का ठोक संगीता के रूप में धिनरण वस्तु ठोक संग्रह। पावन का पावन है। कृत्वर का परामर्श स्वस्थ जो ठोक रंगक का रहता है, वहां वा वाक्य में ठोक राजा का वण गया है। दिन के दीवान का धमाव है। कृत्वर के महारा गवम के भाद राखा, दिन के दीवान परम
परम दीवान उल्लास राखकर की।

1. ठाकुर गोपाल शरण निंदन विनिमान कवि, (४) पृ ४५५-३७
2. वही
3. अतिरिक्त रामदास फुड़क: हिन्दी पारंपरिक हस्तिताह, पृ ५५५
4. यही विक्ष्पन्न उपाध्याय : ग्रीकवास, पृ ५५।
उसके व्यक्ति-विविधता तक पौष्पक बटे। कन्व ने कथा रचना नक परम के कारण रेखा वैज्ञानिक रचना है। परन्तु प्रेम पाह से प्रथम है रेखा प्रकाश विशेष इले प्राण्यां हैं ते राजा की उपक्रम अं योगन राजा है तुष्टि की स्थिति का वर्णन करती है।

पीरूष्ण पुषुरा रहें, जय-विन्दु यें प्रत्यय रहें; सोहृद न की बाबू का राजा का दुरा नहीं जोना। राजा अह उठती हैः

"प्यारे कीमें गान-गीत तरूँ गीत बाहे न बाहे।"

बारे राजा कन्व प्रेम की विस्मयित में पार्श्वकृति कर लेती हैः

"प्यारे नामी गंधारव किंनी किसी रसायन हैं गधे में? जो प्यारे की बलि रथ बारे नि नि में देखती है।

तैं में कहीं न उन उच्चा प्यारे की है कहती।

तैं है नैनहृदय तल में विवाह का प्रेम बागा।"

राजा अह प्राण प्यारे की आत्मतत्त् हैं सन्धी में खिहारार है।

"तैं ही की आत्मतत्त् को श्याम में है बिदािक।"

बारे दह नहीं दुरा रहा एक देश देखकर केवल अन्ये में अन्ये को आज्ञा करती है।

राजा उद्योग के दृष्टा विवाहन्ता की मनाति में अन्ये को अनुसत्त कर लेती हैः

"जैं वारा है पव-हितकारी सब-प्रत्युत्पातकारी

जे प्रेमार सत्य भरती बार्तिया है उठाती।

हो सेवा में नन्तर उसके अर्थ दस्तान होना।

विवाहन्ता-निविद वह गुड़ा दातता-यंका है।"

---------------------------------------------------------------------------------------------------------

1. प्रविष्कास, पृष्ठ २५३।
2. यही पृष्ठ २५४।
3. यही पृष्ठ २५४।
4. यही पृष्ठ २५५।
और राजा का सर्वाधिक बड़ा उप ओँक-फूंक के या विश्व-प्रेम का प्रवेश प्रश्नात्त्व कन पड़ा। राजा का यह उप नकी न हैः

भङ्गङ्ग की पलर निदान ये विश्वास की भिन्नताओं की।
दानावङ्ग की ये वारत, जनती ये करायी भिन्नताओं की
आराघ्या की विश्व-तनां की प्रेयल-गवन की क्रिया।

प्रेम:
-----

मिलकर लोग में वास्तविक पुल के उप में प्रेम का बसन कहे रक्माओं में हुआ है। स्वतंत्र राजा के रंग सहारार्का, चक्षुरोग, जैसी और प्रेम जालद पुलियों की अवक्ष्यकता रहती है। यहां वां कैसे की रीढ़ है तो परिवार व्यापक की रीढ़ है। परंतु उच्चरण, प्रेमित के द्वारा ही परिवार का संबंध यह पाता होता है। जब प्रेम की स्वस्थता के रंग उच्चरण होता है, वही प्रेम के विकसित ज्ञान में वास्तविक वस्तुति को बन जाता है। साधारण पुल के उप में वह एक लघुको पुल है, परंतु मानन प्रेम, विश्व प्रेम के विचार के रंग में वह एक विशेषक पुल के उप में वर्तमान होता है।

प्रेम का प्रमाण का धार हैः कर्म के शब्दों में---

है जन-वीरीय धारः
नाचो प्रेमः बनो तुम मेरे
ह्वार-बार गुजारः
गाजरागः में कदा जल्लहारः
स्वरः मे बीच मे भीता

---------------------------------------

8. प्रेम प्रवास, पृ० २६०।
होगा ठीक हुईं में गरी
जब हुए गय लंगर।

कथा की रामरैव त्रिपाठीजी ने प्रेम की उद्देश्यका पाँच व्यंग्य अपनी रचना में
गौरी है

प्रेम गिराख वस्तु है जा मे
अदुल शक्ति निवाचन
निःसर में ज्यागु, ज्यागु में
है वह नंदे समान।

कथा उस अदुल प्रेम के अवार में का जीवन की परिकथा करती है। वह प्रेम को स्वयं
लक्षक का रूप एवं ईश्वर का प्रतिच्छेद मानते हैं।

गन्धवाही मुदत है जैसे कन्हे-वांतका द्वार
वह की परिकथा है मुदता का जीवन प्रेम-विविषा।
प्रेम स्वयं है, स्वयं प्रेम है प्रेम हरे क्लाफ़।
ईश्वर का प्रतिच्छेद प्रेम है प्रेम दृष्ट-बालौफ़।

रीतिसादृश काव्य की प्रसंगिका में प्रेम का वास्तवस्मृत रूप इस काव्य की कथा
में परिवर्तित हो गया है। प्रेम की परिकथा है: मातु-मुदत प्रेम या देश प्रेम,
पाणि-प्रेम, विष्णु-प्रेम यह युग की रचनाओं में निहित हुए हैं।

नामकार - मुदता की परिकथा:

-------------------------------------

नामकारावाश के प्रभाव में बाकी इस युग के कवियों ने प्रेम का एवं दृष्टि की

-------------------------------------

६. रामरैव त्रिपाठी: पिताम, पृ. ३२.
२. वही 

३. वही 

जनाएं के प्रति वहाँस्वरूप यज्ञ की है। हुआ दे यज्ञस्थान और यज्ञस्थान में काँची हुई प्राणियों की लेखा में ही लघु हुआ है कृषि ने ईश्वर-देवता का पत्र हुआ है। स्वामी रवीन्द्रनाथ द्वारा पहुँचित मुद्रण देवता ही ईश्वर-देवता हैं का फल लघु हुआ है। रामायण प्रायोगिक जन है। नहीं। अन्दर श्रद्धा एवं तुक्ता से पीठुंड एवं व्याहिता की कायम का विषय बना यह एस झूठ की विशेषता है। द्वार यह कात्यायी का एक वक्ता विषय यह फि पद्ध यह ईश्वर-प्रारुप ध्वनियाँ हैं तो वह दीन-दुःखियाँ की लेखा मैं न हो। यात्रिक का रविगुड़ ज्यु मिरठ की व्याख्या है। मुद्रण के द्वार रविगुड़ की पतल मात्र का वर्णन है। वह वर्ण मुद्रण देवते के वर्तमान ईश्वर-प्रारुप हो चूकी है। बन्धु नहीं। जागर की लेखा में ही मुद्रण का बार कवि की दृष्टि पुकार है। पुकार के गिंग व्यंग यात्रियाँ की व्यक्तिक्यता नहीं। का की लेखा करना ही कवि है उस धारा का धार।

विश्व-देव के बन्धु में ही कुल फांटा मिठा मुद्रण का धार।

मुद्रण में ही ईश्वर-प्रारूप-हरि-नामक व्यंग लेखा काय कवि ने मुद्रण का नृत्य अर्थ उद्भोगिता किया है:

ईश्वर-नामक औक-देवता है एक अर्थ चैं नाम।
वन में लघु की ही हो अत्याचार यह मुद्रण का नाम।
पृष्ठी पर द्वितीय ग्रहण वह नव अन श्रवण,
मुद्रण का अर्थ यही है और यही हरि प्रारूप।

यहाँ पर हनुमा जानम यज्ञस्थान है पुराने तत्त्व है स्थान परिवर्तन की कारस्य अभियंता की गवी है।
गुड़ावालह यह देश है बहुतवां बन में सारी ईश्वर की उवाचन करने की क्रियात्मा का में रहस्य मुद्रा-देवता करना नकार है। मुद्रण की नकारा लघु यह उस में ही समग्र।

-----------
2. बादलानि कवि , पृ ६०
2. रूठन , पृ २२.
है। मुनुष्य-विवेकन निवेदन स्थापनों में रहकर मुनुष्य-वेदों का भाव नहीं जाना जाता।

काव्य के ही शब्दों में - 'मन में ही जानना जाता है मुनुष्यवा का मार्ग।'

इत्यादि का बाद वांछन नहीं करते हैं तो काव्य पार्श्व दर्शन के को लेखन है। काव्य
कला है।

लीला में हुआ गृह्या हैरान, यहाँ ही या तु है प्रवेश
दीन हीन के अकूर्त में, परिसतों की परस्परता पीर में
गदर लक्ष्मण के कृष्णक से हड़ में, भगवान ब्रह्म देवताओं
लेरा भिन्न माध्यम।

प्रमाण की रााथा पानव-श्रवण के नये मुख की उदसर्पण करती है, तथा गावों
दे तिनवा द्वारपाल जन-पानौ में ला जाने को कहती है।

उपायों के परम सार से कीर्तिक्य कार्य तैयार।

जो प्रार्थना है परशु ित्रव के विश्व के प्रीतिव ले।

हस तरह रााथा बनी पार प्रश्न की जो ग्रंथ है, त्यही मुनुष्य की शेषा में प्राप्त न
दे जा जाने को गावों से कहती है। निजतम है यह तीक्ष्णता की कर्किता
में पानव-सुन्दर सहायता एक न्यू आक व मृत्यु में रही है।

नारी पाना या नारी विश्ववृक्ष कृष्णकला:

---------------------------------------------------------------------------------

नारायण या नारी विश्ववृक्ष कृष्णकला:

---------------------------------------------------------------------------------

6. भगवान, पृष्ठ ७०।
7. भगवान श्रीराम की कर्किता तै उदात्त भ्राता (अध्यात्मिकारिता श्रीराम कर्किता
0. प्रमाण कार्य, पृष्ठ २६७।
कवियों की फुलाम में नारी के प्रति विषम वहाँबुध्वति प्रकाश है। द्वितीय वृक्ष की कल्याणाम में नवोत्सव आन्न्धन का प्रभाव विषम आग हुआ है, फलस्वरूप नारी के प्रति वृक्ष वहाँबुध्वति ही नहीं रही, का नारी कौन की वशु न वनकर पुजा की वातिलारुणिनी बनी है। यहां प्रेनित होता है कि रीतिकारन नारी विषयक ह्रद्यावधारणा की प्रतिका आय वृक्ष में हुई है। द्वितीय वृक्ष की मारिः के विद्यु दुरुपाओं से विषमित का परमाशार्किनी बनी है। इस वृक्ष के एक अत्यंत सविद्य भीति किवत ठहर गरीबावलकृति गिहे में विघे की परारितता से कोर्त (रामनामलकर) नामक पुलक पदकर उसकी तमन्ना रंगन सत्कम काव्यतिरंग काश्यामों का बिभिन्न किया है। नारी के वृक्ष में एक स्त्रियवति पावत एवं प्रमाण्य के हरिन की कौन प्राप्त हैं परन्तु उनके वनकर पीड़ा का संघर्ष बढ़ा है उसकी कौन आजाता है। कवि वहाँ व्यः तथा वो देख उठे हैं:

गंगा अवशेष की खारा बहकी इने खनों में,
परदे के मितार लागर जलावता है नयानों में।

यही रीतिकला नारी का किवत की ढूँढ़ में विघे मारिहिनी है -

कल्याणा का-नन्दन का की
विषम व्यरुति तुषार की।
विद्य वारिहिनी है सुधारित-वी
हरों दुर्य -परिष्ठ की।

परन्तु उसकी अवशेष किवत का मुख काल्प है -

अवकट विवेक-अनन्द-दायिणी
है अनन्द-दिविनी

---------------------------------
1. अवरोगक किवत ॥ पुर ६।
2. यही ॥ पुर ७।
गुप्तकालीन कविता की किताब में रही न हुई स्वाक्षरता।

इस खुल के अपने कविता के पृथक्क्रमण हुआ नेत्र ने तो द्विविधिता नारी की उदार का प्रण सिखा। लाके प्रत्येक कविता का वचन हटीका परिपाण था। लाके में छैता के स्थान पर उरमिता की प्रणाम नारिका की रूप में विनियम हुई। प्रिमप्राप्त की रापा ने छैठन कमांडाह लोहा है रत्नु वह गुलाबकंपनी और गाजुर की पुष्करी। २ वह एक बापी नारी है और अनुसंधार ने छू लकी वस्मानिता वनव हुई है। धीर्षा के तो जाने पर यह वेश्या पाटा देकर ये खुश नहीं करता परन्तु धीर्षा के लिए उन नामान्त्रे प्रेम में जानन्द मानती है। अयारेक बीजों मुक्तक रहे यो नये मे उनकी हैं। ३ कहत दिलनी विकार पापना प्रकट करती है। को रामराक नाओविन कैथिन के अयारेक के प्रति प्रिमाप्राप्त की नारिका का इशारा करने प्रिमप्राप्त बान्दुर एवं पाण्ड की सभूरुम उत्तर्य की सहयोग क्षेत्र हैं। तीर्था पार और तिरुवरी के वात-विकार का ‘विशृष्ट कटू वार्णी में निकाल हैं। तस तरह इस खुल के कविता के नारी क्षण का जार उवहे कत्सफ ने रहे हुए विद्वा गुणों की पाषाण का गान सिखा है।

कण्निसिन - करी:

पारस्येवेदु खुल के कविता की कैथिना लत खुल के कविता का उद्धृत्क्रिया अनित उदार रहता है। पारस्येवेदु खुल में नार्सेदु के छूटकर आपा एवं कविता पुरानी व्यस्ता के मुख को गुष्टित के रूप में स्वीकार करवे विवाह पड़ते हैं। इस खुल में स्वीकारा लम्बा हो निकट अग्नि है उसका प्रतिक व्यक्त होता है। विद्वान-परिवार के अविश्वास में विवाह की पाषाण बड़ती दिलार जमती है। गुप्तकालीन नार्सेदु वर्ण का सम्पादन बढ़ाया

-----------------------------

२. जान्विरेन कवि, पृ ४१।
३. प्रत्येक प्रत्येक, पृ ३७।
४. वकी, पृ ६२४।
काव्य मुल्य की दुर्गित्त से मलिकी दुन ती की कारकिता:

श्रवण से करिका कहीं घोड़ी की प्रारम्भिक दुनि की कारकिता है।

प्रभावप्त है लड़ी घोड़ी की और प्रत्याश उन दुनि की नवीनता है। वक्तव्यन्त्रीय नेविनता के जगह है अत्यन्त यह दुनि की कारकिता में उपलब्ध, नेविनता, मुरार का चेतना के व्याख्यान लेएँ देखिए की-कारकिता में गुर-फर्भ, करने की गौतः दुर्गित्त से रहती है।

भविष्य तथा दूरित्व का ज्ञान, उपेक्षादय से सब यह कारकिता कहें वहे दर्शे में आयात: नीरी-की समस्या है। कृ: गुप्ता जी लोगे के किस की कैसीया भक्तिः

परन्तु समाजत्ता की दुर्गित्त से यह दुनि के भौतिकीय दृष्टि में प्रकाशित रचनाओं के व्यवहार लें उपर्युक्त विनियोग पत्र को व्यक्ति भूल है।

रोक भिन्न पाठक की प्रतिक विचारक कारकिताएं, गुप्तार के अनुसूच-वय और उन्हें जंक्शन - प्रत्याशाच वर्तुक रणनीति त्रिपाठीकी के गृहुच्च प्रबुद्ध समाज, पुष्कर एवं सुन्दर की कारकिताएं में मार्ग एवं पाव की सार्थकता में कारण साहित्यादेश के प्रवर्त्ताणों के लौकिकः में राज का लंबाई होता है।

स्वतंत्रता का संबंध ही कार्य का उक्त प्रस्ताव मुल्य है, यह दुर्गित्त से उपरक्त गृहुच्च रचनाएँ व्यक्ति की कारकितें बनती हैं।

श्रवण से रचनाओं में कारण, दीर्घ, रोक एवं वातावरण स्तरों की पुरुषत्ता के कई उदाहरण गिनते हैं। अनुभवक वे वाक्यों की आयपु मृत्यु पर उपचर का विज्ञाप पाठक के निह के कारण रुष की दुर्गित्त खड़ी कहता है। गुप्तार
नै यह वर्णन लक्ष्यता है निर्वाचित है। काल पारिक वन पुड़ा है। गाथे में इस युग में करण रहा का कर्मद आवश्यक वन पुड़ा है किंतु जैसी कृपालय का वनाये। । उन्हीं प्राण काँच का शान्त प्राण होता है। उनकी व्यवस्थित वजन का कर्णन स्वायत्त भाव-शक्ति को जाने में प्रत्येक विचारक बनता है। कालपनिक खेर भार निकाले, एवं महारानी का पहले बारंबर में बीत रहे स्वायत्त भाषा उत्साह की संज्ञा विश्वासित छुड़ी है, प्राकृतिक वीर रह की बुरास्ता हुई है। \"ग्रामप्राय\" में भी कृपालय का देवा-चन्द बनाने का उत्साह इतिहास है। अन्य महाकाव्य में बचाया हैं के ख़ुश परे नवादी से बने खुलारे कृपालय (कन्हैया) के सिर पर स्वायत्त के रूप में वास्तव में आवश्यक होता है। जोक-मोक या जोक-कल्याण की भावना है हुआ की कई रचनाओं में है। माननकायाक का मानना वह युग की नवम विशेषता है कि \"परम-संतोष कामया का कर हुई यहा जित होता है। सनातन से मंदे के खेत मात्र को कारने में पी कर कालिया करे बंधे में सच्चा हुई है। किराता काल की प्रत्येक विश्वास रचनाओं में कार्ययोग की दुर्घट, किरातयोग की शौच का दुर्घट करणं प्राप्त होता है, वह सत्तारय है। ग्रामप्राय के प्रत्येक शासकीय है परत्व पानन-वाटनाक है निमित्त में राणा का शौच कल्याण आानं बनी है। रुपबान काँचार, भारती से युवत शेषेशवाली का वह जीवन में रूप में खित गुलाम की परिषद बनाये तकर उड़ी है। रामपरेन विपाठी के उत्साह विकास में बाले तीन संगीतवर विलोकन, परिमाण, एवं स्वयं से नाचक एवं नाबालिगांश करने रणनीति रूप के साधन, महान ज्ञान के कारण के इन्द्र स्वाध्याय होते हैं। कात्य में इस भाव का उल्लेख कहते हैं कि इस युग की कस्पिक्ष प्रवाह रचनाओं के साथ उत्साह में स्वातंत्र्य प्रवाह कालिया की रचनाएँ की होने शरीर हैं और एक नये पौड़ का मुक्त है, साथ में मात्र है के तरल के साथ और विभिन्नता के कारण के इन्द्र गीत-रचनाएँ कर भरी हैं।

रामपरेन का युग प्रमाण उल्लेखन है: तृतीय उल्लेखन के बीच में एक पहलुपुर्ण!
कहलाई हैं। पारसेन्दु लगा में अपनी विचार एवं मात्र प्राप्त हुई, द्विनवेदीय लगा में उनके रूप अनुकूल बनियोजन का माध्यम परिष्कृत माध्यम नमीहै। पारसेन्दु के समय में राज व्यवस्था एवं राज्यविभाग दोनों विशेष ईतिहास दृष्टा लू betray नहीं हो पाया था, उस काल के मुद्दे परिचय के मध्य का वह परिणाम था।। द्विनवेदीय नामक कर्मका ने श्रवण निम्नलिखित देवताओं की उज्ज्वल पावना है शुरू है और वह सब श्रद्धा के दृष्टि प्राप्तिर देश के बाहर करने में संभव है। शाय मध्य नहीं के बीतना को रखने वाली तथा लगा के कर्मका देश के अर्थ का ग्राह करने है। श्रृति वर्ग के वर्ग के अर्थ धारण का गुणवत्ता का इस गुण की विचारण था। पारसेन्दु लगा में दीन-देवताओं और दिग्गजों के प्रति वहांपूर्द तत्त्व की गति है और इस गुण के कर्मका समाप्त मानवों के उत्थान एवं कल्याण के सम्बन्ध को व्याख्यात करती है। हमें दीन देवताओं और दिग्गजों के प्रति वहांपूर्द तत्त्व की गति है और इस गुण के कर्मका समाप्त मानवों के उत्थान एवं कल्याण के सम्बन्ध को व्याख्यात करती है। हमें दीन देवताओं और दिग्गजों के प्रति वहांपूर्द तत्त्व की गति है और इस गुण के कर्मका समाप्त मानवों के उत्थान एवं कल्याण के सम्बन्ध को व्याख्यात करती है।
(३४४)

कायावाद

(३) कृष्ण का सीमाबंध और नामवरण:

कृष्णावन:

आवार्य कृष्णनाथ द्वारा शरी का कायावाद का आरम्भ चौथा १६८७ (यदि १६८५) है पाना है, उसके बाद उन्होंने कृष्णावन का कायावाद नाम नवरतन करते हैं। कृष्णनाथ के पुरुष को जिसे वे कहते हैं: शुभकालिक नवमय चारण का रवनार्जन का आरम्भ चौथा १६८५ में समकालीन आर्थिक। इसकी प्रारम्भिक कार्किताओं की गणना में, जिनमें दृष्टि के तारे पीते, संपूर्ण है। २। डा० कैवरीकाराराण के धीरे-धीरे के काव्य की नवीन नयनक और प्रविष्ट है वह एक स्वयं उन्हीं नैपथ्यी करण गुप्त, सुखद पारंपरिक बार्थ की रवनार्जन में होती है। इन कार्किताओं का समय चौथा १६८५ से १६६२ हैं, इन कार्किताओं का कारण कृष्णन युग कहा जा सकता है। ३। डा० विनोद राजा क्षेत्री ने कायावाद का सीमाबंध चौथा १६२० से १६३५ कायावाद है। ३। डा० गणपतिचंद्र गुप्त ने इस कृष्ण का सीमाबंध चौथा १६२० से १६३५ कायावाद है। उन्होंने यह पता लगाता है कि कायावाद के प्रसार का उल्लेख या प्रतीक सब १६२० या उससे पुर्व से होने का था। ४। हम डा० कौमतू के पत्र में अनुजार बिंदु बिंदु का प्रारम्भ चौथा १६८५ है। ५। उन्होंने पुरुष के जिसे दूरा सरलनाथ का रवनार्जन की कार्किताओं को प्रसारित करने वाली कार्किताओं को स्तर से है। किरण का रवनार्जन चौथा १६८५ है। और कृष्णनाथ की कार्किताओं में कायावाद की धारणाकोशिकाओं का प्रारंभ बहुत होता है। चौथा १६३६ में प्रगतिशील ऐसी चंद्र की स्थापना प्रेमन्द्र का कथा के में हुई। और प्रारंभिक

1. आवार्य रामनाथ चौथा: हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ६४८।
2. डा० कैवरीकाराराण कृष्णनाथ: आधुनिक कायावाद, पृष्ठ २०१।
3. डा० गणपतिचंद्र गुप्त: हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, पृष्ठ ६७५।
4. डा० विनोद राजा क्षेत्री: हिन्दी साहित्य: (उक्तक उद्योग और निवास, पृष्ठ ५४५-५५।
5. डा० कौमतू: हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २२।
(२७४)

वेल-कर्मचारी का पन्थ तैयार हुआ और जिंदी की प्रेरणा है ८६.३२-३४ के आव-पाव प्राचीनता करकर दिखाई जाने जाने। उस समय तक शाखाचार्य संकाल
प्रायः हुआ नहीं हुआ है तथा शाखाचार्य की दीया का हुआ नहीं है लेकिन जीवन है वह काल नहीं है।

नामकरणः

आवार्य रामचंद्र शुभार्धी के अनुसार, शाखाचार्य तत्त्व का प्रयोग दृष्टि में रोकना चाहिए। एक तरी हजारवाह के अनुसार उहा उसका रमण में वसुधे दे कोटा है किया हुआ काव्य उसा कैके और किया भूलता को आदर्शन वामकर
अवधा विश्वसनी वाणिज्य में मैन की कोई दीपक की व्याख्या करता है तब हुई धुली और अंतिक के प्राचीनां कर्मचारी के प्राचार में रहित एक काव्य शैली के रूप में। २
आवार्य हताशी प्रकाश द्विदेशी ने स्वाभाविक है नामकरण के विषय में यह लिखा है,
किस दीपकारण में मानकारण पुरुष की प्रवृत्ता, काव्य की चार्चिक प्रवृत्ता और भूनिर्देश के रूप में लंका काव्य विषय का प्रकटीकरण, मानवीय आचार,
मैनवां एवं विश्वास अप देखिए के बढ़ते हुए बढ़ते हुए पुस्तकों को दीपकारण करने की
प्रवृत्ति, श्रद्धा, विकास, राज, ललित, सामाजिक श्रवण द्वारा नामकरण की विद्या पर भूनिर्देश के प्रवृत्त जन्म का जाना है, वही दीपकारण
के लिए प्रयोग है नामकरण नाम देवी की जाने अधी की ३। भाषावाच बोलना का प्रयोग दूध ६९२०
का हो जुगा था। उस काल पाठक ने दूध ६९२० में बलू ती की शारदा लिखी में
हिंदी में भाषावाच दीशभक्ष कार विषय प्रकटिक हैं। उस काल पाठक ने
यह श्रम विस्फोटिक हैं दिज जाना है, श्रद्धा प्रहना है की ४। एक काल का निर्देशक
हो जुगा है कि भाषावाच और रहस्यवाद को भूनिर्देश प्रकटिक है करने कारी

-----------------------------

६. आवार्य रामचंद्र शुभार्धी : हिंदी वापिस का इतिहास, पृ.६६४।
२. डॉ० हताशी प्रकाश द्विदेशी: हिंदी वापिस (उदयन और विकास) पृ.५६२।
३. डॉ० नामवारवरिन्द : उत्तमत वापिस की प्रवृत्ति, पृ.१५।
(२४४)

काव्यवादों हैं। वहाँ का रहस्य, काव्यवाद और सक्षमतावाद शब्दों
के बजार और लोक-प्रवासी पाव का सच्चाई है, इन तीनों में निस्मन्दर घोड़ा-घोड़ा
कैलास है। रहस्यवाद कलात प्रक्रिया की जिस्या है, की द्वारा काव्यवाद रचना की सुक्षमता
के सल्व-सक्षमतावाद प्रक्रिया उत्पाद ये हुनात की आकाशात। १ पंक्ति को वह
नाम प्रभाव नहीं परतु मान्यतावाद को सफल नहीं है। काव्यवाद के विषय वे
बाबा कपड़े हैं हिन्दु का वैदिक के आदर पर स्वामित्वस्थित विवेचन करते
हैं तब हिन्दु में उसे काव्यवाद" नाम दिया गया है। वाक्यान्तर कैलास होता
है कि प्रारम्भ में ताक प्रकृति पिंजरे का विरोध माना है, परन्तु वाय पूरे
वह बहुत हो आता है। काव्यवाद के विषय वाक्यक शब्द का उदात
नाम काव्य-प्रवाह हिन्दु में का अंगी मुख्यक पारा बना हुआ है। तब वह केवल विरोधी
की बत्तु नहीं है, जैसे न केवल विषय विनिमय का विषय रह गया है। २
उस युग के ग्रन्थ काव्यों में पहले उस नाम की स्पष्टति दे ही गयी है।

(२) काव्यवादी काव्य का यात्रा स्वरूप प्रातिकों

उसका वर्ण वर्तमान में बताकर उसके प्रातिकों की स्पष्ट करें।
इस काव्य में विनिमय या विनिमय का झुंड पाव किया है। और रहस्यवाद में
विनिमय का पाव उसका दुर्लभ आदर है, किसी अन्यके, बजार का है प्रति तीसरे
विनिमय का बाबा, उसे प्रति वष्णु विनिमय उसके फिलें के खिल हुनात, उद्योग के
कारण हैं भी उस कुछ सफलता कर उद्योग में हैं ही दक्ष हो जाता काव्य में या साहित्य में
रहस्यवाद की सृजन सुनित करता है। काव्यवादी काव्य में सच्चाई कृति उन्नत की
वास्तविक प्राचीनता, स्वभावक स्थान कल्याण के द्वारा वाच्यात्मक पारम्परिक की, प्राचीन
रहस्यवादी प्राचीन का जुक बढ़ा। काव्यवादी काव्य का एक वातर रहस्यवाद है,

-----------------------------

१. छठ ग्रन्थ विषय: काव्यवाद, पृ २४।
२. काव्यवादी नन्दकुमार वाक्यवाद: बालुक साहित्य, पृ २५०।
परन्तु उसकी प्रेमणा चार्मिक न होकर नातीय बार शार्क्वृतक है । उसे क्या बीतीं शान्ति की वैधानिक और पैरंस्क प्रारंभ की प्रारंभिक पी रुक लेत है । उस दाद की तरह हरे कोष प्रृक्ति के रूप में प्रृत्ति के विवेक तुल्यानात रूपों पर उस पश्चिम व्यास का अर्थ रुप है । उन्नीतदारों के प्राप्त वे करण व्यवहार का भाव दीर्घार्थी की एवं महाशिवरी की गंगाराजी पर है, परन्तु इन वाक्याशा का जुड़ स्वयं नहीं है । मात्राक मूल के हस्ताक्षर है द्यायाराखी साम फ्लाइट एवं महाशिवरूपी शारीरिक दृष्टि है । जब की घरण चारण, हुँसकता में पुष्ट पाने का एक्याछ पार्श्व है : करणा की लक्षणा करणा करणा करणा है भारतीय सागर व प्राप्ति वादाहुरुक्त का गाय । और हुति है तो की करणा का वाव है, हुति ही पद्धति हें विष लिख की प्रतिष्ठित करता है, परिष्ठित करता है । इत्यादी करणा की वाणिज्य से पानीलाफाल का वातावरण का कालदीवारा से वानंदवाह का दर्शन कांप्याय मनकर उत्तरा है । प्राचीनता देश के प्रस्तावित आनंद वात में व्यक्ति की हुआ लगा दोष व रमण या वाणि अदुई नहीं है, जि जनता और प्राचीन के व्यक्तियों के प्रति विदेशियारूप नहीं रहती है । लु दलन में जनता की उपेक्षा नहीं होने वे कारण । वार्ताला विप्रार्थ की भी दृष्टि कि ग्राम बन दक्षता है । पुरा शालों बनकर काळ के ख़त्तक पार्श्व पर विशेष वापस बीवन पुर्व के श्रेणी शान्ति का वार्ता है । कृपया की कारण शर्क को रोपिख कांप्याय का भाव कालजीत में ६० वषों के बाद हिंदी की हर कांप्याय खाराबान पर पहुँच । उसी देश के प्रमूख स्वयं भारत में कर्मार रोपर्ष्ठाज टैगेड के कांप्यायों में रखना पुत्री, पा० श्रेणी शयन एवं प्रृक्ति के प्रति विदेश एवं प्रेम के पाना सुधूरी यस्की । हरे पाना को हिंदी में फ्लर का रूप है । उपरोक्त में करण वने हर वैदिक कांप्यायों से बारे के फिर रोपिख कांप्यायों में नाग दृष्टि वैदिक के दृष्टि के विवेक हुए में काल ध्वनि है । और अने जीवन की स्थानिकता को पाने के लिए प्रृक्ति के विवेक रूपों में रूपन्न का अर्थ रुप है। वैदिक वैदिक शुरू एवं रोपिखीरुप की हुआ विदेशियारूप उस तरह विदेशियारूप है ।

9. वायन सन्धुरेन वायन: जानुकिक जार्तिक, पृ ३८२.
कृपया ध्यान दें कि यह भाषा भारतीय कला के अंतर्गत है।

लक्ष्य है कि इसमें अप्रामाण्य साहित्य का उल्लेख नहीं है।

1. आदि श्रीराम की प्रतीक्षा का समाप्त होना है।

2. उदयन की श्रीराम की प्रतीक्षा का समाप्त होना है।

3. श्रीराम की प्रतीक्षा का समाप्त होना है।

4. श्रीराम की प्रतीक्षा का समाप्त होना है।

5. उदयन की श्रीराम की प्रतीक्षा का समाप्त होना है।

6. उदयन की श्रीराम की प्रतीक्षा का समाप्त होना है।

7. उदयन की श्रीराम की प्रतीक्षा का समाप्त होना है।

8. उदयन की श्रीराम की प्रतीक्षा का समाप्त होना है।

9. उदयन की श्रीराम की प्रतीक्षा का समाप्त होना है।

10. उदयन की श्रीराम की प्रतीक्षा का समाप्त होना है।
(क) सुनील प्रतिविक्षाः

इस द्वारा की प्रतिविक्षा की द्वारा गणपतिकवर गुप्त ने २- विचारंत, २- विचारंत और २- शैक्षित अर्थ द्वारा वायु में विचारंत दिया है। प्रत्ययर्ध नि सुनीलका की प्रत्ययर्धा के तत्सि सूत्र के अनुसार, इसका (क) निष्कृति, प्रति का अत्यधिक रूप में विचार, हेतु ने प्रत्ययर्ध में सर्वत्रवादी पावन, श्रेष्ठ एवं जूनार का विचार, दूरद वाणिज्य का निक्यो, चित्र एवं पीछा का गान, वस्तु का अर्थ रहस्य की प्रविष्टि, दार्शनिक क्रम का वाचन, रास्तोत्तर एवं सार्वजनिक प्ले का नया उदाहरण बाद व विज्ञान की प्रतिक्रिया नि सूत्र वाद और विज्ञान में पुनः बदल क्यों, द्वारा प्रथम, श्रेष्ठ वाणिज्य, त्वरत एवं वाणिज्य, द्वारा प्रथम श्रेष्ठ एवं वाणिज्य, द्वारा प्रथम श्रेष्ठ एवं वाणिज्य, द्वारा प्रथम श्रेष्ठ एवं वाणिज्य, द्वारा प्रथम श्रेष्ठ एवं वाणिज्य, द्वारा प्रथम श्रेष्ठ एवं वाणिज्य, द्वारा प्रथम श्रेष्ठ एवं वाणिज्य.  

2. द्वारा गणपतिकवर गुप्त: हिन्दी वाचनस्थ वाचनस्थ वाचनस्थ वाचनस्थ, पु. २३.}

3. द्वारा नाम: ज्ञाननाथ, पु. २६.
स्मारक की खिलौने खिलौने वह करते हैं घूटन-डी की जानी है, उसके हुकुम नहीं पर उसके अत्याचार की नर्सिंग गार्ड में शरण है। प्रश्न का क्या बादशाह पाने पर उसकी कीमत जुटी में भी। (एक) नवीनता आयी। प्रश्न के प्रति कार्य का टूफ़्फ़ोरिंग पुरातत्व या वनावति परिसर का न रहकर एक रहस्यमयी चर्चा के प्रति विस्मय या विख्यात के पारंपरिक रहा। धीर्देहत्व प्रश्न का प्रति नाम के लिए विशुद्ध मुद्दा का ही नहीं रहा, कार्य के तत्काल, सती ब्रह्मी बाँटेंगे तत्काल। ब्राह्मण के तत्काल हैं। इस तरह की करक्षा में व्यक्त की प्रति कार्य का विश्वास धीर्देहत्व दे प्राप्त वन। दृष्टिकोण करक्षा में निर्मोहक दृष्टि से नहीं विष्कृत लंबा एवं वास्तव निर्मोहक दृष्टि का तत्काल स्वीकार, ग़ल्ला। दृष्टि विश्व से कपा कपा नेभावर यात्रा है, वहाँ से लगभग विश्व दे वातावर यात्रा के उद्भास स्वीकार की प्रवेश किया गया। पारतेन्दु एवं विशेष प्रश्न की कर्क्षा में अन्यथा एवं विनेता उल्लोक की की प्रायुक्त करते हैं। ब्राह्मण के ब्राह्मण ब्राह्मण करक्षा का कर्म। बाहर कर्क्षा पार्वत्यकालीन कर्म। इस करक्षा में केवल वर्णशरीरिक हम-सामन्द्रिक के चुना कर्म है विश्व पर नहीं विश्व विश्व कर्म सारे वार्तालय का विश्व एवं मनोरंजक। कार्य कहा है। लाभ में व्यावसायिक परिस्थितियों का फाद वस्त्र का शाय या कर्तव्य की अंतिमता का वाहन बाया बाया, एवं शाय शाय भवान यह अव्यावह इस कर्क्षा में दीता है। और यही प्रश्न के कारण ब्राह्मण कर्क्षा में विचार एवं दृष्टि का गान गुजात हुआ है। इस तरह की कर्क्षा में विचार है की पूर्व प्रस्ताव प्रस्ताव दुर्भाग्य है। वह बंद है कि विचार के कारण तत्काल कर्क्षा का सूचना कर्म नहीं है। विचार का पाप ही कार्य को कर्म-निर्भर में निर्भर करता है। विचार अव्याहत में लोग दृष्टि है, वहाँ निर्भर के विचार विचार कर्क्षा है। ब्राह्मण कर्क्षा के तत्काल वहाँ, सती, प्रेमी और नाले के तत्काल प्रजुमातित होने कार्य है।
प्राण की अभ्यास वर्तमान वाति की प्रेरणा रूप है। वह चौ-चौ हर्ष शीत की प्रतिभा नहीं है। इस लुआ में नरी ने प्रेरणादाती का रूप है जिसा है। वह है कि प्राणन काठ में जो स्थान सिखरी नारी का था— वो नारी तिसरह मुख था, उधी पुल जो स्थानिक करने का शैल हायतारी कवि को दिया जाता है।

इन कवियों के भावनी में पावना स्वतः उन्नत छोड़ उठी है। कल्पना
के माध्यम से इन कवियों ने अपने विषयवस्तुओं को "विशेष वक्ता" के द्वारा पूर्वका
वी नावतक के कारण कल्पना-चित्रों की भाकता पायी। बादि है।
विज्ञान उपाधियों के बदल सूक्ष्म पाठ का कहारकी नहीं करती। वहाँ रणणीय वृहत् ने
रणण कर.वैदिक है। विषय-कुणण युग की नीतिवता के स्वाता पर चुन्दर अन्य या है चुन्दर,
चुन्दर सिखावती पदवालना प्राणवाशी का जमी है। जिस जैसे कवियों की छाया तीनत में बढ़ाय खरे है। वह पावनी नाव-वन्द्यें हें दित्तरण करी है।

इस कविता ने जो हरी बौद्धी का स्वरुप कहार न केवल परिपूण हुआ है, चितर
पी चुन पढ़ा है। चित्रों की पुलिस के लिए जाननीत पावणा का मित्र चुन की चित्रण इस
की चित्रण है। उन चित्रों के द्वारा कविता पाठत के लापने ब्रह्म वालों, नावतों
के रणणीय वास्तव विभा उपस्थित करते हैं। छाया अनुरूप ने नाव-विराट
में वृहत् है। निरालों की संसजा के वास्तव के कारण कई कविताओं, ग्तियों
को संसज्ञान बनाने में सकत हुआ है। निम्नादीवी नीटियों की पुलिस बुखर के लिए
चुन्दर धार्मिक का अवध चलाई है। चित्र-चित्र ने अपनी नि:स्थितियों को
पाल्ला करने के लिए कई प्रीतियों का उपयोग निकाला है। वह लुआ की कविता में
पुराण उपाधि, उपाधिय धारण के साथ नावविकरण, विषलि, विषय और
च्वार्यवाला बाबर पदवाल के बीबयों का स्वाता रीति है। विनय विश्व का है।

पारित द्वारा का एक नारा जनव का मुढ़ चुना है। निरालों ने वो बद्दों ने
मुढ़ का चित्रण करते हुए मुढ़ द्वारा का जायता का बाद रलते हुए अपनी
कविताओं में उत्तर प्रयोग किया है। इस तरह जब ने मुढ़-विनय द्वारा ना द्वारा चित्रण की
हुआ में वह लुआ की प्रेरणात्मक पुलिस की पुलिस की कार्यकरण है।
झायाबाड़ी कथिता में निर्निम्न मानव-गुणः

राष्ट्रीयता या देश प्रेमः

झायाबाड़ी कथिताओं का ख्या मारते हैं बन-साठरण का काम है।

गाँवीकृत के बारे में गरीब वन्यावसाय आर्थिक है तरीका प्राय मारकित है। उस आर्थिक नै बन मारत में भेदनिपट की और मूठी। भारतीय की स्वतंत्रता के लिए कहार लक्ष्य कर सार्थकता की की भावना होती है, यह भावना का रूप में गाँवीकृत के बारे में धर्मतान्त्र को खुलास कर देश मर में एक विशेष फ़रार का उत्तराधार का प्रमाण। देश के प्रति विशेष दिलाओं में रस-पिटक दिनया की पावना उपलब्ध पड़ी थी, उनके लिए बनता में लम्बास की प्रचंड पावना हुई।

देशभक्ति बाहुल्य करने के लिए यह जनता के कर्मचारियों ने वन्यावसाय के पार्श्व पर जलने वाले जीवां को, उनके बनावर-बीविया का व्यापार देखे हुए पार्थिव का प्रस्तुत किया। वह तरह इस जनता की कर्मचारी के विभिन्न पार्थिव व्यापार निर्माण का व्याख्या करता है। इन कर्मचारियों ने देश के प्रति गांववान का गान भी। किया और उस विलक्काट देने वर्तमान काल का विश्वास की गुणार्थ के फिर प्रेमण ही। देशवासियों की आयुष्य और मृदु भाव जाने वाले देश प्रेम का प्रेमण ही। कार्य को अपने

उन्नति की रक्षा और उन्नति है के लिए युगलों हैं क्रूर बन में दिखाई देता है, वह शही को निर्दिष्ट प्राय फ़रार करेंगी। पेशेवर की प्रतिष्ठा यों में प्रजनन का यह स्वर गाँवीकृत का प्रस्तुत करता है:

उन्नति की रक्षा और उन्नति है के लिए युगलों हैं के

जिन युगलों के निर्माण हैं के

अन्य बहु

उन्नति है के लिए

जो उन्नति है के

1 ये बयाबेल प्रति: उंच, पृष्ठ 55.
बाज री। वह शब्द पैठौटा है। वह लोगों में गुंजावा-ता विकल है।

बाज री। पैठौटा है।

लिखित वल-विवेकों में।

वह शब्द गुंजावा-ता।

कुछ तत्त्व विकल है।

किन्तु वह व्यवस्था कहा।

कुलों की दाक्ता के कारण पारागिक मामला है। आपको बातियों को विवरण में है। वात करना आवश्यक है। निराकारी भाव के अजु कुलों को रामकुंवर का यथार्थक हो। उन्हें जानें है।

बाग़ा फिर एक बार।

यारेवे कार्ये हुए तारे। तव तारे तुर्के।

कारण-खंड - तरुण - किरण।

छठी लौटी है बार।

बाग़ा फिर एक बार।

मात्र-मात्री के पल्ला नाथ पर नारेव बनकिये हैं। वह तिकड़े। उन्हे के लिए पै। गार्व प्रवाह करने की मामला को कार्या है। बनजुहल नाटक की कार्निकिया जह सेस की गत्ता की ना जाऊँटी है।

कारण वह पैसे में हमारे।

वहाँ पूर्ण अवान चितिविव को पिल्ला एक छोटा।

वर्ष तामरब जंग फिला पर नाव रही वह फिला निरूप।

बिल्कुल नीच पारे की हारी चारारी पर, फिला लेकुम बारे।

-------------------------

6. उद्देन, पृष्ठ ५६।
7. वारीक, पृष्ठ ५६।
8. "बनजुहल नाटक (प्राकृतिक)" पृष्ठ ५६।
बाद में राष्ट्र के किस कारण नारसक नहीं आए ? कहने की तो पर कोई राष्ट्र की कुरानी की बदलाव है, लांचा नहीं करते। 'हिंदुआ' का पत्र नामक 
कविता में नवरंजन ते जो कुछ कहा गया है कांग्रेस की कान्वियता का ही प्रस्तावकरण नहीं है बता?

है जो बहादुर चन्द्र के
मे परके भी
पता की बतानी।
झूठी है दुन वे
जो उन्हें जरूर इक सी दुन माला का दाग
त्यागा कृपया! देखिये क्यों?

देश की प्रतिक नृत्य करवाने के लिए देशवासी मान का भाग होता है और वह 
देश-वृत्त का आवाहन करने अपने भारत-वास्तव में स्थापित करने की कामना करता है:

लेकर रखी हो युद्ध ज्यादा वाँछ नहीं करना।
मन-मान्द्र में देश दृष्टि आदर बनाना करना।
वहीं वेदांत वे बनी सबा देश की पुरातन हो।
लेख कारने के लिए मन में अनुप व्यक्ति है।

एक स्थायी देशवासी की किरदार की ज्योति की ज्योति में ज्योति उद्धार, देशवासी के कार्य करते 
जाते है:

तिक्का है। नाक तिक्का।
ख़ुदा दिया फिर करण कार। नै
यह लोगों का
गांधी की आता का संबंधार

-------------------------------------------------------------------------------------

1. पारिस्त, पृ २९६।
2. तौ प्राचीन राजासूत्र भीलास्वाव, -३४० रामचरितं करा(आग ने अक्षय कराव) पृ ४६।
पुरावन भेत्रों की लोककार ॥

भूकास्य कौ निनास पर पंडवी के व सुधार भारत की ज्योति को बायिकत करते हैं।

त्याग एवं संपर्क शरीरीती दुःख के कारण न्यून मुख्य की प्रवृत्ति हुई है। इस दुःख की कार्यशाला में प्रधान विश्वास अस्त्रकृति और ज्योति को गरीबप्रा स्थापित है। वर्ष कक्षशक्ति-समाप्ति के पवित्र विश्वास विश्वास तथा शुभ भाव की शुष्क परिणाम है, ता भी भाँति शान्ति (स्वच्छशक्ति चाराकर्ता) कार्यार्थार्थ भारतविश्वकृति के पुजारिय मुख्यों की प्रवृत्ति करती है। संपर्क की नामकरण पर्याप्त करती है। भवा का यह कथन मुख्य के लिए प्रेमण वन नाता है:

संपर्कण जो शेतवा का धार
वज्र रंगकृति का वह पत्तार।

वारा वह कथन वीकृत का उल्लास कर देती है। वारा भी नामकरण के साथ भारतीय विश्वकृति के अन्ध गुलामों को बनानेप्री की भवा की वात कितनी उत्प्रेरित है:

द्रव्य, नाम, पद्मा आई बाज़, पुंजियार, भोज व्यापार
हनारा श्रीमंत-नवन विश्वास स्वरूप
हुक्कारे छिन दुख है पाव।

भवा का मह दुह संपर्कण या नारी का वापिस नृते व संपर्कण दुह प्रेम की-त्याग की नहावा स्थापित करता है।

-----------------------------
1. बुधगलिन्दन वलि: कौण्ति, पुं. ५२।
2. ज्योतिष मन्त्र: कामाय्नी, पु. ६७।
3. वही "", पुं. ६७।
वें लग्न में मुझे बाद नहीं
मैं उसे देखा है
भवन का घर जमकर है।

कपने की फिर बुद्धि की कावना ल्याना की नाचना हे उठाती है, बारह के बुद्धि में बुद्धि बनने की बात एक बात के पृथ्वी ने नया देश में ब्यक्त हुई है?

बारह के बुद्धि के देवता मन
बारह के बुद्धि पावन:
कपने बुद्धि की निष्पादन कर दी
बनने बुद्धि को विस्तार कर ली?

जाल्प समर्पण ने द्वारा बुद्धि की बात के रच्य हनन बनाने की उदक्त कामना की प्रक्षेपण है?

बनने नव बन को बार बार
मन में केशा हुं में चालाक
यह भाव समर्पण बने लड़ा
मेरे आ का बीच का नवार नवार
मे आज बदलकर बाघ बाघ।

परंतु देवी की अपनी विषिष्ट वाणी में - ल्याना की परिहार की अवस्था करते हैं?

उन वक्त दीप बन जाना रंगना के बेछ में
आतंत गुंटो से देश में।

-----------------------------

१. कामावर्नी, पृ १२५।
२. बड़ी, पृ १२४।
३. जाज के आवश्यक हिन्दी कविते: पारम्परिक कविता, पृ २२।
४. महादेवी कविता: शैली, पृ ६५।
श्राव का दीप में (कलार) परिवर्तित बन बाना उसके प्रेम के द्वारा तिथिय-गये उत्सव का ही परिणाम है।

श्रावी ने लघुगुली नानारे के बनवाये गार्व की गाथा गायी है।
नाराय प्राण के बीबन में प्रवेश पाकर कमान सब समाप्त कर गया है बीबन की समाज - चम्पा बनाने में फिरना लघु करती है। क्यों उसकी प्राच्या का - दान का गार्व करते हैं?

नाराय तुम किते चटा हो।
विश्वास - कब्र -न्याय पद तत्त्र में
पीछा ख़ुद की बात करते।
बीबन के सुधार सफ़फ़ करें।

बीबन का घर की गार्व ने कहा हो बाना, प्राणारे की तरक्का में अपने बीबन कौं बजा देता- दीपक का यह दांव लघु का पान ने परिणाम है। लघु का यह सल्व न होता वही सायर संघार-रघु के समक्ष कह रख नहीं पाते। उससे बीबन और क्रान के लिए लघु नैनोंकार है। लघु की नैन नैना कर हैः

रक्षाम अन्वन बीबन का पान
दीप करना आज़ाद-प्राच्यार:
महा कर गुलालों में प्राण,
बीबन करना अछली निमाण
गौरित का है यह ब्रिन्ध विकास
एक रंगरों में रहे वर्दन
नम सुध बनाया दुरा प्रायोज
लघुविकार में है पुर्व-विकार।

---

1. भारतराज, पृथ २२६.
2. वर्डारा कसारा: राजन, पृथ ३०.
कपना स्वार्थ की यदि विधार का अनुशासन बनाता तो वर्णनात्मक होगा, क्योंकि प्रत्येक स्वार्थ के लक्षण के जतन में त्याग के कपना है। काव्य की बात:

कपने में ख़ास कैसे
क्योंकि विधार करेगा?
यह एकान्त स्वार्थ भी चिन्ता है
कपना नाश करेगा ।

इस नाश के बचने का उपाय है त्याग। और त्याग की परंपरा श्रृंखला विश्व की नक्सल संदर्भित वस्तु के रूप में गायी गयी है।

शायारात्र के उद्धार में पुनिष्ठेश्वर की ख़ास कुटुंब पर ज्योतिषि शायारी की प्रसन्न गायन ज्योतिषीय क्षेत्र के बाद, ज्योतिषीय विधार प्रशासन के लक्षण में हम सच्चाई को प्राप्त करते हैं। इसके समय त्याग का कारण, ज्योतिषीय विधारण के कारण में ज्योतिषीय विधारण के सन्दर्भ में है, जो अंतर्भाव की अपवाद से, परमाकार की नैतिक व्यवस्था में ज्योति को प्राप्त होता है।

देवा - जौक्लान:

शायारात्र के आदर्श का कार्य होने पर द्वितीय कार्तिक काव्य का तरह देवा-जौक्लान का आध्यात्मिक व्यवस्था के रूप में स्वीकार करता है।

पंक्तियों की गीता कार्य में अपनी दुर्दृष्टि वाणिज्यिक प्राप्त करते देवा से वापसियों की काम्या साधते हैं।

विश्व प्रेम का सार्वभौम राग,
पर-देवा करने की बाग।

-----------------------------------------
6. कामायणी, पृ 152.
रूपको मंथा की जानी रही
पा, न पन्द्र हँस गाने है। १

देवा के वैश्वत्त का पहचान प्रभावधान करते हुए कहा गया है कि महामुनि का यह पृथ्विहीन वल है, उसी के उपाय में हमारा मान है या तभी देवा जैसा का निकाल की जाती है जि देवा है । २

रक्षर मुक्त हृद्य का यहँ
यही - प्रेम का जो है
द्वारि - देवा मान हमारा
उसे खिलाने को है। ३

गुर्ज की अवाका का शरीरकरण करता हुआ काव्य उसे परछाया दे पथ की आंदोल -
परंतु अंग से आंदोल निम्बुँन करने के कार्य में उलझ देखै ।

चारुपल्लि दुमंतर ५ में ताल के
गुर्ज हृद्य का दुरंत शार
पर देवा दर-रक्षर वह व्रत
हरी-संत पथ आंदोल वाह। ३

चारुर्रा का फला परवरकर दे जिथे है वह प्रात्म है, वहाँ चारुवी की अवाका में परछाया दे पथ कार्य है वह नवीनता का आकृति है।

देवा का अवाका का स्थान श्रेष्ठ व्यक्तव्य है। देवा पर कल्याण की नौसी लड़ी है। देवा है दुर-पथ की स्थिति संयम है। और उसके श्रेष्ठ का अंगभोक्ता
ऐसे निकाल कुमार हैं वह लोक है। रामायण के उद्यान देवा की बाबर गुर्जर

----------------------------------------

१. द्वशम, पृष्ठ २२.
२. रामायण, पृष्ठ ६५३.
३. पल्लि, पृष्ठ १६२.
(१५०)

है। पंक्तियों प्राण में उन्हें जीवन का एक मात्र अंश है तैयार - और तैयार है बढ़कर किशोर वेरुकर मुख्य हो भी भी अया लाता है?

अब व्रत के श्रध्दों में तैयार का पहला स्त्रील: 

जीवन का एक ही अवसर है तैयार

नायक का बादशह यही

तैयार है चित्र सुभित होती है

हुड़ ् गिरदाना में उपाय है प्रेमांडुर। २

जन तैयार है जब नायक तैयार निवास का उपाय है, वृणा उपेक्षा में बालिका रक्षक, गंगा वधेर से उद्धरण वनकर, बृहस्पति देव निवास में ज्योतिष क्षेत्र का महत्व, क्रोधयोग का उपाय में घुम रहे हुए।

की रात मना करता है। काव्य त्याग यज्ञ बालिका की उपासना में रत रहते हुए। भी नातार-रूप को करते हैं,

जब तो तैयार देव की उपाय है:

ज्योति में नारे गंगा सात

उष्ण झुलङ्ग गुरुः आर्कता प्राप्त,

वेदवाद स्वर्गीय यज्ञ नाथ।

जिसमें नायक रोहित की उपाय है। ३

विश्वास कर्म-नामना:

--------------------------

श्रीवि गुरु में कुर्मण्ड है काल्य-कर्म पर विशेष मनाया गया है।

इस विश्व में कर्म की संगुण कोई रह नहीं लगता, कर्म का नक्ता विशेष है।

परन्तु गीता प्रार्थिक विश्वास कर्म-नामना एक मुख्य तत्व है। जिसे वैभारक

--------------------------

१. परिवह, गूळ २३६।

२. गुणावधि, गूळ २३५।

३. शुद्धान्त, गूळ ३२।
(66)

एकाई के रूप में अनादर करवाय बीवर की ओर अवरोध हो जाता है। यह निष्काम कर्म क्या है? कर्म करने दुष्क उसके पाल की हकीकत है लिखत रहना। कर्म एक ज्ञानस्वरूप क्षीण्यता है ऐसा उपकरण उसे कर्म कहने वाली कर्म है। कर्म पर जात का जारिहर है, वह निबेदन स्वतः प्रवर्तन यह तथा काम की कामना है प्रेमस्वरूप होकर न किया जाय। इस प्रकार की पावना रूपस्वरूप है:

ईस्ट प्रेमक शक्ति है हृद्यब्लत में सर्व सीव है कर्म करने नए हैं समन छाये वीव है कर्म वाले घाँटि पर हो चीर, करना वारदाते पर न फार पर कर्म हें कुछ बायान रहना बागावे।

काम का फार कर्म के प्रशार पर बायारित है। इन कर्म का परंपरागत हुणकर और अजुव कर्म का परंपरागत अजुवकर होता है। इन त्रहा दुल्हारी और अजुव हुल्हारी है। भारतीय संस्कृति इन कर्म के विचय में खेद कारण है। हमारे बाबने ही कर्म करने लगने है जाने है और है ती हमारे पान के कारण करते हैं। यह पावना केवल गर्म गर्वों में खोजत है।

स्वीय कर्म हें ही अवरोध,
एक सुग्राबिज्ञा विविध प्रकार,
कर्म' राती लवना दुप्यार,
कर्म' बेड़ा का भार।

जन्मब्र की कर्मफ़ॉइल की आदर्श पर विविधकरता हुवा कर्म करता है:

सोजा विविध के नियम निकूल,
जो बैठे लोकों का कार,
केवल यह प्रवृति स्वस्व लज्जा,
खोमने कर हुप रह गया।
समालोचना:

मारात्मक विश्लेषण स्त्रीलिपि कर्तमय समझने के लिए तो गुरूमाशखा पाना गया है। शहीदवाणी कर्किता में इस तरह गुरू पक्षकारों-पक्षकारों के एक दिशान्त जवाबाद का अनुभव कराती है। उपायों का शहीदवाणी प्रारंभिकात्मक है प्रेम-नाथ भास्कर का ही रूप रहा है। यहाँ के शहीदवाणी-पक्षकार का स्त्रीलिपि था और उनका अनुभव कराती है कि दिशा की एक महत्वपूर्ण दृष्टि से बड़ा बुद्धि है, क्योंकि निर्दिष्ट विश्व की बलवत दिशाका नाटिया के नक्षियों के तरह एक हुआ पर बनाई हुई है। इस बौद्ध नतिया की समालोचना का माया द्वारा अविभाज्य। कर्किता में प्रकरण एवं उठा है। उस पर अक्कलव और शहीदवाणी का निर्दिष्ट प्रकार है, जाने वे परिवर्तन के शहीदवाणीकर्किता विवाहियों का प्रकार उन्हें दुःख किया है। तब है किशोर अविभाज्य, पानव संगठन और ओड-नाथ का स्वयं द्वारा अविभाज्य कर्किता की बैन है। कारण वैदिक महत्या नहीं स्वतंत्र मुख्य की पहचान कात्याय रामच गर उठाना है:

पानव पानव से नहीं फिनन
मिश्यनु: हो देवत, कृत्रिम अख्ता
वह नहीं विश्वन
पेत कर फिन्न
निर्दिष्टा क्रम वह पानव का
वह निर्दिष्टा क्रम
हां कोई सर।

प्रेमी ज्वात्तिक ने बालिय, कारु, राजस्थ भरे त्याह की हीमाहियों से सुख, मुख्य की समालोचना करता है, कर्किता का अन्य समालोचना के मुख्य की जीवित करना है, समालोचना के अब्दुद्व के दिशा वह बलत मारकोर है। कारण: समालोचना एक चालायक

-----------------------
1. सुमित्रा नन्दन की: शहीदवाणी का उन्मुख्यक, पृ. ४२।
2. आनन्दिका, पृ. ६६।
गुल्म है। कवि के शब्दों में-

कविदेश घर काव,  
वर्ष आति करणा जात  
रहितमित सब हाँ रिमाख  
एक हृदय कर्मणाथ स्वर।

अपने पत्र की भिन्नता और दुर्विन्योत शृंगारों के बादर में पक्षी पूज विश्वास को है। इस वृहत का दुःख पाने हैं और हमें पूर्ण ही मन्त्र पर निवेद का अनुष्ठान करते हैं। जहाँ हम अपने प्रचंड द्रव्य कम्पन करते हुए एकता को ग्रहण करते हे त्योत्तम पाने हैं:

तुमने एक हूँ फुकें दिलाया  
विश्व बेठ है बेठ बसों  
तुमने निकाह मुके कायम  
लखते करते नीट बजो।

इतनी मानना-एकता की मानना के द्वारा ही हम निहित हैं अनुपम को पा सकते हैं।

बाल्य प्रशासन:

--------------------------

विवाह के कई वार्षिकारों के कारण संगीत की विराटा का वृह ग्रामावधी कवि को हुआ है। कवि की आत्मियों में दीमित्र रहने की लहरीया पानी में पहले प्रविधि है। बार-बार की परिकला, स्पर्शियों के पाये के कारण एक प्रतार की संख्या वाला गयी थी। ग्रामावधी कवि ने प्रेमती की विराटा के बारे में लिखा वाल्य प्रशासन की पानका-बारंबारा में नये पत्थर के बाय में रूप बनाने भुल किया। ग्रामावधी जात में कैपितूक का पहला बुत्ता। जाँ: कैपितूक -  
स्वतन्त्रता और दायित्व में मुक्ती भी उद्धोख हुए। अपने को अपने पड़ों में न जोड़े कर रिमाख का प्रारंभ में विस्तरना उद्दी का जल है। संघ की वाहन में लो हुए।

--------------------------

1. ज्योति, पृ २७।
2. कानायाबनी, पृ २८।
बस यह कवि ने कहा है तिकते तिक रहा। पंबद्वी प्रसंग में राम दीता थे कहने हैं:

बाटी से घर की अंधेरी में
बचे हैं चुटकुला नाख
वह वन है गीत
गीत का प्यार भिन्न तो उपलब्ध है
लहर की तंगी में मू पर
गीत की मस्तिष्कमाला बाँधी
देवी में घटु घाट
गजब में कंधेरियाँ ये बारे
तुम चउ वह बारे हैं।

कवि पुनित का जागरण कहते हैं बताओ जिसका नाम तब हू गिना आता प्रज्ञार की भावना कहीं की सक्रिय नहीं, इसकी ताप मन चन्दन है पुनित की उपजना

वीड़ी, वीड़ी, वीड़ी कारा
पल्ली की, निकले फिरा
गंगा बढ़ चारा।
गृह गृह की पारंपरी
पूजा साधन-सुन्दर गंगा को खान-खानी
उर उर की बननी बारंबरी
प्रातिकों की शंकआला-वाँधा, वाँधा, वाँधा, कारा।

उदाम के ये ध्वनि की ध्वनि हुआ, प्राच्यी मिसालमों वे मुर्तत हो तु
अपने की भक्तिमान विशाल का ने आगम में फैला है- कवि का उद्वेदन वस्तु: उपयुक्त
बन जाता है:

1. भर-ज्याम-सेव-सेव-नाना-कर
2. भर-ज्याम, भर २४५।
3. कविता, भर २४६।
(१९५)

पर उदाहरण के लिए बाल्य वर तु मेरी प्राण
हर कर दे दुरव विश्वास,
किरणों की गति हो जा, वा तु मेरी नाना
एक कर दे पुष्कर वाक्कल।

एक कर दे पुष्कर वाक्कल में जाता प्रतार की पावना त्रयावादी काव्य एक
नया मुक्त कानी है, वह एक उदास रूप में यातर दुर्ग है विश्व की मांडक की पावना
पावना उपासनावता में है। काव्य उसी इव वरा रहे हैः

किस नेत्र-नारा दुवाकाल,
इत सुव के गुलम संताता
पावन कह रहे । वह तो हैः
वह विश्व नीड़ वन गावा।

इस वरा जाता प्रतार एक उदास कव्य नृत्य है जो प्रतारेप्याना से विश्व न
लोकर मुक्त को किलाव पुन्यसूरतिमें बुझा करता है।

प्रेम:

प्रेम एक सामाजिक मुक्त की है और विश्व प्रेम में जन्मने को परिवर्तित
कर उदास का प्रतार करता है। दिखा देवी की काव्य में प्रेम का कब्जा निपुण
हुआ है, पर वह जरी स्फुर्ता फिर है। त्रयावादी काव्य में प्रेम की युक्तात का
भाव दयात्मक का ज्ञात स्थित निपुण नहीं है। दिखा देवी उप में प्रेम की युक्ता के विश्व में
बी नाना निपुण है, कहीं उस उप गुरु कृत्वों की नीति-प्रतिति की आरण है है और
इस वर की वनकर वाहा। रामचरित त्रिपाठी रथ मन्दिरी भावना दुर्ग देवी काव्य,
प्रासादे की उप उप में प्रेम की प्रतार करते हुए पी। उसी का चार्य में किला रहै है।
प्रेम का स्वाभाविक त्रयावादी काव्य में पहली स्वर उदास रूप में विनिक्रिय हुआ। का
रामचरित त्रिपाठी प्रेम को नाना की एक वारंबर वस्तु कहते हैं, त्रयावाद का काव्य

------------------------

२. अनामिका, पृष्ठ ६६।
२. कानावनी, पृष्ठ ३०२।
(१६४)

प्रेम की बान्धवाचित रूपक रूप ने करता है:

यह जानकी रीति है क्या प्रेम की,

जो अंगों से जोकर है देखता,

हूँ लौटते और बूढ़ता है, तथा

बराबर पीठ फुटता है पर बैठा। ६

प्रेम का स्वयम् वायावाद में पावन बन गया है:

तुम्हारे छूे जो द्रा प्राण

कर में पावन गंगा बाना,

तुम्हारे कठरी बाणिग्रा कल्याणा

कविकण्ठ की ढाटा का गान। ३

प्रेम सभी पापाभार न रहकर पावनता का प्रविश काव्य के छत्र वन गया है:

कभी वांग का तक पावन प्रेम

नहि सहाया पापाभार

हुए कुछ ही मनारा वात

हाय क्या गंगाजल की घार।। ३

प्रेम दीवन की भिद्धा है। प्रेम की इस भिद्धा है का दीवन हरा परा जाता है,

काव्य ने इसमें ही जनन की उकाचा देखी है?

इसकी भिद्धा है पुरा प्रेम

बारे तर जीव तर विश्राम प्राण।

दीवन का फूल, दीवन का फूल,

स्वरुप रह लो, हो जनन उकाच।। ४

------------------------------------------------------------------

६. प्रेम ( दू- कंप ) पृ १०३।

२. पश्चाय, पृ ७६।

३. पश्चाय, पृ ७०।

४. युगान्त, पृ ९०।
इस युग की कादंबर में दामोदर गुप्ते की इमारत फूसकर प्रसंगुत करती पूविकाया न था
प्रेम स्नेह का क्वान्तरान रिलाउँ,
नवन ना का नवना है गाँवित प्रेम सम्मानण
स्नेहों का नव स्नेहों पर प्रेमव्रत्सन- रिलाउँ।

प्रेम का एक करण रिलाउँ हुआ है। जो तक काम्या है। वह किस लक्ष्य पर नहीं?
स्नेह ग्रीव जेल्ला है:
वर्गित ला अड़क झाके में
हरण और झूके में
कबार नहीं है स्नेह । दश्या का चक्कर उर में।

यही स्नेह है इस मुद्रण जीवन लंबा हुआ है, यही ज्वर जीवन में गुंजा है। और
उसी न होने से तन झुक नहीं हैं:
बरें है जीवन वार,
षण में भिंडी। हुई है यह संक्रार !
हो जावा संज्ञाय।

नहीं तो दारुण ना लावार।

यही प्रेम-स्नेह सबकी वांकला हुआ अपने ज्वर झुल्ल ही रहता है -

प्रेम वचन ही दुन झुल्ल हो
उर-उर के हारों के हार,
मुखे हुर प्राणिवार के पी
मुखे न करी सन्देह ही चार।

-------------------------------------------------------
6. अनार्किका, पृ 1155.
2. पल्लव, पृ 58.
3. कविक, पृ 50.
4. कवि, पृ 50.

उद्धी प्रेम का एक क्षण में तुम्हारे स्वयं का रंग चढ़ गई। उद्धी का ही तुम्हारे हुक काम है। काम ने निर्मन नहीं किया था। काम उसके विषय में निर्माण नहीं किया था। अतः उसका अवधार त्रिभुज नहीं।

कान - पाँच से नेत्र । चेहरे
आँख, उबश्चा कर है पारम्परिक ।
विश्लेषण कर उसके हुक तुज
बनाये हों काफ़ी प्रवास।

नानक्का - मुरुण्डा की संख्या:

निर्मीत उत्पाद भूल से बनते वर्गों के नानकावारी नावना स्वतंत्र उत्पाद
या श्रायावार शिल्‍य प्रूढ़ित भर गया। निर्मीत तुम की कार्यावादों में कामयाबीं
ने पृथक एवं हुकुम करने है प्रति उत्पादक ब्यवस्था की है, परन्तु स्वतंत्र उत्पाद की
कार्यावाद में मुरुण्डा कीविशेष विवक्षण करने का प्रयास नहीं।

अर्थात् यह चौथे वर्ग
पदार्थ की कार्यावाद की प्रूढ़ित में श्रायावारी कार्यावाद एवं नये विधिवादिक बौद्ध
विश्लेष्न, एक विधिवादिक मानववाद की नैतिक प्रमाण के रूप में स्वीकृत कर कार्यावाद
को उसका कार्यकलाप और नैतिक बौद्ध में विधिवादिक कार्यावाद का एक स्वीकार
नया प्रयास है।

नानक की संख्या का गान काव्य इतिहास तहत गाता है।

नानक कद उद्धी स्वाखेल स्वाखेल
वह न देखा नेत्र राज रण
देखाये है तुजे न काम
नानक का परिकल्पण प्रवान।

मुरुण्डा की कार्यकलाप का प्रवाह भी काव्य ने गाया है:

निर्मीत उत्पाद या बनते वर्गों के नानकावारी नावना स्वतंत्र उत्पाद
या श्रायावार शिल्‍य प्रूढ़ित भर गया। निर्मीत तुम की कार्यावादों में कामयाबीं

2. कानान, पृ. ३३।
2. शुक्राप्रेम, पृ. ४४।
2. कानान, पृ. ५४।
(१९६५)

चुन्द्र है विला, चुन्द्र चुन्द्र,
नागन। तुम खिलाउ हल्दरजन,
निरांकू नचि खिड़कु हुमआ दे।
तुम निरकृत पुरुष हैं तब निरकृत ॥३

पूर्ण वधाम की हुआ आँठ तहां हुआ है तबापि पूर्ण है। छप मे तव को वह मिष्य लाता है, पूर्णस्वर तव को पुराक है दी कड़ी नाकता हैः

रत्न दारम का जीव, रत्न दारम
हुआ आँठ है दारम, दारम,
पूर्णस्वर हुमी पुरुष है
निरकृत पुरुष हैं ॥३

उच्चकवि की नामवां नारायण की सेवा उसे मिष्य आती है। भिखुकू, धीरजनरू के प्रति करणा का नाम उपजा बाता है। भिखुकू कवि की बायांण का सर्दान प्राप्त नहीं कर हुआ था, आ वह काव्य का विषय लत बाता हैः

जहाँ बाता -
यह इत कथाओं के करता पहाड़ी
पथ पर आता
पैट पीठ धीरजनरू मिरकर है एक
त्वर रत्न रुकी देवी,
पुलटी पर दारी को -वृत्त पिटाने को
पुराकटी पुरुषिनी फरोड़ी को कैदा आँदा
पथ पर बाता ॥३

इत स्वयम नारायण परम्परा है त्वारामों है अभी एवं क्षण धीरजनरू, उसी के स्थान पर इत्युत्तरी का प्रतिपादन कवि करते हैं। कवि की बायांण में निरकृत पुरुष और शीतलिता-की दास्ता हैः

------------------------------------------------------------------------

१. युगान्त, जो ५४।
२. युगान्तिरी, जो ५५।
३. परिनव: जो ६२।
वह हस्तदेव के पान्तर की पुजा की है,
वह दीपरखिला की आन्त, वसाव में छीन
वह 'दूर कालाग्रंथ' की स्मृति रेखा-ही,
वह दूसरे तरफ़ की हटी उत्तम-की दीन।

वर्णप्रमाण ब्राह्मणवादी काव्य ने भी निवास केवल हस्तदेव के पान्तर की पुजा-की कहाँ
का खाली रिया और विकास का गारीव की।

अँगुली की रचितिय पर कविता का 'दूर' विकाल हो उठता है। ये मुख्य हैं,
परंतु वह रूप में जीने का उनके सन्मान प्राप्त नहीं हुआ है।
उन अँगुली हैं प्रति कविता का 'दूर' विकाल का पान का सुख है। ये कह उठते हैं:

'मेदनाथ सन्दर्भ दुरंत श्याम गई याबी।
इन्हें शुष्क मां कहा वार इनको हिटायावी।
चरा लायामों व राम यही स्वर्ग हैं दुःख हैं।
माई है जमाय लाना, नहीं बागर आँधु हैं।'

अँगुली को परिश्रम की शान्ति के निम्न द्वारा सन्यास की पा कहता दुरंतका कवि की
फूलकी दुःख का परंपराक का है। ये, दुरंत का पीरपंडु मानका के प्रति कार व्यायाम-
प्रति है बन नवीन बीवन दुरंतका की है।

वहात्मा गार्वीहरि का दर्शन और गार्वीहरि के बुद्धि :—

श्रीयापािकु का कविता का काल गार्वीहरि की प्रति कविता का उपमा है।
अक्षुरार्य आन्दोलन है जन बागर और चारे देश में राजनीतिक कान्ता व विकासके
प्रति का का शब्द उठा। उनके व्यक्तिगत गार्वीहरि है।
उनका पारिश्रमिक राजनीति में प्रेक्षा अन्य है—कारण उनके पुरुष राजनीतिक हस्ताक्षर का
प्रभाव जमकी वातावरण के, उश-इलाके हैं। जब संत राजनीतिक की जाप्ले है ये कह रखाई।

1. परिमल, पृ १६६।
2. लाल के उल्लेखित हिंदी कविता: रामकृष्णन कांग्र, यो रामचंदरणी काल्पन, पृ ७७६।
गार्गीकी ने राक्तवीर से नैतिकता और दर्शन का समनवधि कहसे नैतिक मुद्य का स्थापना रचता। उन्होंने निर्देशात्मक की जीवन कहसे रुप में नामांक वे उनका प्रभाव मार्गदेशी प्राप्त होता है। उनके द्वारा वनस, लापी और हुदौर उपयोग के प्राप्त अन्य समय के द्वारा परिवर्तक मुद्य के तीन बायाँवर उत्पन्न करना। उनके द्वारा प्रायाप्त एकाक्षेत्र मुद्य नैतिकता की एक आच्छादन निर्मिति का उद्देश्य में वायुक हुए। उनने प्रतिवेदन है: सत्य, धार्मिक, दातैय, कार्यित्व, भवन, स्वरूप, बुद्धिज्ञ का लम्बा यादि। ब्राह्मणादि करक्षण में गार्गीकी है जो केवल हुए प्रमाण मुद्य का निर्मित हुआ है।

सत्य:

गार्गीकी ने दिख सत्य की जीवन का समनवधि अर्थ है। सत्य उनमें जिस सत्यवृत्त है। सत्य जीवनों और इसके अन्य सत्य है। उनका सत्य स्थान पर आरंभित है, सत्य पर आवर्त नहीं। सत्य की पहला तनाम मुद्य है, सत्य जीवित के बड़े है। धार्मिक, ध्यानमय, भवन, सत्य जीवित नैतिक मुद्य है किस सत्य स्वतंत्र आच्छादन मुद्य है, सत्य का प्रतिबन्ध, कृतित्व की जीवन के दृश्य मुद्य धार्मिक मुद्य के निर्मित बाह्य है।

धार्मिक:

वीर्य पद वह प्रमाण यह मुद्य पारस्त की संक्षिप्त का एक पहलेपर्षार है। धार्मिक जो श्रेय चर्चा है और जीवन श्रेय नैतिकता है। इसके और सत्य को समनवधि और प्राप्त करने के लिए केवल अनेक श्रेयों में उन केवल एवं नहीं। केवल दृष्टि श्रेय स्वरूप की बड़ी बाह्य है। वे मेरे-मेरे श्रेय मिलाता है और ध्यान की पदार्थ और परिवर्तन के और सत्यवृत्त। इसके सत्य के केवल जीवन कृति तथा वे बाह्य है जोकर दृष्टि सत्यवृत्त। इसके सत्य के केवल है।

शास्त्रीय समाचार में महात्मा गार्गी का वर्णन, पृथ्वी.
(१३२)

नास्ताप्रचन्द के समान एक्षण इन्हों ने बल्लों का स्पन अज्ञात रखा है। और 
बल्लों पर तात्साहित्य: की वांछित सत्य भी उनकी दीयन में सुनित: हुई है यह उनकी 
फलाशन है। बल्लों का तर्क होता है: किसी प्राणी को कृपया नहीं पहुँचाना या किसी के प्राण को नहीं खोलना। बौद्ध बप्पिकारों ने उसे तीन गुणकार वहाने 
हुए कहा है: सबी परिवर्तिताओं में सबी प्राणियों के मत पक्ष, धारा, कर्मणा 
रहित का-कर्मणं करन् - युग्मं त्याग। गार्थीवी ने वह समृति है क्या जानाय 
गया मर्यादा - मौन है कियो प्रस बर्त की अवकृत, ज्ञान की पक्ष को भी 
नारों की अनुपव तात्त्वी को नहीं त्योहारत है। उनका उपमान को व्यक्तवात्वत है 
रिपण कुल है। गार्थीवी ने पक्ष की एकता जैनावया में खायान्तं के अंकस व्यायम है। 
एक धारा है कि भ्रेमान अविस्मार का उन्मृत्ति क्रियावर न समय नहीं किया तात्त्वक है 
कि बीमान है निकट रकार उन्मृत्ति लावकता का त्योहार किया है। बल्लों 
की तत्त्वी पर्य बर्त कर्तम् किया होता है। बल्लों है बनावतर करणाता और भ्रेम 
है। उल्लभ भ्रेम तर्क करणाता को नारायण देवनंदन आयवरण में उत्तरार्थन का 
रिपण प्रायोगिकिया वायेक, बल्लों को जालगाण करते में एकत्ता भ्रेमरी। 
बल्लों को उनाना दर्दिक रहता है कि रिपण कुर एवं बालुरी किया है, यह 
रिपण पक्ष नहीं है जा: त्याग है -

क्योंकि रिपण है कुर बालुरी यह किया।
वह, न रिपण पक्ष है, हर्षर अपरापाय है।

पुष्यका की वर्त किरणी देव है आगे एस्ता जोशा है। देवर्खी के नाम पर की नवी पशु- 
वर्त कर्त्त कर्त्ते। पुष्यका के अपने उत्पाद के वर्त ही है। भ्रेम का पुष्य पर अत्य वर्त 
की बल्लों विषयायुक्त है वर्तवायु का परिवर्जन है:

और किसी की रंग कांट बनानी।
किसी देव के नारे।

--------------------------------------------------------------------------------

9. कर्थकर प्रायाय: कर्थवर्तमान, पृ ६।
किना चाहा ! उसी वो कथा
अपना ही दुब पाते।
छिंड़ पट्टों के सामने हस्तों का उपयोग तकरायाँ हैं, पर्वत किना कोई कारण निरीक्ष
दिवाँ को हन क्यों गारे? शरद का पुत्र वो कथा किना उपयुक्त है:
पर को निरीक्ष बीकर भी कुछ
उपलब्धि। जोने में सप्तरी;
वे चर्चा न रिखेर उपयोगी वह,
उल्लका में लक्ष सही न करे।
पल्लों के कथा विदुष्यान का वास्तवण होता है, उनके उतन से पी कपड़े बनते हैं, उनके कुछ-देखे पुल को देख की पुनर्नव होती है तां उनके वसारा क्षेत्र का?
वे मोह करने के स्वभाव हैं
वो साजे वा अक्षे रहें;
पल्ले दे यदि हम हुक दंग-दंगे हैं
तो नव-उठ निच्छ में बने रहें
इस तरह क्रांति प्रसारणी ने मनुष्य जन्म की वास्तवता मनव-उठ निच्छ में हेतु बनने के
क़रीब हो।

बालिका का एक उपन्यास पत्ता गांवीकी की विकार धारा में प्रकट होता है। गांवीवाद या गांवी-कीकर की काव्या में वियागरां धारा गुरु ने बालिकाद कर उतारते में वसारा पार्वती है। गांवीवाद के विषय में सांख्य फिक्स है:

गांवीवाद बल में बाग्य तौर मानवता का नव नम
घन्य बालिका वे मनुष्यता कम सरकार करने तमाम।

-----------------------------------------------
1. कामायणी, पृ. २२२।
2. वही, पृ. २२५।
3. वही, पृ. २२६।
गाँधीवाद जी में दीन पर देवता अन्तःर विश्वासहृ.
पानव की निषेधित शक्ति का प्रभुत्व उकसे फूल आमास ।
वर्तमा का बन्ध गाँधीवादी पुलवों के साथ गहरा धर्मन्य है । जलाई - जीवों न
करना शेष ऊला ज्यस है । गांधीवादी के पृथ है जीवों करना बौद्धिक कपाल है ।
वह वर्तमा का विज्ञाप है । अवश्यक जलाई का गुल गलतपूर्ण है ।

करोड़ग्रह - लंघ मे होना - तत्काल कि दस्तार में गुल विश्वास
रतने वाले वर्तमा लंघ मे होना नहीं करते वाले श्रद्धा के साथ परिस्थित का कार्य नहीं चुन सकता।
शरीर की परिस्थित में मानव-सेवा के बारे ही मुन्य वर्तमा की नशी गति कर
अर्थ है । जवर्तमा सत्ता के अनुरुढ़ आवश्यक करता है । मुन्य जेबा की ज्ञात शक्ति की
विनाशक है । अवश्यक का विधान न परिस्थित के विश्व विश्व कहते है ।
वेदी ही जवर्तमा का शक्ति जो उपराज्य बारा मानव-सेवा की उपयोग है ऐसा निष्ठा
है । मुन्य जवर्तमा के मुलम का हमने बारे विवरण किया है । जो पूरा गांधीवादी
मुलम है ।

उन या स्वाभाविक

गांधी दलन में अपने आपने बारा निकले जीवन में ताद जन का मुल महत्वपूर्ण
पाना है । वहाँ प्रक्रिया है िं जो गुरू के बारे ही जन की मुलम की प्रतिष्ठा की है । भावभाव एक जीवन में जन का मुलम स्वाभाविक गया है । गांधीवादी में जन का मुलम वैस्यकरण गया है । गांधीवादी ने रसन के द्वी गांधीवादी ने द्वी गांधीवादी ने द्वी गांधीवादी ने द्वी गांधीवादी ने द्वी गांधीवादी ने द्वी गांधीवादी ने द्वी गांधीवादी ने द्वी गांधीवादी ने द्वी गांधीवादी ने द्वी गांधीवादी ने द्वी गांधीवादी ने द्वी गांधीवादी ने द्वी

---

६, गुरुशारणी, गृह ४६.
उत्पादन में बुद्धि उसकी बाहरी आपूर्वकाल अध्ययन है, परन्तु हर एक कार्य करने हार्षी दे करने में कोई अर्थ नहीं है, इसमें उसकी प्रभाविता है। निवास में लोहे चंद्र के पर
ध्यान आकृति करते हुए जीवार्दी ने कहा है, वो लोहे चंद्र के बिना कहता है, वह बौद्ध है। जीवार्दी जीवार्दी के अन्दरराज का नाम को नगर्द्वारण नामक चार नामक है की जीवार्दी जीवार्दी के अन्दर का कार्य करते हुए उसकी कहाँ वे जीत करने की अपेक्षा एक नामक जीवन स्थापत्य करती है। जीवार्दी जीवार्दी के कार्य के रूप का गुलाब होता है, तरंग का गुलाब जीवार्दी का उद्देश्य है। नमक के गुलाब जीवार्दी का प्रारंभ तत्त्व है नमक के गुलाब का प्रारंभ तत्त्व कहता है।

लोहे बाँसक बाँसक, बाँसक, बाँसक,
नवन समाप्त शुद्धिक लाख शुद्धिक।
विर नामक नामक, नवन नामक नामक है नामक
जीवन का आखरी- प्रारंभ अन्त के प्रारंभित।

अन्त का यह पावन स्वतम स्तुत्य है।
अन्त अन्त के कर्मद पार्श्व खेती है तो दुर्गारी जीर दुर्गारी, क्लाइंट, दुर्गारी,
बड़ी, बड़ी बांसक की बांसक है।
अन्त के बांसक का नवनिवारण अर्थ्वार्दी जीवा अपने कार्य का दृष्टि उपयोग
अन्त कार्य में जीवार्दी में उद्धत नानक है। जीवा जीवा जीवा रहने वे हुआ नामक में
प्रारंभ होना क्षण मानती है, वह रूप उत्तर है:

में जीवा जीवा हूँ तकरी है
प्रतिकार में स्वर-क्ष्यार
क्षत्री तकरी चीरें-चीरें
भ्रष्ट नये बैठे नी में जीएर।

-----------------------------------------------
1. मुंकर्मी, पु. ५५३.
2. कामालिनी, पु. १६२.
(२७६)

अब भी श्रीकृष्ण में सवार बसता है, उसमें गायकवाद का प्रभाव भी है। स्वप्न स्वीकारता होगा। इस वर्ष प्रकाशक ने भी कामायनी में गायकवाद की अपनी अदा समर्पित की है। अब भी हार्दिक तक होती (श्रीकृष्ण का सार्थक स्वाभाविक) और हार्दिक हैं वांछित (समर्थन के प्रति मज़दूर वौरा का अह्मत) स्वागत कर उसी गायकीय ने गरिया दे दी है।

नारी मानता या नारी विचयक दृष्टिकोणः

दिवेदी। युग में हुने देखा था कि उपेक्षिता नारीवादक हैं प्रति व्रतादोष-पूर्ण दृष्टिकोण का यथार्थ वातावरण का पाठ्य से मान्य है लाकर करने का कार्य देखकी शरण गुप्त ने किया। ग्यायिकाव्य उपाय नवे मे पीया राजा के विश्वास के अनुसार बस्तांकन पर एक नया बाल्य पूर्वाधिकार किया। दलौप में दिवेदी युग में नारी विचयक भागृथा का प्रमाण उपरोक्त बाल्य का रहा। भावावज की निर्मिता बुद्धि व्यक्ति स्वाभाविक की कंकाल है किसी दूसरे शाक्तिक सुवार्थों के विरुद्ध बहुत कठिन कदम उठाया। शारणी उत्सुकताओं का निरेश करते हुए उन्हीं नारी को पुजा की और शारणी वान्धक की गति है उनके लक्षणिक बान्धव बनकर। भावावज का भूमि नारी ने नारी की कस्माने के पंख और शायदना के पंख में स्क्रिन उठाकर देवी और वहींकी दृष्ट धर्म धारण पर प्रविष्ट किया। वर्तमान काल निर्‌त्विक वाग्मी ने नारी का विश्वास उत्सुक कोण में सुनाता दी विभव। नारी के लक्ष्य अयोग्य बौद्ध का मानते हैं। नारी के प्रति दिवेदी युग में भविष्यन मानना अस्त करने में रहकर की, उनसे उन्मुक्ता दी दी। भावावज का वैच उठाया:

-------------------------------------------------------------

6. गौरवत्सली हिंदी : युग और साहित्य, पृष्ठ २८१।
7. यूनिवर्सल साहित्य की प्रभुत्व, पृष्ठ ५५। हाय मानव युग:
स्नेहवच। सून्दरवा मध्य। 
हृद्धारे रौंच रोन हे, नागर। 
चुके हे चलह बार; 
हृद्धारा पुंडु उर ही, बुंडगर। 
चुके हे स्नागार। ६

वैर पि। नारी ने बने स्वप्नरूप मे दर्शन में काव्य ने स्नामकं व्रह मे कहा किया प्रकट की ख़ा:

हृद्धारी देवा मे कस्यां 
हृद्ध हे परा कम्यान; 
देव्र ! मा सयारी, प्राण। १

वैस नारी की वर्ती अवस्था तवा उठका बाँधनी। स्वप्न साध को स्वप्न हो उठा 
हे इत्याच उसकी पुकियत की कामना यह करता है ख़ा:

मुक्त करू नारी नहीं, नासव 
रवि बाँधती नारी को। 
हृद्ध शुक्ल की बंधे कारा हो 
बन्धन, हली, ज्यारी को। ३

नारी की महिमा तां उल्लोहित है ख़ा, वही काव्य के सन्दर्भ में उपासित का पयार 
वजन्य है ख़ा:

नित्य यािँस = क्रौं हे खी कीप्त 
फिक्त की कहरण कामना-पुकियत, 
स्पष्ट हे आकर्षण हे भुना। 
प्रकट करती। उच्च बड़ू ने स्नामकं। ४

-------------------------------------------------------------------------------------
६. पण्ड, पूर्ण ६६३।
२. वरी  पूर्ण ५६३।
१. उपासित, पूर्ण ५५८।
४. कामायनी, पूर्ण ५७।
नारी का आचरण की प्रौढ़ता की विद्या

हृदय की अनुभूति बाह का उदार। हां जान्माध्यम गुणों की चरण है।

प्रमाण है वह वह मृत्यु के रूप में समस्या की प्रतिज्ञा - अपरापाठ की प्रतिज्ञा कर तारी है।

नारी नाम- पत्र का बनता,
वह प्रतिवर्ती ज्यादा ही विनय
रंगर कौन पत्र का रंग निखड़
भवकर यह पत्र के रंग पुकार। २।

तानी नारी के अभ्रक के संबंध का एक कड़ कितनी आवाजाधी। काव्य ने बीन्स है।

वह नव वस्त्र की फिसोह, कौन पड़ जाता,
किसी आबंध के बाहर में मुहर्जिता
किसी अंधरा
ज्यादा क्या आरंभ की शान की रफ्तार है
तानी है मुहर्जित की रात्मी। ३।

नारायण से तख्त में युग परिवर्तन की भांति बच्चे दे और उनका सम्बन्ध
पुन: स्थापना महर्षियों की स्थापना लो, ऐसी नामान्य काव्य व्यास करते हैं।

कुछ कथाओं से यह स्पष्ट है।
परा दक्ष हो, है कहराबाह जी।
चीता चटियाँ देखियाँ से हो
पुन: अश्लील पत्र में देख। ४।

काव्य सुवर्ण की दृष्टि से आवाजाधी काव्य:

---------------------------

२. कामायणी, पृ ५६।
२. वही, पृ ७४।
२. परमात, पृ १२३।
४. श्री रावत्रथ श्रीवास्तव: बान के आरंभ रिहर्मी काव्य- राकुमार कवार, पृ १३।
(१६४)

श्रायाबारी काव्य का नामकरण जिला वलिकारी रहा, उतना ही उसका कलाम संग ही रहा। विंचि श्रायाबारी काव्य का वैभव कलपनासृष्टि ध्यान से बाह्यतः वाक्य निर्माण करने की बोधक काव्य अनुसंधान प्ररूपित में रूप गवा, अंतः वस्तु पर्यय या आवश्यक-अत्यन्त काव्य की बोधक नितांतता सुलभ काव्य की प्ररूपि बदल गयी है। प्रमुख विषय सर्थकताओं में उसकी काव्या रचार्थनिर्माण प्रयत्न है। इस व्यक्ति के अनुसार सर्थक काव्य में अंतर्गत तथा विषयवस्तु दोनों का केंद्र संचालन हुआ। राहस्यवादी प्रतीति के सौंदर्य रचनाओं वे इस कारण होती रहे। साथ में प्रणालिका की काव्या उस कारण में संरचना वधक है। राहस्यवाद के प्रणाल में कारण प्रणालिका की काव्य-अत्यन्त बाध्यता हुई। एक कारण वाले आसारों में उद्धृत या वाचन है क्योंकि वाक्यात्मक कारण है, वह है श्रायाबारी काव्यका रूप में वाचन या वाचन या वाचन है। वाचन है श्रायाबारी कविता की रागस्तर्कार। विशेषतः श्रायाबारी कविता के वाचन के सब रागस्तर्कार के रूप में श्रायाबारी कविता रागस्तर्क। श्रायाबारी कवियों ने इसके बहुत वक्तव्यों का उपयोग करके अपने सीमा में कभी इस्तेमाल की वास्तविकता की। इस प्रकार में श्रायाबारी का अनाज वस्तु के रूप में काव्य कारण बन गया या उसकी लघुत्व श्रायाबारी की जरूर। इस प्रकार का अनाज श्रायाबारी के अन्वेषण निर्देशन स्वरूप मिला है। काव्य का प्रणाल में इस दुःह की कविता आप चुनेंगे। उस दुःह की कविता कल्पना से कानन की रागनी बन गयी है। साथ में कोई अर्थव्यपी पुष्टक से दुःख रचनाओं नहीं पहुंचा है लिख प्रसिद्ध बनी है।

साथ में इस काव्य में रचनात्मक नाती की मूर्ति वूफ्रेंट है। धीरे-धीरे का पन उन रचनात्मक नाती - अनुवादियों जो रचना जन्म बन आता है। श्रायाबारी कविता में उद्धवत, आपूर्ण की वांछन, प्रहर-विचार, बोधी रचना, प्रकटी की आपूर्ण नागर अनुवादकारिणी का श्रेय एवं अज्ञात अनुवादकारिणी की ज्ञाती की कथा एवं गीतिका की कुछ प्रमुख, पवित्रदीपिकाओं की प्रमुखियाँ, पृ. २५।
के प्रावित अस्यमे प्रधानता के दृष्टि को प्राप्त करने में सफल हुए हैं। उन कर्त्ताओं
को पढ़ने से हम नाच बिहार बन गए हैं। राष्ट्र का कायम सुलभ पाना
गया है, उसकी दृष्टि से बहायाबाद की कर्त्तव्य सफल बनी है। विशेषतः दूर्गार
राष्ट्र की वजहारण श्रेष्ठ एवं अनेकनाथ के विश्वसन स्वाभाव के निर्णय से हुई है। बाहरी
में कर्त्ता ने 'योगिन दूर्गार' की नकार व्याप्ति संभारी राष्ट्र के व्यक्ति की है।
राष्ट्र की अर्कित पुलिया में 'पीर' राष्ट्र की एक मंदिरान्वत ठुंडा करायी गई है,
तेजस्वी सम्प्रदाय में 'पीर' के निवास के पश्चात उसकी व्यक्ति में व्यक्त कर्त्ता
के उद्यार प्रणाम राष्ट्र के ठहरिया। महादेवी का पुरा कायम अक्ष ग्रामान्त्रे से विक्रय
का और उसकी प्राप्ति का प्रचार है। अपने दूर राष्ट्र में उन कर्त्ताओं ने सीमी
बाहे वह मानवीय हो या आयुक्तव हो, तीन या आदरण का कौशल या राज्य गुरुत्व
का हो, स्थान हो या प्रदेश सीमीन्द्र का न हो, उसकी उपायन्त्र के उद्यार पारस
प्रयत्न किया। कर्त्ता का प्रमोदन कहीं पहले उपरोक्त, तुमारा, अर्क और जन
का व्याप्ति राष्ट्र होगा, तवा बहायाबाद ने दुः कर्त्ता है उपाय कर्त्ता की दृष्टि
प्रणाम की। सीमीन्द्र ने वह चेतना का उपाय कर्त्ता कररेजा, बिषम। बाबू पुंजार
पुँजार पर बाहर पाकिने वह दुःखी रे में जिंदा और सीमीन्द्र की प्राप्ति की प्राप्ति की
ज्ञान की तारा एक कायम
पुर्ण है तव उसकी असलयता एवं प्राप्ति राष्ट्र हैं बहायाबाद कर्त्ता में होती है।

उक्त फौज द्वारा ही बहायाबादी कर्त्ता कार्य करने को की पूर्ण नहीं हुआ। मानवीय
के प्राप्ति उक्त व्यक्ति आख्या है। उक्त उपरोक्त युग जन के प्राप्ति उक्ते एक की आर्थनी
वैश्वत की है। उसकी हुई यह दृष्टि कर्त्ता व्यक्ति बनता है और उसके हुई यह राष्ट्र के दर
करने की वह कार्य करता है। बहायाबाद के उपरोक्त में पंचायत, देशात्मा में मनुष्य
के प्राप्ति व्याप्ति का स्वतार बदला गया है।

निक्षेपणे:

बहायाबाद युग या दृष्टि उपरोक्त की कर्त्ता जन-सम्युक्ति द्वारा बने
का और अविनाशीपन दै युग बन जाने का भी दौरा निर्माण पर औपचारिक उत्सवों दैः है। इस कारण समाधिकी की स्वरुपत बालक का रंग दिखाया गया है। यह निशान दिखाया है

पर्णीप्रेम में कार्य के दृष्टिकोण में पुस्पकर्ष का आराधना करने के लिए भाग लेने का सम्बन्ध है। राष्ट्रीयता के लिए उन्नत स्तर विश्व की भाषा वे युग की कारक्षण में भी आये हैं। दीक्षित स्तर तक पुनःबिस्कारः पारंपरियता का निष्ठूल करने का कारण का दावेदार परिप्रेक्ष्य में दृष्टिकोण ने पुस्पकर्ष का आराधना में एक कर देने का सम्बन्ध किया है। राष्ट्रीयता के लिए उन्नत स्तर विश्व की भाषा वे युग की कारक्षण में भी आये हैं। दीक्षित स्तर तक पुनःबिस्कारः पारंपरियता का दावेदार परिप्रेक्ष्य में दृष्टिकोण ने पुस्पकर्ष का आराधना में एक कर देने का सम्बन्ध किया है। राष्ट्रीयता के लिए उन्नत स्तर विश्व की भाषा वे युग की कारक्षण में भी आये हैं। दीक्षित स्तर तक पुनःबिस्कारः पारंपरियता का दावेदार परिप्रेक्ष्य में दृष्टिकोण ने पुस्पकर्ष का आराधना में एक कर देने का सम्बन्ध किया है। राष्ट्रीयता के लिए उन्नत स्तर विश्व की भाषा वे युग की कारक्षण में भी आये हैं। दीक्षित स्तर तक पुनःबिस्कारः पारंपरियता का दावेदार परिप्रेक्ष्य में दृष्टिकोण ने पुस्पकर्ष का आराधना में एक कर देने का सम्बन्ध किया है।

अभीष्टक शैक्षणिक प्रतिष्ठान व्याख्यातादायि कारक्षण के नवीनताओं के भी लाभ बनी। इसके साथ वे क्रियाओं में भांतिक का संबंध किया। दीक्षित से यानी इस युग की कारक्षण में महानायकता और दीक्षित से वर्तमानी कार्रवाई से भी विरुद्ध करने की गई। यह नया रूप उठाया है कि पारंपरिक प्रमाण के नहीं युग की कारक्षण में आदर के लिए स्वीकार के रूप में युग की ज्ञात शैक्षणिक व्यवस्था का आराधनार्थ हुआ। यह नया रूप उठाया है कि पारंपरिक प्रमाण के नहीं युग की कारक्षण में आदर के लिए स्वीकार के रूप में युग की ज्ञात शैक्षणिक व्यवस्था का आराधनार्थ हुआ। यह नया रूप उठाया है कि पारंपरिक प्रमाण के नहीं युग की कारक्षण में आदर के लिए स्वीकार के रूप में युग की ज्ञात शैक्षणिक व्यवस्था का आराधनार्थ हुआ।

इस युग की कारक्षण में व्याख्यान रूप समर्पण देश, अर्थात, निवास, निजी, सांवला, वाणिज्य, प्रेम, सांवला की भाषा, गद्दीवासी दृष्टि-स्तर विश्वास, संसद, सांवला, वाणिज्य, और नयी पारंपरिक से विद्युत्स्फोटण युग मध्युमेश्वर का आराध्य किया। ये मुलायम दैः पारंपरिक वाणिज्य के विद्युत्स्फोटण युग मध्युमेश्वर का आराध्य किया। ये मुलायम दैः पारंपरिक वाणिज्य के विद्युत्स्फोटण युग मध्युमेश्वर का आराध्य किया। ये मुलायम दैः पारंपरिक वाणिज्य के विद्युत्स्फोटण युग मध्युमेश्वर का आराध्य किया। ये मुलायम दैः पारंपरिक वाणिज्य के विद्युत्स्फोटण युग मध्युमेश्वर का आराध्य किया। ये मुलायम दैः पारंपरिक वाणिज्य के विद्युत्स्फोटण युग मध्युमेश्वर का आराध्य किया।
वफ़ादा पायी। बुड़ गये हमने वन्दे गुलाब करेंगी नारी की मानस, जननी, तबही, प्यारी कोर की उद्विवल बनाने तुमकी की कामना की परिवारक है। 

प्रेम हैः प्रति एक वसंता नवीन दुर्दृष्टिकृति इत्यादि यज्ञक पुजया। वायवादी कार्यवादी ने स्वरूप वाणिज्य वापस पर्यावरण करते हवन कार्यवाद ने उसके नयाप्रियां रंजित निर्माण किये। इत्यादि चारामें नांदीन्य तान का नी हुआ। सर्वं नामकीय दृष्टि है रंजन कहता हुआ कहते, मृत्युपक अनुभवों की उद्देश्य अविवलित है फिर श्रुत उठता। विषय ग्राम अङ्ग में वह विविध ग्राम अङ्ग की भोर हुआ। वाणिज्य का शेष काल का जो ग्रामक बुड़ की तरीके में उन्हीं हुए गांव की तववाह करते जा। वह उत्तम में कार्य-कसर थी, जीत जन्म के प्रति वहाँगुरु व्यक्त कर उसने पानव गुलाब की प्रतिष्ठा की।

वायुसिक कार्यवाद:

शायवाण ने उच्चार्च में पार्श्व के प्रभाव में कार्यवाद एक बज्र तोड़ पाकर बनने लगी है वह बुड़हरी और व्यवस्था की जीवन में रस्ते प्रति वह वह है। शायवाणी अन्तिम का व्यवस्था विकाल्य उपज्य तथा पी.व.क. फिरक कर हुए जाता है, परन्तु विरुध्ध: वह व्यक्ति-सा रखता है, उस कार्य की परिस्थितियों के कारण कार्य का अर्थ सभ्य व्यक्ति होता नहीं विवाद। एक वात और प्रति वह है, शायवाण का युद्ध वाह कार्य के व्यवस्था के अल्पकाल और विश्व दृष्टि है उन्मैया का कार्य है। वहीं उसका उत्पाद उसके संबंध और हीनास्वर होने का सत्तालास है। इसी शायवाण के उच्चार्च में कोरे प्रति के वारंभिक तथा पार्श्विक प्रभावों के कारण व्यक्ति

2. डा. रामदर्श भियादी: हिंदी वाणिज्य का उत्तरार्थ, पृष्ठ ४२२.
अपने प्रति वाक्य बांगला होने लगा। उत्तर आत्म में आत्म गृहक्षण और अत्म-विवाह की स्मारिक पढ़नी नहीं सी। और यह प्राकृतिक तथा वार्ता स्वरूप वाक्यों के आवश्यक स्थान का वाक्य बांगला ना-विवाह के प्रति शुद्ध वेट में अन्वेषित करने लगा। ३। वैज्ञानिक वाक्यात्मक वाक्यों की कार्यात्मक पर्याप्तता नहीं है, हमारे संशोधनों का प्रति प्रश्न बांटना नहीं किया, परन्तु मिला, रिख्यातियों को फेंक दिया है, उनका अभिव्यक्ति हूँ अनुप्रस्तृत किया। यह वैज्ञानिक वाक्यों का ऐसी वैज्ञानिक और प्रश्नार्थक से कारण, वैज्ञानिक वाक्य के निम्न है।

(अ) विभागन

---------------

इस कार्यात्मक के विभागन के विषय में उल्लेख आया आ रहता है: वह ६२३० के प्रवत्त वार धर्म वाध्य के साधन वह प्रकृति बनी, जिसमें वायु वाचक वाचकर्मक होने के स्थान मिट्टी के विश्लेषण, प्रकृति वाचक वाचकर्मक के स्थान प्रत्याशा तथा गीतिकार्यकृतिवार वाक्य का अप्रस्तृत बनाना बना। उस (वक्त) वक्त को तुरन्त सुनाई पड़े: १। राष्ट्रप्रेम की उद्देश्य वाचकर्मक और २। प्रेमयो अन्य के गीतियों की मुख्य वाचकर्मक है।

नामकरण:

---------------

इस कार्यात्मक का नामकरण डा० कोळ्ड्र ने वैज्ञानिक कार्यात्मक के रूप में किया है। ३। एक अत्यन्त विचार ने उसी कोई नहीं, उसके अध्यात्म पूर्व कार्यात्मक में तुरन्त विचार के उल्टी लिखा है। ४। डा० रामदरस ने इस कार्यात्मक की वैज्ञानिक-विश्लेषकार्यात्मक और वैज्ञानिक गीतिकार्य का कारण प्रस्तुत मानते हैं। ५। कोई विश्लेषक की स्वरूप में उद्देश्य कार्यात्मक के

-----------------------------

१। डा० कोळ्ड्र : वास्तव के वेंकृत, पृ। ५४४.
२। वहीं " " पृ। ५४४.
३। वहीं " " पृ। ५४४.
४। विश्लेषक वाचक : वैज्ञानिक गीत, पृ। ४८-६६।
५। डा० रामदरस ने कोड्र वाचक गीतिकार्य का वैज्ञानिक, पृ। ६६ (प्रश्न ३२० नगीना)
(२५४)

कृत्य करना संवैधानिक होगा। कृत्यात्कर्ष करकर हिंदी कर्कता की प्रमुख काय्य योग नहीं है, परंतु अपनी कृत्यात्कर्ष जैस शायावाद के जानकार से प्रतिनिधि प्रकाश की है।

(ब) प्रमुख (प्रकाश) पृष्ठांशः

शायावादी कर्कता ने श्रेय का प्रकटीकरण २६ ला ते नहीं किया। कृत्यात्कर्ष करकर है कर्कता ने प्रश्न की प्रारंभ रूप में वर्णित करा। उसकी विवरणकी यी प्रकृति न रखा प्रत्यय रूप में हुई। इसी पूर्व भारतीय कर्कता में निकली सामाजिकाँ का प्रकटीकरण प्रत्यय रूप में नहीं हुआ। इस बारे के कर्कता ने अन्य राग विवरण को बुकर प्रकट किया।

'श्रेय' की रूप का विवरण करने पर डॉ नींद्रा ने इस बारे की इक्को समाहारतार इस तरह कहाँ कहाँ है:

1. शायावादक रघुनाथ गौधर के प्रति आकर्ष
2. रघुनाथन्न रघुनाथक का बादश
3. श्रेय की रूप की व्यवस्था का जरूर समझ समझ रही श्रेयान्ति
4. प्रश्न (पत्तन) रघुनाथ विवरण और
5. चि:पन्न करना करना-नहीं पुकार जरूर कहता। २६ इसी पृष्ठांश शंदैः में इस तरह है:

1. इस कर्कता के विवरण मुख: काम और अर्थ ते सामान्य हैं तथापि इस कर्कता में काम के विवरण उपर का प्रकट करा है।
2. अर्थ ते सामान्यतः उपर गृहीता, इसी वैवाहिक समस्त में इस रूप समझ की गयी है।
3. बाहर का शीर्ष में प्रयात्मा देने की प्रमुख व्रत करती बनी। अर्थात् बाहर का बाहर उन की प्रमुख बाहर लगी।

---------------------------------------------

8. डॉ नींद्रा: आधुनिक हिंदी कर्कता की मुख्य प्रमुख - पु० ४७-४८.
(२४५)

4. वह एवं शृङ्ग पालक में नारों की प्रत्यक्ष रूप से ब्रम्हवाचक रूप है जो वर्धणियों में आई वा उदार।

5. वस्तु वस्तु में प्रेम और राणवर्त की प्रमुखता।

वीमक्त रंग प्रसंजोग के स्वभाव रहे, उद राष्ट्रीय वाचकता करता
विषयव बना वैविंशिक कारक में नामव पालतों की विश्वास के विषय में व्याख्या करने के पथवाद ही करते। उद पारा है जन्मात नायक ज्ञात, वा श्रद्धा नायक
व्यक्ति हुमायूं हुमायूं जानने, वीमक्त बांधने, वीमक्त बांधने है। वैविंशिक रंग एवं विवाह अवरण अवरण दुष्प एवं विवाह अवरण रुप की है एवं यह एवं में कार्ता वाणिज्य किया है।

वैविंशिक कारक में नामव-पुल्य:

-----------------------------

नायक श्रद्धा एवं विवाह दुष्प एवं वाणिज्य में नारा में बांधने का परिपालन होता
रहा। हिन्दी वाणिज्य के प्रकाष्ठ कार्यालय में रुढ़िशियाँ को बहुत पावकीय
धर्मार्पण में है शोषण दोनों ने व्रिष्टि उनका परिपालन किया। रीति कार ने अर्थ
एवं कार की प्राप्ति निज। वायवश्यक में यी क्रिया का विषय द्वारा पर वह
रीति कार है। क्रिया का विषय द्वारा पर वह
d्रीति कार वाणिज्य में काम बुझक
वृङ्गारों का बुझ क्रीत करता है।

वाणिज्य का समवेत या वाणिज्य-कार सुल्य

-----------------------------

इसके अनुसार रुढ़िशियाँ ने प्रेम के आदेश को शुच क्रीत करता है।
वायुक्त जैसे क्रियावर्त के लाभ क्रिया के साथ उदाहरण प्रथ की अभाववाचक थी
की गई। जनक की नस्ती, वह वीमक्त, फलक्त-नापत और उदाहरण आदेश पीछे
विषय कहते नहीं।

रुढ़िशिया का तन विद्या का पहाण पर वीमक्त बाेरा परिपाल ना।

-----------------------------

6. वर्णन: पुकारण, २० जून।
प्राण पर नीता, पसली दे नीता डेवा गर्भक जीवन के प्राणेन आपका के विशेष एक नवीन स्वर उठाता है , वह बैठने, सीतावर्य एवं पसली दे के स्वर की मन- व्यविलत-सा ओ हासानवाल की पवित्रिता है उसमें पुलक जीवन नीता की प्रविष्ट इतना छिटे हुए हैं :

प्राण नाम का भननाओऽ का
कौड विया का पी काना
गारूल वुला, जाया कर वे
बल वे भंडारिका का प्यारा।

श्रायावाद के कविता में इस पारे दे कही की योग्यता वैश्विक कविता के कवि ने नवीकर नहीं की है :

इस पार निम्मे नहीं हैं, हम हो।
इस पार न भागने के होना।

उपर्युक्त पंक्तियों द्वारा श्रायावादी भारत के विरोध में का पकड़ी है, क्योंकि उसने वो इस पार बाकी हिंसक वै मिठाएँ का की महत्व है, इस पार की पंक्तियाँ का कोई उल्लेख की नहीं है। इस पार की कविता की कविता में कविमान को भागपति का बाग्रह बनिए हैं।

है आज नरा जीवन तुक में
है आज नरी मैरी मार।
तीर पर किते रंगून वे
आज नरद के निम्नलिखण।

--------------------------------------

6. वचन: गुलामी, पृ ७२।
7. वहीं गुलामी, पृ २०९।
8. वहीं गुलामी, पृ ६५।
(187)

कुछ वैदिक की मान्यता में ब्राह्मण जी के प्राण में किवा फिलिये वाहे सक कवि यावन
के रूप की मान्यता बेखेड़ हुए गए उठते हैं।

यावन की वह पुराण में
है याचन का ही स्थान फिलिये!
रक्षर किश्वर किवा उन्नयन बनाने
है 'याच उहा' वर्षान फिलिये! ६

पौर की मस्ती के अभ्यास प्रणवमयार दांगों की पौराणिक जो तर-हाद वी प्रारंभि
व नैसिकों के वन्मसार की वोड़े पिवा कोई बलता ? कवि पत्ति की कृति उठती हैं :

- उस वर्ग वहा उन्नयन प्रणव
है जोक वालों को ब्रह्मु कुरा ;
उस वर्ग , यहा स्ववर्लक रघुव
हुस-हुस के वन्मक तवड़ बुका ! २

ब्राह्मणविच कवि ज्वला प्रज्ञान रूप से ( उंगरी वक्तर ) दूरार की वर्त्तमानित
कहता है वहा यह वार का कवि प्रारंभि पुल्ल की चारणना कहता हुआ हेतू रूप
में पौर का उपलब्ध करता बलता है :

बारि दीय भरे में किश्वर , इत्तो फिलिया यावन ?
किवा पत्ति की कृति स्कर , एकत बह वह वेदन ? ३

पाराक्रम वस्त्रों में वहाँ पौर का स्वरूप - काम का फ्रेक्ट रूप से पिन्दंपण करी
संस्कारित नहीं बनता , शह वारा ने वर्म ते विविध स्वरूप के स्थान पर पर्यंत ते विभिन्न

---------------------------------------
१. मानव के चणण कार्य , विवस्तुति से पुंजे प्रेम धर्मित, पुढ़ १२३.
२. तकी , पुढ़ ५५६.
३. अंचल- प्रभातक अ. जयसिंहदेव श्रृंग- हिंदी जा. का- वेदसंस्कृत संस्करण २-११६ में
(१८२८)

कान की गाँठ की प्रान्तता फैले तीम वापस पहुंचना है। पुष्पों की तरी ठीक एक नामिता उम्मीद प्रेम के मूर्ख की कल्पना प्रस्तुत करती कह उठती है:

आज न सोने हुईं वाल्लन।
आज नोचन है दीन तुम्हें ग्राम निवास में गर ठुंगी,
मृदुल गरोठ गरोठ बांधाँ में करन आगा में कह ठुंगी।

ऐसा प्रकीर्ण है कि ज्ञानम नामक है विद्वानों का कारण: पाउंने में
करव ने बनाया का अमृत किया है:

यह दुःखिया है, जन चरणों है और वाल्लन ज्ञान ग्राम,
रोघे कौन जग जन्तु में, जब रुक्फा दुर्यशिक फिरे।

वीवन की पहचान या वीवन है गुल्ल की प्रविष्टा:

--------------------

दुःखिया की चर्चाओं के कल्पित हमने काका शाख खालीकार के पन्थम को
बताया था: काका शाख वीवन को एक सब प्राप्तान गुल्ल मानते हैं, अतः वीवन
ही एक गुल्ल का उद्भव स्थान है। दुःखिया की उपेक्षा कर पन्थम वीवन में भावि
कर बहता नहीं है वह प्राप्तान गुल्ल वीवन की उपेक्षा की वाक्य है। वैज्ञानिक कायम
जारा हो काफियाँ ने वीवन है विरास्त के स्थान पर, वीवन की अवध की है, उसके वीवन का हुआ बाहर है, वीवन के प्यार किया है। वीवन की
उन काफियाँ की दृष्टि में गति शेष है, वीवन से जरूरत और रंगफोर्म की
गति है; वीवन के बाहर में गति की कौनी उपस्थित है? अवैतिक गति का दुर्यश नाम
वीवन है। करव ने उठता है:

पार में वीवन है, अभी ही

वह उपररता रखता प्रविष्ट,

--------------------

५. नरेंद्र गांधी: प्रमाणपत्र १, बुधवार ये २२ वीं पत्रिका, पटाखा विश्वविद्यालय, हृदीय तरंग, पत्रिका २१-८-७४।
२. बाली प्रकाश बिहार: हिन्दी वाचनपत्र का वैश्वदर्श, पत्रिका १६-१६-२०।
वह बाहरी जाती है कठ कठ।

वहीं जीवन काव्य में पुक़- पुक़ धमाल है:

हे जाब परा जीवन पुक़ में
हे जाब परा मेरी गारा।

जिन जीवन है प्रभावित होना काव्य के कई बाथ नहीं है। जीवन की बुद्धिक्षण का
अनुभव उसकी रास्सू में अनुभवर्तक होने में है, उसके फिर से कभी कोरी नहीं, जारी
काव्य का यह रुपन उपहार-या जान पता है:

हे पुक़ कठा पुक़ उपहारी
तारी दुकानसे है नवन दरा,
शुभ पी जीवन का लो बजरा,
नत ना दे दरा, हुब देर ठहर।

जीवन के बिषय में बच्चे कारते हुए काव्य यह भी जताना भालो है कि जीवन में हम
नहीं कार्य करते हैं, निवे हम करने को वात्य छोड़ते हैं:

जीवन में दोनों बाहर है
निकटी के पत बाँधने में अस्तरा,
जीवन में दोनों बाहर है
पाने के पत, जोने के वात्य,
हम किसा भावना में बो करते है
हम वात्य बली हैं करने की।

-----------------------------------------
1. यक्षगान: पशु कार्य, पूजा सर.
2. वही " पूजा सर.
3. वही " पूजा सर.
4. वही " पूजा सर.
(१८०)

वैज्ञानिक पर अतुलग, वैज्ञानिक ने प्रेम की वैज्ञान को बढ़ाने की सक्षमता रित्वति है। कहाँ तत्त्वां तत्त्वां अतुलग अर्थ उज्ज्वल होना होगा ताँ ही वैज्ञान फ़र का पाण मिलेगा वेषा वर्णव है। यही कात वहौ गायत्रीसे अर्थ प्रेम ने व्यक्त की है:

वर्मण है अभाव की बाझाई है त्वां, ।
बश बड़ाना लघु तुल्यां मना विना नाम, ।
एक वन्द तत्त्वां बांध तुल्य सब वहौ उससे की, ।
वैज्ञानिक पर मंड दिनत जाना है वैज्ञान का अतुलग। २

र्ष्पट है कि इस चारा से कवियों में वैज्ञानिक अवधि है प्राप्त जानता बढ़ती हुई मिलाई वृक्षी है।

प्रेम:

इसी करिका चरार के कृष्णति का मुख्य है एकांक में कर्त लाये यह कार्या गराया था कि इस चारा के करिका में गाविस होऐ बाद आधुनिक स्थपत दील पड़ती है। वसूल: प्रेम का काम का ही एक है, परमुँ उसके उचारों विकास में प्रेम की नामा लघु है, आ: प्रेम का हृदय पहचान है। वायावादी कवियों में प्रेम, विस्वेतः प्रेम, खारिज़ प्रेम की गरर वार्ता काव्य में चिन्तक की, परमुँ प्रेम की उदास विज्ञानिक उज्ज्वल चरार के काव्य में कहीं नहीं सिक्की, हाल का र्पथ पर स्तम्भ प्रेम की विज्ञानिक की उसकी विशेषता है। वैज्ञानिक चरार की करिका में ज्ञान के स्तम्भ बाल प्रेम का मंडल मिला विनोभित किया गया है। कविः प्राप्त, वानिन हेतु प्रेम के औरत है बनने को मुद्र पर अग्रस वहौ, उद्देश्य दुर्योग का कार्य पल नहीं, उद्देश्य प्रेम वृत्त है ता नहीं उसकी। उसके परवाह नहीं, वह तो विज्ञान विकास करता बाल का।

वैज्ञानिक चरार के कार्य कप कर खाया दिखा व्यक्त है, उसका रूप र्ष्पट है:

― वर्मणिक का मार जिज्दे फिराता है।

२. विस्वेतः है प्रेम, पृष्ठ २१५।
फिर पूरी बीवन में यात्रा डिवे फरता है, कर दिया किवी ने जैसूं निजी बुकर ने वांछन के भी तारों फ्ले फकसता है।

इस यात्रा में एक निजी प्रहार की युक्ति, उससे और उलझाव है, और:

मैं दीवानी का केन जिसे फिरता है
मैं प्रकार निजी पर फिरता है
बिजली बुकर का हुमा हुई कुले उठाये
मैं युक्त का बन्देश जिसे किला है

यह प्रेम की कब्जे 'यात्रा बनकर रह जाती हैं, कभी तृप्त नहीं होती। इसी समय क्रोध का उठा है:

‘हार एक दूर्गवा का दाश यहां,
पर ऐसे वात है लाब यहां
पीने से बुद्धि 'यात्रा यहां
सांगितर फार नेरा देली,
देने से बुद्धि है हाता।
मैं मुखारा की मुखारा।’

यहां हाता कांवर दे कुशार विद्रोह और नक्रियाक प्रण के है। प्रेम की तहसोन की वात एक व्यापण पर नक्रीन रीति है प्रस्तुत करता है:

मुखा क्या जाने प्रेम?
प्रेम है तहसोन।
उन्नयान मरा है पर्यावरण का बन्वन

-----------------------------
1. कल्पना : मुखारा, पृ १२५।
2. वही " " पृ १२५।
3. वही " " पृ ३०।
पुत्र की महिला का गान : 

ब्राह्मणाधि के कवि ने अलेप्पाड़ के पायलेक ग्रामगंगा में जाकर उपासना की महिला का गान फूटा है। कितनी लाल, रंग और देश-काल में पुत्र-पुत्री है, उनकी महिमा सवारी हैं, इसके प्रतिविक्त व्यक्तित्व कारा के कवियों के कवियों के कवियों हैं ज्योति है।

कवि इसवैल मैं अपनी वाहन प्रकट करते हुए पुत्र की कौन की मुहार कर उठाते हैं:

मानव का सब था वह पना खान,
हरेपहांके पार न कुंब का,
याद रहे हमने वह कहा मानव गाति हमारी।
बय हो, है संयगर, तुम्हारी।

पुत्र की समानता कवि का इसवैल ही सबह हिंद है। प्राकृति के दिना स्वस्थ वाहन की कल्याण करना हंगाम है। कवि: पुत्र की समानता का अपना आदर नामात त्रिवेंद्र कवि कार्निक है उपमाण यें वह यह उठाते हैं:

उन्मुद बिन्दुवाल।
उन्मुद पुत्र है एक वाहन
उन्मुद बिन्दुवाल
एक कवियाँ की जन्मात।
उन्मुद बिन्दुवाल।
बह बाहर दी के कवि।

कविता: दिल्ली के दुरुस्त, पु. ६२,
कवि: निना निमन्त्रण, पु. ६२।
(६३३)

वनकाल संन्द्वाय

स्तनान्तर के वायुदायक।

मनुष्य की सबसे प्रकाशित कर्त्तव्य को भराते जान है। दानव और मानव की कीमारणा अलग-अलग प्रकार है, चारण पर नेम स्तर और चारण पर नेम नारक! परन्तु केन्द्र: मनुष्य-मनुष्य है। इसकी त्वद्यारोपित बसह हो उठी है:

हम घन कुछ करने पी मानव,
हम दे करता हम की दानव
हम तव की होशी नारक की
चारण पर मेरी बुध आती!
हम क्या अन्नी वाति दिपारे?

आर्थिक वैश्वान ने कहा मनुष्य की हीन या को देखकर मनुष्य के कारण कर्त्तव्य का जन्म दु:स की मात्रा का अनुष्ठान करता है। वौषधक एवं शरीरिक से प्रति
उनकी केदारि तथाकाति करती है:

कौन विद्याल? क्या मानका?
मेरे नगद तो है पुकार?
मेरे माता और मे माता?

इति ज्ञाता, उल्लम धरता।

ईश्वरी वाणी समझता है कहने हेतू करुष मात्र: मनुष्य अनन्त गरिया ते प्रशोभ होता वह अवस्था के पास पर जा रहा है, उनकी जोर रहें प्रति करता हुए कर्त्तव्य का-कार्यनाम के विनय के प्रति इशारा करता है। मनुष्य जैसे जुरे हुए जन रूप को देखकर वह व्यर्थ हो जाता है:

कमल की उल्लम दिनंगी से भरा निकली विवश की आशा।
हो या हां पानव का होता वानका होंगी निराला।

--------------------
1. एकनाथ २५४३५२-३०४०।
2. यज्ञ: निता-निताक़, पृ० ५५९।
3. वही विस्मृति के कृष, जान्न, पृ० ११।
4. रामनाथ-रुपन, वर्ण, पृ० वृत-सारस्वत, पृ० २००-२०१-२०२।
किसने यह लोकगीत यंत्रों में बना रंगीला रंगार गाना नामान 
उठरा बनी हाँ छुआ गया है , जीवित की बन बात है बस।

स्वात कहना आवश्यक है कि प्राचीन वर्तमान काव्यां-की ध्वनि , विरास्तार की बात 
वह कवि नहीं कहता। किसी राजनीतिक सिद्धांत के पले पृथक पिंडा की इमार  
छिलक नहीं कहता, प्रत्येक नारीवादी विवाह के प्रसात को प्रतिवार करता अधुरा के हय  
में प्रेम पर उज्ज्वल की च्वस्त करता है:

रंगर बाजौ हम तुम दोनों निक  
हत्वारों से क्रमित पाप को ,  
चापा करूं, वे नहीं जानते  
सत्य और ध्वार को छुआ भुज्दर।  
पन्नी मानकता से आजो  
न हम उसकी पुत्ता को बीलों ,  
प्रेम धारा वह आज कह गयी  
प्रेम पुराता की है उपर।

परम्परा के विपरीत विचार, पाठ-पुजा के आयोग मंडल के स्थान पर पीढ़ियाँ के  
वाणु पाँचन में कवि को सच्चाई दृष्ट दृष्टि का अनुपम होता है।

जब-सब पुजा व्यर्थ दैवी री। व्यर्थ स्वय की नाह ,  
आर व्यर्थ है पुत्ता बानना का अत्यन्त उत्साह ,  
अरे का बादः में पिंडा जाना, यही एक है पुन: 
स्वय दान है बन बन बाना उत्पीडित की आह।

काव्य मुख की पुंजिद्वार ईकालिक काव्य का:

------------------------------------------------------------------------

कालिक काव्य का कामना पुष्प देशिशत्य है। उस दारा के कवियों ने  

------------------------------------------------------------------------

१. रामेश्वर कुंजे के लंदे, सं. जोगभाकाश शाखाक, पृष्ठ २०० वे उड़ा।
२. विरास्त के कुंजे, पृष्ठ ४५।
३. विरास्त के कुंजे : पृष्ठ ६४५, १०२
दोषी व्यक्तित्व रूप को और घुम-घुमाने को बनाए है शायद ने प्रत्येक रूकर एक विशेष वन-पूर्ण में बाहर उत्तेजना कर दी है देखा, बिना कैसे का मानना है। डॉ. मनोज ने इस वात को इस वात का होता है: पारस के प्राचीन नैतिक वादों की है वहां दैविक के अवतारण और धिनि के शायद बात्ता को उपलब्ध करते की क्रमिक की कोई जा सकती है।

हुसीयत वात यह है कि इन कारणों ने विशेष-प्रत्यक्ष क्रियावृत्ति को कपालवृत्ति है। और प्रत्यक्ष क्रियावृत्ति के द्वारा अपनी क्रियावृत्तियों को अपस्थकर करने का प्रयत्न कर लाखा किया। इन कारणों से द्वारा व्यक्तित्व रूप की विशेषता वहां हुई, उनकी द्विखलिता का एक महत्वपूर्ण कारण बन गयी।

क्रियावृत्ति की नवाचार के विषय में कार्य तहत रूपस्त हो जाता है: 
बनार बाबा नहीं लेता जो 
क्यु उसकी विवेककार किया है, 
बनार राम नहीं निभाया जो 
क्यों उसका द्विखलार किया है 
स्थान दिया जय उसकी पैति 
मथ न दिया बिलाय मन मेरा 
प्राण न चाही पर है, निभाय 
क्य भेदा व्यापार किया है।

इन द्विखलार की प्राणपृथकता के विषय में क्या कहता है।
साथ में यह पहले देखा गया है कि इस पारस के कारणों ने विवेकित में 
बनार राम बिहार के बारे में बनार राम में इनें व्याप्त करने को प्रयास किया, और 
कल्पना की बुद्धि के बाद गंवाय की बार शुरुआत बनाने में वे बफट हुए। प्रियानविवेचन

-----------------------------

6. डॉ. मनोज, आदर्शिक हिंदी काव्य की मुख्य प्रूढ़िवाद - पृ 63.
7. वर्णन: भाषा यागिणी, पृ 655.
मुखात्मा के गीत पढ़ने से उसकी बिहारी प्रेमिका हारी है। उस चारा के कवियों की आत्मिक वैवाहिक बलबन की नहीं भ्रमण हुआ है। वह नमूना की शाब्दिका का उनकी कार्य है या परिपत्ता का उनके काम है। उन कवियों के शिक्षात्मक विकित्र विवाहान्त्र वक्तु के कुछ ग्रामण कहने है कि: उनका नगरार नहीं है। अर्थात काम पर आवारेह बुझावा पर उनका शृंखल उड़ाना हुआ है। उन कवियों के प्रेमांग का प्रायो कक्ष की निश्चलक बादामुकुर बँटन की ब कथा विराष्टा रमण और कन्हा की दुष्टाष्ट, कन्हा की बाहुखा की बिरह है – कमान बादामुकुर बारंबर है।

कन्हा में उस चारा की प्रकाश विशेषता की वताये विवाह हम रह नहीं लक्षित है। वह है आत्मन्यान्त्र की पुकार निश्चल अविश्वास। काहिरे मुखात्मा के दृष्टिकोण में वह प्रकाशीय है। शुद्ध है कुंठण फिरे हुए कविता के गीत – निसार निवारण के गीत तथा नरेण्म काव्य के दुरुस्त गीत दर्शे आते करारे में सकुशल या पहुँच है। इसमें संवेदन नहीं है।

पूर्वाकांक्ष की श्रीमान्त में श्रायवादी खुश की कांस्तिक के साथमें एक चारा की कांस्तिक की समूचा नव प्राये है। आत्मवाद पर आवारेह वह कांस्तिक आत्मवाद के नाराम्य है हुस्त रचन को कहे उसकी काम है। वातावरण चाराक के शिक्षावाद के साथ भारवाण के उपर शिक्षा के रंगन धर्मवाद का वास सुभाष एक चारा की कांस्तिक में शिक्षा है। जो नीतियों के प्रकाश एक वादर अभाज्जुर वे चरम दृष्टि हेतु, उनकी हुए या अविश्वास हारी हुई। श्रायवाद का बूढ़ान की उन कवियों ने पाया है। श्रायवाद – जो फंसा है के है जे निवित्त की जमीन श्रायवाद कहा कर जाने में प्रभावशील हरे हैं।

निकुशः

श्रायवादी कविता कविता कविता कविता कविता जब नीतित्व रही, उस चारा की कांस्तिक नीति निनितियों की पुकार सब श्रायुक्त की रंग प्रवास रही। आत्मिक की नकळ, उसके बाद का प्रवास अविश्वास के वास प्रकाशीय मंड़ित: एक चारा की दुर्भाव। श्रायवादी कविता नीतिक भावावेश के कारण उन्हें मन है राग की शोध न पायें,
(१५३)

इस चारार भे काव्याणं न निही रागाणी की विविधता की। हैवानक कारन भे काव्याणं
में नहिं खमार घराण दायमानाणी न्याय रंजूँ हुए हैं, वे प्रफुल्लिक यही ओर यथा
ते प्रस्तुत करते वाह काव्य हैं। खेंटे में वार्ताने उन्नत वाक्य की, गुलाम योग की,
पांड्र प्रस्तुत की कार्यता है। वही वात वार्ताविश्वास हिंद की न्यायपालिक योग
जाग्रत हैं। क्यों वि भी काव्यथा की दृष्टिक प्रदेश की काव्य: न्याय रंजूँ
हुए प्रस्तुत की राह में यथार्थ दृष्टि की व्यक्तिकरण करते हैं। पत्र में नहीं, वे प्रस-प्रसाद - रसमण
बनना चाहिए है। सब इन तमाम में अपनी व्यक्तिक तीव्रता, यथार्थता के कारण
विश्वास रहे हैं। काव्य-पत्र की व्याख्याना में निधन के समय उन्होंने विषय उत्तर वाचा
है, तथापि उनकी कारकार्यानें वे बीचन कीने की एक चमत्कार अनुस्यास है।

क्षयावाद हें। प्याराव इन काव्यों की व्यक्तिक दृष्टि यह रही है कि वे
कुर्टे-वामारी राष्ट्रावाद की वालने बीमारी की पद्धति, उनी ओर ऊर्जा का काम
दैर वाची। नसूलंक्यों की बैलवा पर उल्लक दील प्राय राहु। लबन की व्यक्तिक
तीव्रप्रकट का मुक्त रहित कहीं वहीं है। परम-लक्ष वीं हरे काक्षायों ने बीमारी की दृष्टि
की करी। वे उनकी लक्षप्रकट को भी कम कर दिल्लाया। तात में भाव की उजागर करते
बाहर नहीं वास को वानत करने वाली। लबन की कार्यता करती सच्च व्यक्तिकत
के फिस मनोरंच प्रदेश का सुंदर बनी रहे हैं, और उसका दैविकासिक नवनय
व्यक्तिकरण के होना।

(३) राष्ट्रीय सार्वभौमिक काव्य:

वि १६२० के बाद वि १६२७ तक आनंदर वार्तावाद के समय निस्तर
स्वायत्तिकों का समाधान उलझाया गया। पुर्वी के समय आनंदर
का शैलुक गायनकी में ऐतिहासिक गर्व का प्रमुख प्रयासों के साथ-साथ स्वायत्तिकों
की प्रगति की ओर दैव कसर बना। एक वे िशों जैसे में देखा कि आनंदर के
पद्माद एक और वैन्युक्ति संकल्पना अर्थात विनिस्फुट राग वाचाया बढ़ता है। किद्वी की 
प्रकीयता साधना के कारण नाव नहीं तारा नामा हुआ कहीं दीप पहुँचा है।

to कहीं वैन्युक्ति मार ने प्रणय की निकाय के कारण मत्राला है वर्गन्द्र नहीं।

to इस तरह हिन्दी काव्य में एक देश प्राचीन शरण हुआ पहुँचा है। या देशवास 
का है। मार्व का शरण में भी देशवास की स्पुट परिचयारंभ निम्नलिखित है, अर्थात के वैण्य 
की यात्रा में कैलाश की होरहिता की मत्ता भी; तो दिवंद्री शरण में एक निर्देश विवाह 
के साथ देश की विचार की केदी के रूप में सब सम्पन्न अभिकायरण वताकर उसके लिए 
प्रणय निश्चार का देश के लिए त्याग पाकर की दूसित्त कहीं है। डायान्यसमयों 
में भी देशवासका उसका दोहर पिये हैं तो राज्यों तांत्रिक काव्या, किद्वी 
उक्ति नाकार का डाय नोट्स का गिरा है। १° उसके डायान्य के बादका के बिन्नवन 
पाठ की विनिस्फुट वांछित मिली है। इस वर्णा की काल्वारा की विनिस्फुट कांग्रेसों 
पर प्राचीन नाट्य डाय नोट्स का गिरा है, इस वाक्य की काल्वारा में उत्सव 
के साथ राग का आयार भी कैलाश है। २° ताल्लुक का इस वारा के काल्वारा में 
कल्पना एवं डेशवासका विंते राग एवं उत्सव वितारए पहुँचा है। पार्वीरता 
के साथ देश के नवायक यादि के सभी की बारे में हर काव्य हारा व्याख्यात गई है 
तो साथ में उनका अनुवाद के लिए उनके शेख-शहायक के लिए प्रविश्नीत विदेश 
पहुँचे। यह है उनके देश के विनिस्फुट का उदाहर पाय। देश का ताल्लुक यहाँ 
केवल भाषागतिकी दिखाई हैं यदू केवल एक आकार प्रकार न रहकर देश के सम्पत 
देशवासियों के है। देशवासियों का यह प्रकार स्वर उदाहर की जातनात्मा स्विम मार 
के कारण देश के प्रकाश उदाहर बनने रहे है। यह सब देशवासियों एवं शासक्यों के लिए 
किया का एक रूप में बिनाकर इतना हेतु रहे। यह सब देशवासियों के लिए विशेष 
शासक एक प्रकार उठे और उनका निश्चित करे। स्वायत्त डायान्य ने आर्य-संस्कृति

-----------------------------

9. डाय नोट्स : आर्या के बारा, पृष्ठ २३६.
10. वही, , पृष्ठ २३६.
का कामान मात्र हुए न की राष्ट्र की धीमार सक्र देश का विशिष्ट होती हुई वतायीं। वहाँ व्यवस्थापन का कोटे स्थान नहीं था, परन्तु गुड़ प्रमेय में वह हिंदु राष्ट्रीयता थी; खान जाति लोहर की वास्तविकता किये हुए नहीं थी। इतिहास में नैसर्गिक ध्यान की स्थापना से शायद की एक 'स्वयंभू' राष्ट्रीयता का नवा अंग प्राप्त हुआ। खान खानः और सदस्य गण, जाति वर्ग गण के समस्त देश में अंतर्वित हो चुके वास्तव का निर्माण करने में भाग लिया जाये जा। पहले देश के कोटे को अगले कुछ वक़्त में कुछ विनाश के बाद, अंत में देश के नागरिकों के विश्वास, दीर्घ-दूरकार्य, प्रति मानवीय नागरिकों का प्रति होने जा। पहाड़ी जनिय आन्दोलन के नेता रहे, वह साहारण गण की मान्यता से बान्धवगत नहीं था, उनका मुख्यार्थ गण से बाहर निपटना था। का: यहाँ उत्सव का अध्याय न केवल गणसभा का उत्सव होता है, बल्कि शहीद का उत्सव होता है। शहीद की दायित्व के लिए, उन्होंने उन्हें उनके लिए एक तालाब उत्सव का उत्सव होता है। खान जाति की व्यवस्थापन में एक अट्ठाई प्रारंभ का काम नहीं है, पारंग्ल में धीमार की विशेषताओं का गारंगेश है तो इसी प्रकार और धीमार के एक तालाब का उत्सव में राष्ट्र पानेकर उसे बाहर उसे इसे चले गिट जाने की उदास रूप है।

जबकि एक दे वहाँ उत्सव वास्तव का प्रति उत्सव एवं वानस्पतिक करने वाले इन वर्गों में विविध, मानसिक रुप से सम्पन्न दहरी वैशिष्ट्य है। इन वर्गों की विशेषता यह है कि वे स्वयं देश के स्वातंत्र्य संग्राम के दौरान रहे, बाक़: जयवर्धन कांग्रेस की दृष्टि में वह न लोग हैं वे इतिहासक के दौरान में शहीदों आत्मुत्त्म का उत्सव कर दें। इनकी वर्गितहरू कार्यरत में में राष्ट्रीयता-उत्सव के लेखात्मक के अमृत भी गया है, जिनमें वांछित एवं कुलखे उत्सव में दूसरे का पहुंच कर गए है।

यह आन्दोलन की देशबंधन विशिष्ट स्वास्थ्य का गान करती प्राप्त हुई है। इन वर्गों की आन्दोलन का गान नहीं है जो झुकते में तनाव के गारंगेश का है अंत में अध्याय के गारंगेश का नहीं है तो वह विभिन्न दे देश की गारंगेश ही की (विद्वेदिक) स्थापनी है।
वह नारा ने लोभनाज मिलकर, निवारण शाण शुष्कत्व भारतीय संस्कृति के उदाहरण मैथिलीसंस्कृति गुण ने भी वाक्य रखकर रचनात्मक की है।

राष्ट्रीय रहस्यास्त्र वाक्य ने निर निर्मल तुल्यः

रेख-फ्रेमः

शास्त्रों के विश्वास के वाम बाह्यानन्द ने देश के प्रति देश देश जहा रहा किया ही देश-भाषाओं के प्रति लक्ष्य का नाम। नारक की दीन-दशा को देखकर काँग्र का दृष्टि भाजुका दे यह जानता है। देश के उद युद्ध प्रकोप निर्माण ने देखता करने हुए कांग्र देश की अत्य आस्था के प्रकाश का नया है। उन्होंने निर्माण यह तथ्यात्मक दृष्टि है:

उस पुराण पुराण पर जान तरी
रे जान पड़ा लेट करात,
चाहूँ तेरे हु लुकर रहे
लेश रहे कुदरती विकास चाह।

मेरे लाखाँ ! मेरे विकाश।

परिस्थिति की जाना काव्य का रोने के रूप दिखा नहीं कहता। है किन्तु विवाह का चंदनाद करने का उपद्रव करता है:

इ तरी वाण त्यागकर दिखा नाकर,
रे तरी ! आब तब कह करार
नकल - शेष्यों का रची,
इ आब-आब मेरे विकाश।

उनकर : रघुकुंज, पृष्ठ ४।
वाकी "", पृष्ठ ६।
हवी संयम के कारण काव्य केवल देश की महापूर्व के गान में प्रस्तुत नहीं दीक्षा परन्तु दीन कुष्ठों की दसा देखाकर देखना व्यक्त कर के उठती हैं। एक दीन कुष्ठ से घर छोड़ने पर, उसके घर के बारे पर खड़े नीम को देखकर काव्य की व्यंग्य शाकाहार जो वाच उठती है:

राती पर की टटी फूलिये, छूटा नीम कुष्ठकर रोया।
बन्नर नी फ़ी फ़िलह खुलकर, मां पत्ती का बीर फिलहाया।
राजकुमार बचा वा निकृष्ट स्वाग भरता पानें;
और उद्दी हे देश-निवासी बी लोकने दाने-दाने।

यह जब सम्पन्न का कारण शालीय तथा देशी का कर्दम ही हैं, उसे उन्हें प्रति भाज बांग धिलाने की कार्य मुख्य नहीं, एक तीव्र बालक में वे रह उठते हैं:

वाणा हुन्वी जालेटी कंग़ाला कैदी वे लग है ठीक।
तौं हुवी है नौकाराही अपने सम्पन्न की ठीक।
वैदिक बकी हे वे महीं रंगले है निश्चित बाने दो।
जंगली व नवाने यात्राएं की गंगटीह में भिड़ बाने वो।

शालीय के हजरदार के प्रति इतु होकर काव्य का बाहुल्य पक्ष उठता है। वैदिक-बीजन के कहीं इतना द्रायरे का काव्य है विश्वास किये है। वीरों व देशः समाखारारें वे दुरत हवे बीजन केवल सुरक्षानी है। क्षेत्रीय व सम्प्रदायने काकरें:
- क्षेत्र फेस न कही संवरों का पहाना,
ह्स्ताक्षर्वाच पर यह 'र्यु' राज का गहना।
फिटी हे राजस्थान ने नशी गाना,
कौक्ष का वर्क-कौक्ष की तान।

--------------------------
9. उद्योग का नाम: संता कामकी प्रसाद पुन, पु. ७२।
2. उद्यम (नवीन) पृ. २।
(२०२)

हूँ नौर लिंका आ गेट पर तुझा
धारी करता हूँ ब्रिटिश बड़ा का हुज्जा। ६

सम्पत्ति कोई अभावामध्ये का शर्मणाक करती देखर देख तराज ते प्रख्यात स्वरूप
विकाल ने की प्राक्तन दिन उठे हैं।
प्रेम । तप पावन नीच गनन-ताड़
विदाइ क्षण निरीह-निदल-बड़ा,
विद राष्ट्र, उज्ज्वल दिल नन,
आह! दुम्हारा आज कर रही
कलायाँ का शोरू शोषण।
पुश्प साद घवाँ धर्म न मै ग्रह-नाशत-निहार
नाजी है, नाजी, नवर। २

अपन स्वभाव या बात की पावनाः

-------------------------------------------

इन राष्ट्रीय देहानों में देख हे-किस सर्व स्वरूप की उत्कट पावना हुई। एक पुष्प की बनियासा—हे अपार काव्य में अपने कव्य मात्र
की उद्वाच बल्कि प्रेम की है, वे निश्चित स्वरूप की गरिया हे वेंकित हे-पुष्पाओं
का पारंपरिक उधयन यहा दुष्टिान्त नहीं होता, एक शरण नवीन बनियासा
(पुष्प की ) अवश्य की हैः

पुकेंद्र ताओँ देना बनाईः
उस पत्थर में पुष्प देना के क इ।
मालुप्रत से ही शेख भ्रक्तः
विश पत्थ बाड़ेः कीर भ्रक्तः । ॥

-------------------------------------------

६. (कैनै और कौंट्रा है) पालनाभ कुलेश्वर वृषभ (पृ० २५६) सं। २०० कीर्तिक धारा।
२. रेणुका, पृ० २।
३. परेश धनार (पुष्प की बनियासा — पालनाभ कुलेश्वर) पृ० ६५।
कवि बलकुल फिरव्यक्त (कवात हुआ) मूर्ता-गीत में अपनी लाव कह देता है।

वर्णनमो न हो पूलाने का कहता हुआ वनकर अनेक की वाता सर्पिंग के पथ पर न्यायाधीर करने की वात कर उठता है:

कह छुट्य का तार बागी
सजा है बदन लौटे,
हो वहां चढ़ लौट घाटिनग
एक फिर मेरा मिज़ा दौँ
वन्दना के हन स्वरों में
एक स्वर मेरा मिजा दौँ।

अरे स्वरलील सी राजा का रंग डांगा और 'प्रेम लेखन' में वह क्वीय एक का कुणाक कर

शिक्षक के स्वर में घोड़ उठता है:

प्राणा! चढ़ो अपना बन्दन,
रंगा दौँ, हो नागा बन्दन,
शक्रिय दौँ तुम घरित जानी,
उचित-पथ पर हर दाल्जाँ !

आब रुण की अरे अरे आजे।

कवि अपनी प्रशा बाबुरी वाणी में वह शीथ-डांग की मायना को देख कर देता है।

अरे वह मायना डांग नौद्वार के बड़हा में, भगवान शीघ्र उनसे बावर वीर-मात्र का सबक ब्रह्मम रूप है। शीघ्र उन्होंने प्रति उत्काश, उल्टाह का वर्ण्यार्थ है। अरे बाँझ की मायना का बावर से लाग समान करते हैं। सबकी बाबानें

कवि कहते हैं:

(ि) बालका बोल जा, पूछों कर दे
एक शिक्षिणि एक निर्ग निर गोट दे,

---------------------------------------------

6. खूलकुल द्वियदी: भूमिगेत, प्रस्तावना, परिचय, खण्ड 1622.
7. वही
8. डांग डांग नौद्वार: आयुर्विक तिहरी कविता की प्रस्तावितवा, खण्ड 26.
फल छोर बनें, हरायें-की उटाका ,
बाँ हटी हैं कि पृथकी माँझ कर दे ।
रक्त हैं ? या है ने ना भिंड पानी ।
जांकर तु धीया दे दे कर बाहरी ।

वांचनात का यह भाव इस सुन के राष्ट्रीय कांक्षा का वार्ष मौम मात्र है।

वांछना :
-----------
राष्ट्रीय या साक्षरता कांक्षा में वांछना का निर्देशन हुआ है।
ज्ञायावधी कांक्षा में वांछना मूल का उपयोग हुआ है क्योंकि उसका सम्बन्ध प्रेम दे ही रखा है। गांधीजी का वर्ण युग: पीढ़ा का वर्ण है। उनकी वैदिककार पर
पीढ़ा के परिपार बाय पालन-भर यह पर फैलित होती है। वांछना का उपयोग जल्दी
दे मुक्त वनना है या उसका पुर्ण उत्काल है। उसके भर्तूरं उत्काल निकेते हिन्दी विश्व
विश्व के साथ-बना अपने वापसी नागरिक वांचनात्मक नहीं कर सकता।

इसी गांधी कहते हैं क्योंकि कार्य विश्वास अरण उच्च गांधीजी के स्वर
में ही वांछना की मांग बताते हैं:

रक्षानात्मक शासन नहीं होता तत्त्वनाट
वो जलता है, वही बनारस पर है मंडः।
पिछा केवल सर्व सत्ता उसका नुतन काँक्षा
हिंदी का है एक बांधनों की प्रतिपादन ।

गांधीजी की मूल्य में सज्जा रखने वाला कांक्षा विश्व साती है विश्वास करना असंतान है, हिंदी है उसका बदला तेंदा की नहीं वांछना। यहाँ विशेषकर

-------------------------------
1. डा. मानन्द: बायुमक-हिन्दी कांक्षा की सुलभ प्रूफिकार, पृ 75.
2. विभिन्न की विशेषता, पृ 187.
2. डा. मानन्द: बायुमक-हिन्दी कांक्षा की सुलभ प्रूफिकार, पृ 43.
3. शिक्षाशास्त्र अभ्यन्ता : उच्चतम - पृ 95.
तिनिर वृक्ष आर्द्रण करे तो नी। उसकी प्रविष्टा व्याघ्रा के प्रति की कपी। पी तोड़ देने की नहीं है - जैसे सब चित्रकूट मात्र वही रेते प्रलोग पर कहला हैः  

- रुक्तपुल मन नहीं करसे।
के की खा स्वयं, वाहिणा मन तर वर्ण।

नवीन बाल यह है कि दृष्टि आपर्दानी की उसकी आर्क्षा दृष्टि कात्र्व यात्रा में दृष्टि नहीं है, वह कहने वाला है कि: उत्तर प्राप्त वर्तमान शरीरनीय नहीं है।
कहना है कि रूप रखते वृक्ष स्वयं कुछ भाना कहा है। वास्तव यहीं की वास्तवता कार्याल्यकार्य स्वतंत्र कार्य हैः

दृष्टि की दृष्टि नहीं निरा दानत नी दानत;
वाय: जैसे ज्ञान कहा वा उवका कहा।

वेंगा वहं दृष्टि ग्राम गुरु हे फाटून दे,
कृपा रक्षा खिमूं स्वयं के कुछ भाने दे,
कर उवका उम्मय स्वयं उनंत हरीं हम।

रिस्का की वान पुलकी का कारण त्रयों हे और उसकी दुर कराने ये ही दृष्टि का त्रयाम स्वयं है। करिं उसका त्रया उद्याम तौँ मिलाने है और वह है प्रेम ॥ का मननः। करिं कहते हैः

प्रेम करोगे प्रेम तिराहा,
प्रेम करोगे तौँ दिखे ॥
उत्सव एक के बन्दी है खा
मन है दुर करार यह लिखा ॥

लंबोधः

--------------------------------------
5. विजयानाथ वर्ण गुज़ : उन्नियल, पु. ६२४।
6. वहीं , पु. ६२४।
7. वहीं , बालपालित, पु. २२।
नासिक का एक नक्सुल पुर्व है बन्दीवाल। गांव रंग पुराणस्थ
परम निवास। वन्दीवाल की मद्दत की प्रथम दिशा है। वन में रहने वाली आर्य नारी
चीता का जगह नहीं है, गांववाला का निकटवर्त चौक, फसों का मुख्य
प्रवेश शीर्ष के आन्दोलन के रूप पद्धति है। यह आर्य वंदीवाल बांधुपारी ने
चीता के कुल रूप से व्यक्त किया है:

नमः प्राणद गांववाले केवल,
क्या हट्टेर फूलक, क्या प्राणावन। २

गांववाला की चीता महल ने बुझ की तुलना में उद्भन की बुझा में वर्णिक बुझ नारी है।
गांववाला का मुख्दर, पारसेल, पुंजावालें के आर्यवर्थ, प्यारी लोगों का निकटवर्त
मुख्दर, आन्दोलन बने के किरण पद्धति है, वर्णरेखा चीता का उठनी है; -

निम्न सारे वर्ष में उद्भन बुझा ने बुझा
पैरी हुटिया में रामनान्द दत्त नारी। ३

स्वाक्षरणः

गांववाला वर्तमान है प्रांकित को है नया पारा के कांस्यों ने स्वाक्षरण को
भी पुल्ला है लेख में खेल भेंटि है। अपने हाथों अपना काम यह आर्यवर्थ बांधु यहां
प्रकाशित करता है। नाबालिका में महान दिन टालकटाया है शीर्ष दे बारे अपने
प्रथा अनुयोगिकी दी चीता तब मुख्य नीति के किरण स्वाक्षरण से भय की भांग आर्यवर्थ
है। बना हाथों नारी देने का आन्दोलन भिन्न है। धृत। उत्तर पुल्ला का फूल है।
गांववाला वर्तमान में लक्ष वर्ष स्वाक्षरण की प्रांकिता की गयी है। बंबर्टी की दीवा
अपने हाथों से पारा। पारा है, खेल। सरार है बारे द्रुपरी केर वारा निराली है का
तब अनुयोग दुर्गंत को उठनी है। उनके फिरने वाला बुझ एवं गांववाला गुरुत्व है।
उद्भन के सङ्कोच में उसका विपन्ना दें। -

---------------------------

१. पंक्तिकीः ड्र. १६६
२. गांववाला ड्र. २२२
लावचुन की एक फाज पर
ग्वालिका कुछ का कोश। ६

साकेत की जीता की झल्की पर गराईं प्राप्त करने का आनन्द पाती है।
आरों के हाथों बहीं नहीं पड़ी हुई,
बपने पेड़ों पर बूढ़ि आप कब्री हुई।
अपना रविवार उस स्वास्थ्य उखान फ़ूल लिया हुई है,
अपने जमघ ने चौबन आप कदमी हुई। ५

गुप्ती के राजव ये यम्या , पाौरस्तविक पुल्ख - हुई कहीं की प्रविष्टा हुई है,
राजन दूर पल्लीक युवा की राजा हुई है।

सुभाषिता के गंगाधर उपन्यास प्राप्त उपमानण टाँका बागी है। उसकी
उत्कथा है कि इसी गंगाधर- सुभाषिता को घराना पड़े हुई , वह शरीराथ दे रविवार है।
उस शरीर वे सुभाषिता दे कही हैः

पर में बांद परनारी ते बढ़े उपमानण कृत
तो खिन बाली आन कदांकिंद ग्युलारां की सुभाषिता। ३

यह इति हुई कहीं की प्रविष्टा में राजा दादास तो जाता इतने गये जनों के ग्रंथक मुख
पल्लीक अपना फूलवारिष्ट बनकर बोढ़े हैः :-

प्रता के अथ है सापाराभ लारा
खुले है ज्योति ही पाता हारा। ५
राम की राज्य के लिए योग्य है, परम्परा के निर्वाह की हरिष्ट व्याप्त प्रकट है।
एक पतलीर में साने वाले क्वब गुप्तचक्री ने फल विकास की निस्सा की है। पंजीरी
में उद्योगी शृंगार के साथ कही वात बताते हैं:

बहुविशद विशाल न्याय नहीं
पत्रों, सुप्रभो दाना करो।

नानकार - पुत्रक्षता की पंक्ति:

उच्चायावादाचर राष्ट्रीय वैष्णव साहित्य राज्य की कर्तव्य में भी पुत्रक्षता का गारिश कमजोर बना। हायायादाचर राज्य की भारत इन कर्तव्य में भी पुत्रक्षता की पुनरुत्थता के जोड़ने के गतिविधाय हैं, उसी की पहली प्रभावित की है।
इसके बाद दु:सीकन श्री महाबलीला प्रति सहायता प्राप्त की है। अन्य जनाओं की रक्षा की तोळळ मारी, ताहाता करते हैं कि उन्नती की पीढ़ी दे कामना कर लेते हैं।

दिनकारी ने पुत्रक्षता की वेधांता का परिवर्तन इन वाक्यों में करने का प्रयास करता है::

"भानुन्मत्र यह वाहु धरणी का
कुमुद कलावाही, कर्मवाह वारी,
श्रेष्ठ प्राण, निस्सा के क्रांतर में विरोधण
dिवानी हुई शोभा निर्माण में निर्माण भरी।"  

मौलिक सर्व गुप्तचक्री ईश्वर में न्यू आर्थिक राजनीति वाले व्यापक व्यवहार हैं, वरन्तु पुरुष की पंक्ति उनके नम में खोजे पर। कम नहीं हैं। ईश्वर वार पुत्रक्षता इन दोनों में है आवश्यकता है जो यह दूरी दु:सीकन प्रस्तुत है; तुषा एक वार है और निर्मलक एक वार। जीत में कवि ईश्वर के मानवीय स्वप्न को क्षेत्रीत हुए रहते हैं:

राम, हुआ भाव भी? ईश्वर नहीं लो त्यो?
विश्व में रहे हुए नहीं घरी कहीं को लो?

---

1. पंजीरी, पृ 33.
2. दिनकार, ईश्वर, पृ 80 वं. 
कांव अयोग्य बिलास फितांत है वरिष्ठ आहेत है आँ: उन्हीं ये दो पंवतां वनादान का पदा प्रस्तुत करती हैँ

तब न निरीक्षर हूँ, द्रॅखर धामा करे,
तुम न राते तारे सन्न हुम प्राया करे।

कैदी ने पृथि घृणा का गाय व्यक्त हो, वह स्वामन अमृत है, वह पवारुः उद्धत करती है। गुलाबी ने पानीय गुप्तुखालणे ये कही नारी का उद्यार करके उसका गुलाम बापुः निर्विश्वास किया है। मन्दिरे के कहने पर क्रृपण की जाग में कैदी ने बचन देखी वॉर्ग्य हैँ:

"घि घिरे, रात में भवाना पत्र वाही।
रुखदारी हे दूर परं में देयः,
मेबक की धारी है वस देविण।"

कैदी की कानी कवी की छुए पर पवारुः चोटा है वो वह रह आन्त हो गर फ्रायं हैँ - वह पवारुः के बालुः में वहाण आहंक हैँ।

"तुले तुले पर शैलोंक भी दी हैरों,
उस वार्दूः वो कह कहे, कहे, क्या लूः कहे।
ब्रैह्मने न मापुपड़ मन्दिरुः पत्र का सुकसे
हे राम, वरहार कर्न अर व्या, पुकसे।"

वर यह प्रायस्यक की स्वरीणा में लान करने वाक्री राणी के फिर भी वार कन्या वह एक बाल की धार। "का उद्यान उठाकर वह लड़ी पानिता की विनय का उद्वलित है। कांव रंगारकी वही वार को अपने बालूः में कहते हैँ:

----------------------------------------
1. प्राप्ति - प्राप्ति के पुट्य दे, पुष् - निर्णयन के व्रु
2. कही, पुष् १४७.
3. कही, पुष् २४६.
न देवी दिखव पर सुकृति दृष्टा थे,
पृथ्वी हृदय का ज्वालार है नै,
उगारा! दृष्टि देवी सुकृति उठा लो।
लायक देवी का लाहार है नै।

व्यस्त सो उसे वारी। पृथ्वी की पैदाना में कांच का पाठुल हृदय वश्यन्त व्याख्या हो जाता है। व्यस्तक कैरंनाथ ने पृथ्वी के नाम पैदे कर रक्षा के, उकारो देखकर कांच का व्याख्या हृदय फट-फट जाता है, कम: कैरंनाथ का नारी। चित्रित उनकी वाणी में पुष्ट पुष्ट है।

शैरण करने कांचों की नर्त्या करते हुए वे कहते हैं:
वे मैं यही ज्वाल है जो अपने वाणिज्यों की मजाते हैं।
वे कहते मैं यही कांच में ज्वाला-ज्वाला जो फटताहै है।

वस्तुभवता के कांच को कांच वारी पर से मिटाना चाहता है। पृथ्वी के प्रति उन्हें अपार वहाँधर है।

बाह्य दृश्य का प्रभु की पूजा या विशिष्ट नहीं,
देव काया या काया इँसानों हैं वित्त निर्यात कहार नहीं।
बन रंगशाब्द की विवेक, चार की पावन व्यर्थित कृत्य हुए
ढाँडी लोकसंस्थ! परत में नावकार कृत्य हुए।

एक हरिजन दिखा की लाहूंकी बेटी की सहायता पार्गे देवी की पूजा का ज्वाल है।
परतु कृत्यों के लिए क्या वह बहुप्लाव है?

उस बृहत की दीन वाणी के उदारर भ्रष्टाचार है:
मैं ज्वाल हूँ तो क्या पीरी।
पिनाकी नी है हाय! बृहत,

----------------------------------------

1. इंठा, पृ २६।
2. इंठा, पृ २३।
3. रैणाह्र, पृ १६।
उससे पी वया ला बाखेरी
लेनी की मंदिर को झूँझूँ। ये

वह दीया उपानम्य स्नान से प्रति नहीं है वया्ा् नुम्बु के ला झूँझूँ झूँझूँ का
राग मतुष्य की उन्नति में के सहायकारी हो जता्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ा्ाँ

हिन्दू मंदिर को झूँझूँ
लग झूँझूँ के है वो झूँझूँ। जी
और झूँझूँ पता मारवारों के पुल की और झूँझूँ झूँझूँ करते काव्य कहते हैं:

वह धुरता है वह नीरी,
उसे रहीम कहाँ जा राप,
भीम उसे कर लेते हो वया,
कैर भीम भीम धुरते नाम।

नारी प्रश्नया नारी विषयक दृष्टिकोण:

कविता टैगर की वरण विनक्त की नारी विषयक कल्पना वरण की है।
टैगर की नारी तुम बंधन नारी, बंधन कल्पना है तो विनक्त की नारी की
रचनाओं मूर्च की कल्पना की है:

सिहद मुमक जहाँ है हुम नारी
कल्पना की विषय की वस्त्रान,
रहे किरगर तहाँ वह अन्वय देवी,
इंशक इंशक है मेरे गान।

9. आफ़ा, पृष्ठ 48
10. बालकल्पा, पृष्ठ 56,
11. जनता, पृष्ठ 48,
4. उपाय, पृष्ठ 39.
नारी की मुख्ति कवद से सब्ली में अचानक निराली है, जिसे स्वर्ण कर्ता (उसकी लेबाली की लड़ना से) दुखशंक है, वह कन्त्र की गुल्ला पांवन है। कवत कहते हैं:

न हुए जिसकी कह देवी!
कलना वह तुम अन्गुल देवी ।
पाठना कन्त्र की वह गुल्ला,
रही वो गुल्ला कथ देवी।

कवत ने तो नारी की कोट, ऊपरीरेखा झूठी चर्च- चर्च की एक दुखित खड़वारी कह दिया है।
कवत गुप्तका ने अन्यता नारी की पक्षिता गायी है। उपरिणिता की कवत ने स्वर्ण कह वह दुखित खड़वारी पर दिखा कहकर नारी का शम्मान किया है। रंगितार के नारी के तुलना में कवत की नारी पावना में जीवन वास्मान का कन्त्र कह गया है। नारी का पुल्ला खड़ गया है।

महाभारतकाम्यासे प्रमताव विचारधे नाम प्राप्त कर हुइ बन जाते हैं।
दारा का दुखुड़ पड़ता है, यशोदारा गृह में है, हुइ के स्वागत के लिए वह कहना नहीं बाती है; स्वर्ण हुइ वहाँ बात है। यशोदारा की स्वतंत्र देखकर नारी हुई का शम्मान करते हुए वे कहते हैं:

दीन न हो गयो, धरी, हीन नहीं नारी जेन,
पुत्र प्रवासी भर न लो, चरीर लो,
राणिया हुई बन में गुल्ला हो वह वे विवेचन कर,
मुक्तको देवारा गायु बानि ने ही कह लो।

-----------------------------------------------
1. बंडापार, पृ० ३६।
2. वहीं पृ० ५०।
3. वहीं पृ० २०।
4. यशोदारा, पृ० १५०।
(213)

काव्य मुख की पूर्णता है राष्ट्रीय वाचकृतिक काव्यता:

इन काव्यां में देश प्रेम और देश वाचिकों की ज्योति के कारण उन वाचिकों का विविध-विवरण उपर्युक्त हुआ है। इनमें जोश अवश्य है, परन्तु उस जोश की व्याख्या में होने वाले स्थायी वाचिक नहीं है। इस व्याख्य के कारणे या काव्यां की ज्योति ज्यादा है। इस व्याख्या में सामाजिक आवश्यक का प्रतिक हो उसके विचार स्वर कुन बढ़ते हैं। सहानुभव के कारण यह उग्र जोश काव्य मुख की स्थायी विविधता नहीं है। जोश को प्राप्त वाचक उच्च नाटक प्रशंसक काव्य में नहीं है। वृद्धि-व्यवस्था, काव्यों के स्वर, वाक्यता की पाठार या लेखक विशेष व्यक्तित्व का वाक्यता बिंदु के रूप में सफल रूप से प्राप्त नहीं है परन्तु काव्य वाचिक में उक्त उनके तट अतूचे है वहाँ का क्रिया की वह कौन वस्ता है। इसका वस्ता यह नहीं है कि वही काव्यां वाचकृतिक बुद्धि से अवाक्य पुंछरी रहित। इनमें वहाँ काला अवसर के स्वर बिंदु के वाक्य पर अबिन्दुत हैं क्यों कि इस गहरा विश्वास डालने की बाध्यता है। या वही राष्ट्रीय वाचकृतिक वारी के कवि कहने देशक वांछ हैं, भीमन में वाचिक का पल्ला पड़े पर गुल्मों में मानवीय संस्कृति में वापस वाले हैं जो कवि कृतित्व न
निकम्यः


(२१५)

कृपया, प्रस्तावित है। नामित नाम की पीढ़ा से हुआ की भव्य का अनुभव उनकी कार्यालयों में बन-बनाया पाया गया है। दुल्हन नाम के गांव में किसी कार्यालय में उतारने वाले केवल प्रवक्ता रहे हैं। मैंने शिक्षा देखा मार्गसूची संस्कृति में जो शुरू नया है, उसमें, उसे उजागरा और अभ्यास रहे हैं। नामक की बधाई के रूप, किसी की गार्लिक गांवाएं राष्ट्रीय संस्कृति कार्य का अद्यतन निर्देश है। दिनार ने कार्यालय का अद्यतन नहीं किया है, उसमें कई से धन विद्वानों रहे हैं। उन्होंने राष्ट्रीय कार्यालय, गांववाहिका, मानकाल आदि देश श्रद्धांजलि है।

दीर्घ केवल की उद्धार के रूप (हम प्रेम क तत्त्वों हैं श्रद्धांजलि केवल) दिनार ने पश्चातः प्रयत्न किया है। दिनार की ऊँचाई इतिहास देखा और उम्र के प्रति उन्नति रही है।

बुध्व में देखाई दी कहानी प्रयत्न है कि एक कार्यालय, नामित गांव के नामक कार्यालयों में जीवन में संक्रमण आवरण, वीचार में देखा है कि इस कार्यालय के वर्तमान, एक अंतर्गत की भवना, जहाँ भारत की कार्यालयों ने निर्देश निःस्वरूप है। इन शोधों का मार्गसूची संस्कृति में गढ़े प्रयत्न है कि: एक निरंतर तारा की कार्यालय होने पर नहीं। यह वापसे है अद्यावधानित है, यह निर्देश है।

(४) विषय पुक्र (प्रस्तावित) कालवार:  

चौथ १६३० के वायापार हायायादी कार्यालय के शिक्षक की ओर मा बने का स्थान उठा गया है और तित की ओर शुरू का स्थान था। हायायादी कार्यालय मानकाल और वायापारी रही देखा वायापारिक उसका उपयोग। हायायादी है। वायुक के राष्ट्रीय कार्यालय, को यह वायुक का प्रत्यय, दौलत के बांट का कार्य, प्रथम अन्तर्गत के विक्षेत्र के दौरा पर १६३६ के पहले प्रकाश को बुध्वा था। हायायादी के की विषय पुक्र के बांट के बांट के बांट के बांट के बांट के बांट के बांट के बांट के होने की शर्त समझ नामक की बने में लागू एकल रही, वायापारी की कार्यालय:

देंदे दुई की, युग शुभ की

हायायादी कार्यालय के एक नये पात्र का बुध्वा रही है। वायुक के हायायादी की प्रथम प्रश्नों के स्वरूप होने के भर्ती की प्राप्तिकालिका के कई उपन्यास हायायादी
(२६६)

क्षेत्र में ती दृष्टिगत होते हैं। हिन्दी कविता की एक नयी दिशा देने में वह हिन्दी के खुले सारीत्व को एक नये बीवन धारित है अनुप्राणित कर नये बीवन दृष्टि देने का कार्य प्राणितवाद ने किया। प्राणितवाद ने कारण सारीत्व में एक नये खेलना का स्वीकार दिया। व्यक्ति के स्वामन पर दायुक्तरुप में सारीत्व निम्नाण का उद्देश्य उसमें प्रवृत्त रहा। निश्चित वैर या यह वारा की कविता आपके समय, पारंपरिक रूप में तीव्रधार होने के लिए, वह भी धार्मिक काय्य करके कर दर्शाता है कि यह भी सारीत्व का समर्थन है। एक धार्मिक वैर या प्राणितवाद वारा के प्राणितवादी काय्य करते हैं।

वीरामाणकः

सान्यायवं फ्रान्स रवीन्द्र, ३४० नामवर विहान, ३४० वर्त्तिक पारंपरिक विश्वास ने प्राणितवाद का सुवर्णवाट वालिद पारंपरिक प्राणितवाद देखक कंप की स्थापना के साथ ही माना है। इत्यंत आन्विकण के रूप में प्राणितवाद का उभ्याप ऊपरी पारंपरिक प्राणितवाद देखक कंप की स्थापना के कई वर्षों में वाद होता है, उसी तरह कई दिनों से ही हिन्दी कविता का प्राचार रंगमंगली की ओर चल रहा था। ७ इसलिए भी विशेष रूप से वारा की दृष्टि करते हैं। जाने वाले नथवो वारा के प्राणितवाद के वीरामाणक के दृष्टि के विषय में कई के धार्मिक दृष्टिकोण हैं, वह धर्म है, परन्तु वीरामाणक के इस दृष्टि के विषय में प्राणितवादी प्रेम दीप पलटता है। वारा रवीन्द्र फ्रान्स उक्त कर्म को ६० वाल ६६६२ तक निर्धारित करते हैं। ३ रवीन्द्र पारंपरिक उक्त कर्म का खान ६६३६ वाल ६६४६ कर्मान्त फरवरी ६५ वाल ६६४६ तक मानते हैं।

--------------------------------------------------

१. भिक्षु, दिनकोर की ओर, पृ० ३२।
२. वारा दिनकोर फ्रान्स रवीन्द्र: हिन्दी सार्धिवत, उक्त कर्म विवरण और विवरण, पृ० १०।
३. रवीन्द्र फ्रान्स रवीन्द्र: प्राणितवाद एक समावेश, पृ० ५६।
(२९७)

डातो गोमत्रे ने ब्राह्मणकास का शीर्षाकन्त धन १६४३ ते १६३३ तक माना है। चिन्तकर्ने के फर की तुर्भ (बागे ) उद्देश्य संक्षेप की गयी है। उन १६३६ में ब्राह्मण गर्भिणियों ब्राह्मणकार के संघ की स्थापना कहीं हुई थी, प्रातिविधि कहीं बाहर वाही रचनाओं का वार्षिकावार संव १६३७-३८ के आध्यात्म हुआ। हन्न इस सत्वकर्मका ने डातो गोमत्रे के फर की स्विकार करते हैं।

डातो नामकर सिंह ने प्रातिविधि के शीर्षाकन्त के कुल बागों में कम वर्गीकरण नहीं किया है, परन्तु उन १६४३ के बाद मौल संग की स्थिरता का उद्देश्य करते हैं। और प्रातिविधि की स्थापना का वर्मूँ संव १६५२ मानते हैं। २ डातो गोमत्रे ने ब्राह्मणवादी ताहद का काम बनाया है (क) प्रातिव -समीक्षक काद का शीर्षाकन्त १६३७ से १६४२ तक बना है।

उद्यमन विद्वान प्रातिविधि बाल्मेआं का कान रक्षानाथ धीर वर्णों में करते हैं। उनका प्रथम घरन संव १६४२ ते १६४२ तक, द्वितीय घरण संव १६४२ से १६४४ तक, तृतीय घरण संव १६४४ से १६४४ तक और चौथी घरण संव १६४५ से तक के १६५२ तक पाने हैं। पहले घरण में लघुविधि द्वारों का संस्थापन हुआ। यह प्रातिविधि बाल्मेआं का शीर्ष काम है, द्वितीय घरण में प्रातिविधि तेल्लों ने अपना लघुविधि खुले किया। तृतीय घरण प्रातिविधि बाल्मेआं की विकट का काम है। चौथी घरण में यह प्रातिविधि धीरे करना का लघुविधि और बाल्मेआं तेल्लों का एक संयुक्त घरण स्थापित किया गया। ३ इस तरह १६४५ से प्रातिविधि कानिका का रचनाओं का सूचना बुलाया गया। कहाँ उल्लेखावाले में प्रातिविधि संव १६५२ तक बनाया है।

--------------------------------------------------------------------------

६. डातो नामकर सिंह, वाचुमि लघुविधि की प्रातिविधि, पृ ७७, २२६.
२. डातो गोमत्रे: हिन्दी लघुविधि का इतिहास, पृ २७.
३. उद्यमन विद्वान: प्रातिविधि काओन्, पृ ४३-४५-४६.
नामकरण:

प्राचीन रूप से नाम पर दिनाकर, पारसीय रूप में वैर नीलन ने एक रीति है, कृत्तिकादि गार्ग, नारायण गार्ग ने भी हुएरी रीति है प्राचीन रूप की है। दान की देवी के प्राचीन रूप और प्राचीन शारिरिक का पैदा स्वविधा किया। उन्होंने किया एक प्राचीन का साक्षात्कार करे है जाने खुदाहुना। वह वाहिनी नीलन को जाने जुंग जुंग में शायद इस वर्ष शारिरिक है।

प्राचीन वर्णनकारी की जीवन में - प्राचीन का अंदाजे जाने खुदाहुना कठिन है - परन्तु एक विवेक वही - विवेक जी वही। उसकी एक विवेक परिशोधांत है। यह परिशोधांत का साक्षात्कार है दक्षालन पारसीवाणी। दान हाथी प्राइल निविदा ने प्राचीन शारिरिक का एक भारतीय विवेक द्वारा प्राचीन शारिरिक शासन प्राचीन वर्णनकारी की चालकता है, तथा साक्षात्कार है। उनके कारण सकार प्राचीन वर्णनकारी व्यापक रूप है।

किन्तु प्राचीन वर्णनकारी एक विद्वान तत्वज्ञ को सुनिश्चित करता है। व्यापक अध्ययन में प्राचीन वर्णनकारी उस दिग्गज दिग्गज की कहाँ किसमें बखर शारिरिक यान्त्रिक स्वभाव और संकुलता के प्रतिकार में विश्लेषण नहीं है; लड़ अध्ययन में प्राचीन वर्णनकारी उस दिग्गज दिग्गज की कहाँ, नहीं पारसीवाणी की जीवन वर्णन के कहाँ वाहिनी की कहाँ है। दाता नामक क्षेत्र ने प्राचीन को पारसीवाणी प्राण ने कई न स्वभाव कर उसे पारसीवाणी वर्णन का स्वामीक व्यक्तित्व के अनुसार कार्य है। एक अन्य रूपकार ने द्राक्षालन पारसीवाणी पद्धति पर जानकार वायुसंवेदन का सुंदर की प्राचीन का स्वामी कहता है। वापसी कार्य है वह सामाजिक व्यवस्था का व्यवस्था की प्राचीन का कार्य है। में शासन नवमी के हैं कि वह में सनातन का स्वामी को अन्तर्नीत कारण वहाँ का वायुसंवेदन का स्वामी के अनुसार को रहता है।

--------------------------------------------------------------------------------

1. दान नामका: आधुनिक विनव्य कार्यका का पुस्तक प्रकाशित, पृष्ठ ६६।
2. दान हाथी: प्राची: विनव्य: विनव्य (उल्लोक उदय और किकाय) पृष्ठ ५५।
3. दान नामका: बार्बार हृदय वाणिज्यिक शारिरिक का प्रकाशित, पृष्ठ ५०-५६।
4. पर्याप्त नारंगी: प्राचीन: एक लक्ष्य, पृष्ठ १।
प्रातिवध का मुख्य आवार : नामावधारी बैरन : 

नामावधारी-बैरन-बैरन के विषय में इसके पूर्व दायवादि एवं भौतिक खक्का के एक आवार स्तंभ के रूप में बार्बी की गरी है। यहाँ नामावधारी बैरन-बैरन को उसके 'विकासत' के प्रकाश में छविर सीटे देशी का प्रस्ताव करते 

नामावध को लाभवाद, वायवाद, वैज्ञानिक लाभवाद, अन्वात्मक या वैज्ञानिक लाभवाद बैरि नामाँ दे भी फुकारा जाता है। माथवाद की कई परिभाषाएँ हो जुड़ी हैं, उनमें पहले उफान कार्य मात्र (१८२५-१८३३ ख्या) और झूठकालीन एक (१८३०-१८३५ ख्या) के द्वारा प्रवर्तित है। नामाँ का बैरन बैरन अन्वात्मक लाभवाद है। अपने विकास का निरुपण करते हुए लाभवाद ने 'अमूर्त' की अन्वात्मक भौतिक प्राणिक नामाबः का उपयोग किया है। उत्तरी देश का अन्वात्मक स्तंभ अन्वात्मक है वर्तमान विश्व निर्माण परिवर्तनीकरण है। अन्वात्मक प्राणिक नामाबः ने भौतिक प्राणिक के विवरण-स्थाप्त (Thesis (विवाह-स्थाप्न), बैरन-बैरन (वैज्ञानिक विवाह-प्राणिक) और भौतिक (स्थापना-तितलिया-स्थापना) के द्वारा प्रवर्तित किया है। माटी से इनके ही विकास है परन्तु हैमी है नामाबः लाभवाद को विकास करते हुए लाभवाद को माटीवाद (Metamorphic) बना दिया है। 

---------------------------------------------
1. डाको प्राणिक नाम : प्राणिवध के भौतिक उपवाद, पृ ६५.
2. विवरण प्राणिक : दायवादी वाक्य, पृ ४३.
3. भौतिक प्राणिक, प्राणिवधारी वाक्य, पृ ५२.
एक गणपतिक व्रत ने मात्रविद्वादी विभागवाद (दोनों) को दीन श्रींकन के
किनारे का विलास है। वे हैं : १. द्वात्सास्तक पर्वतम किशोरवाद (२) मुया
हुआ का विद्वान और (३) मानन-सम्यक के विकास की व्याख्या। २ नामों के
क्लास चार्ज वर्ग विकास को है विकास या पर्वतम किशोरवाद या पर्वतम विभागवाद खारी
पर्वतमाला मानववाद एवं विश्वास के बाद परिकल्पना ले लेता है। उसी अनुसार
संगठन का युगाधिकार पदार्थ है, और लंबा की उत्पत्ति भिन्न विवथ या
बायानिक तत्त्व के क्षेत्र में नहीं हूँ। वातन की निर्माणता तथा को वह विद्वान
मानन्यता प्रवृत्त नहीं कहता। ३ उसी अनुसार पर्वतम का इतिहास है। वह विकास का कारण
है। यह सूचियाँ ने व्याप्त बैठना उद्धृत व शिक्षा तत्त्व पर आधारित नहीं है
इसपूर्ण लक्षि तत्त्व पर ही आधारित है। वातन से यह कि यह विद्वान इश्वर
देवी लक्षि या अति-शिक्षा की परेरंग प्रान्त को मुक्ति है। परेंग पर
पदार्थ स्वतंत्र है गोत्रिकोकिन है और इसमें गोत्र फंसा करने के लिए शक के इश्वर
की भावनाव्यता नहीं पकड़ी, वह तो पदार्थ के अनुपत्ति संपण तारों पर यज्ञ के सब
रूपों का तत्त्व परेंग लक्षि है। वह प्रारंभ का तत्त्व पर्वतम की बैठनी है।
पर्वतम किशोरवाद को परिवर्धित करने वाली प्रामाण्य का नाम कर्म है। कर्म का कर्म
होता है शंकर। २ का गति की श्रेणी जन्मी परस्पर विरोधी शताब्दियाँ है, जो
स्वयं वस्तु के कल्पना रखती है, शंकर या जन्म का व्यवस्थन करते हुए शिक्षा-विकास
का अवधारणा की उद्देश्य प्रणाली है। और व्याप्ति विभागवाद वह दिनों
है नाम विभिन्न को एक देशी प्राकृतिक पर्वतम कल्पना नामांकन है जिसके गुप्त में
विरोधी शताब्दियाँ का शंकर का रंग है। जन्म विरोधी शताब्दियाँ में निकाल ही
एक विनाश के द्वारा के शंकर से ध्येय, द्वितीय उद्धृत पर यज्ञ पर। ३ वह प्रारंभ दो
पर्वतमी शताब्दियाँ हैं कर्म है, ही लंबी का विनाश होता है। यही विवथ में पार्श्व

-------------------------------------------------
१ दोरो गणपतिक अनुस: हिन्दी साहित्य का वैश्विक संस्कार, ४० ७४, ७, ५.
२ दोरो नैनारा: बायानिक हिन्दी कविता की युक्ति प्रस्तुतियाँ, ५० ६५.
३ दोरो गणपतिक अनुस: हिन्दी साहित्य का वैश्विक संस्कार, ४० ७२
५ दोरो नैनारा: बायानिक हिन्दी कविता की युक्ति प्रस्तुतियाँ, ५० ६२०.
द्वारकास्थ भाषा स्वयं उपलब्धि की। अविश्वसित करनें कार्य गुनवार के अग्रणी उपकरण की। कुछ प्रत्येक जन की उपस्थिति उनके हृदय का सन्दर्भ उनके दिक्षित की प्रधानता है और प्रधानता की प्रत्येक जन की भाषा, उन प्रत्येक जन का प्रत्येक और विवेक भाषाकीवद है। *अ: द्वारकास्थ भाषाकीवद का अर्थ है – अनुसरण को उद्योग के हृदय में धमनात्मक सौंदर्य के अर्थ है अथवा (प्रत्येक जन) उनके अनुसार: सम्बन्ध और गति की स्थिति में रहते हुए (द्वारकास्थ) पृथ्वी की भाषा विवेक से विवेक के पास है अथवा व्यवस्था के अनुसार नाम अथवा द्वारकास्थ का उप्रेष करती है। तुलक द्वारका, दृढ़ व्यवस्था, विवेक का अपार और मूल में दृढ़। नाम नाम का अर्थ है कि वन चाहे वाणी के जनक सात लोगों नेमां उनके मार्ग अथवा उनके दिक्षित के बारे में उन्हें भाषा का उपर्युक्त परिणाम। अथवा अनुसरण की तात्कालिकता है। अथवा एक दृष्टि के अनुसार के भाषा का अनुसरण का उपर्युक्त परिणाम है। ज्ञात यह भाषा की भाषा, उन्हें भाषा का उपर्युक्त परिणाम है। व्यवस्था विवेक विवेक की है। व्यवस्था विवेक की है। व्यवस्था का इस अनुसार विवेक विवेक की है। व्यवस्था का इस अनुसार विवेक विवेक की है। व्यवस्था का इस अनुसार विवेक की है। व्यवस्था का इस अनुसार विवेक की है। व्यवस्था का इस अनुसार विवेक की है।
बक्ष्य लटर जाती तीन व्यवस्थाओं में एक बार विविध होते हैं कि बच्चों का अपना अपना जल्दी के गुजारने देव बचत का, उसके हाथों पर जीवन निवृत्त नहीं करना परन्तु उत्पादन का उपयोग रहना चाहिए। पारम्परिक तरीके होते हैं उत्पादन का गुरु अन्य विषयों का ही प्राप्त हो लिया करके उत्पादन के लिए उन विषयों के लिए। तात्पूर्व नीति पारम्परिक तरीके ही होते हैं कि वाणिज्य विषयों उपयोगकर्ताओं के चालकों पर विषयों का लाभ है। बच्चे के द्वारा प्रथम की वाणिज्यिक उपयोगकर्ता की बच्चों की बच्चे को गुरु ने कहा था: वाणिज्य के लिए उपयोग करना ही उपयोग करने का समाधान है। इस तरह पारम्परिक रूप से विश्वास का उपयोग काल्पिक समाधान की रचना है। यह उन वफादार उपयोगकर्ताओं और उपयोगकर्ताओं को नाम दे दे जाने वाले हैं जो मूल्याधार से उपाय करते हैं। पारम्परिक और विद्वानों की सांख्य विज्ञान के द्वारा ही काल्पिक समाधान की रचना है। पारम्परिक विज्ञान का मुख्य अभिव्यक्ति है।

पारम्परिक विज्ञानकारों में विभिन्न अभिव्यक्ति और उन्होंने सम्बन्धित बातें ही प्रमाण की भस्मों उस विज्ञान का प्राप्त बाल्य तथा कल्पना कालों पर पुष्ट है। पारम्परिक विज्ञान की आधार बाल्य कोई भी शिक्षा का परिणाम नहीं है, वह बाल्य की परिपक्वता बालरूप की उपयोग है। उन: काल्पिक और काल्पिक नीति विषय की है। बाल्य का बाल की उत्तराधिकार वर्तमान में आर्थिक सीमाओं से ही होती है यह स्वयं करने के लिए नार्वोल्वो। रिक्षे की ही, अज्ञातव रिक्षे है: विकास की प्रथम वजह के भीतर, संसार और काल्पिक एक हुई है ज्ञानप्राप्त धारा है किन्तु अंत निवार का गुट तल्ल अंत रहा और कल्पिक धारा के नाते संशय में लंबित किया नहीं रहा है। उन्हें नहीं दे दे कहा रही कल्पना की

--------------------------------------------------

6. उपलक्षन। सं॰ का: 'विज्ञानकारी काल्पिक', पृ॰ 93.
7. उपलक्षन। सं॰ का: 'विज्ञानकारी और रिक्षे काल्पिक', पृ॰ 100 दें उद्धर
क्रिङ्ग नहीं है परन्तु अन्य की क्रिङ्ग का अंत है ताल्पर्व कि अन्य कहा है गुरुस्चन है। हुज्जहद मान्यता वार्षिक अवधारण छोटे नै अपने विकार हस्ति वर्ष प्रकट किये हैं, कर्ता को तार्किक जुड़वां से आदर्शात्मक अवधा विनिधत अथवा वार्षिक कवर राष्ट्रीय उपन में वस्तु कर बहुत हूँ आदर्श वृद्धिभर्त में है। समकाल का गर्भ है। और पी कर्ता कहीं है वार्षिक शीर्ष के परिणाम व वक्त प्रकारक भगवान का परिणाम है वही। प्रकार का घमार का प्रविष्ट कहा है। कर्ता नामकी उत्पादन अथा आदर्श क्रिया है। इसी उस जागरण दुर्शिन किये है विश्व का इसका को चौंका खुला संगम नहीं है ४। वादि की विवाह चारा है इस तरह करा है वचनज्ञ में एक नकल हृदयकारिणे उपर्युक्त फिना है। अल वह नायारी दीर्घ कहावत या उपनायी ( सात्विकर्षायी कहे ) हृदयकारिणे ही कहाँ है पर रेक ते, तीव्रता वचनज्ञातरायी हृदयकारिणे पारमाणविक विवाहकार का दीर्घ प्रकारक है। इस प्रकार, हृदयकारिणे बढ़ जाने है दीर्घ कह दुर्शिनता का भी। बढ़ जाना जानाय प्रकार है। ना फुंड में जो व्यक्ति - 
सिंह-पुन्शर जो वह जान चित्रकला के स्तर रहते हैं। अत जो बहार दुर्शिनता का नाम 
केवल एक ही है - बहार। अत द्वारा है ताल्पर्व है परिवीक्षक तार्किक, विवर 
का अर्थ है परिवीक्षक शीर्षक वायुग्रंथ व्यवस्था में सहायक होने वाला और दुर्शिन ता 
बाण है स्वायत्तिक एवं प्रमुख। २।

नारायणों वस्तृति के अर्थ, अर्थ, कार और पौला जले अभीरो अथ के त्रिवृत 
प्रवाहित करे ही प्रवाहि देता है। कार अर्थ का अभिभव है और अर्थ 
शीर्षक की एक विवर्ण दो ज्युटिश प्रवाहित नहीं है, वह केवल अर्थ है अभिभव है। पौला 
का दी निरंत्र वस्तृति ही किया गया। यह शास्त्रीय तथा पराभविक का 
व्य पुरुष था, ज्या प्रवाहित हृदयकारिणे के कर्तवर वह लक्ष्यकृत ही गया।

-------------

२. उदाहरणस्वरूप शास्त्रा: प्रवाहित और हिंदी उपन्यास । पृ २००।
२. उदाहरण: गुरुमिन हिंदी कर्ता का कुछ प्रवाहित, पृ २००।
प्रश्न प्रश्निक्य (प्रश्निक विश्लेषण)

प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक
(२२५)

कौ विषय ना स्त्रोत है। धार्मिक का प्राचीनतम न तो दुर्गोस्तरीकृत है देशा। कहा, विद्वान, गौरी, बन्धु, आश्रम रहैलिसिमारे की उनकी दृष्टि है, प्राचीनतम ने उनकी कौ विषय का एक की चर्चा करकर कलना।

उसने काय को (धर्मसत्ता नाम को) अधिकारिकी व्याख्या में बन्ध करने से रंगारंग कर कर बन-नौकर में रूप प्राप्त कर रखा, जीवन और धार्मिक से मूल, धार्मिक-व्याख्या और उस नाम की व्याख्या और उसकी रचना से लोटा, मानना को हुआ है निस्संदेह कर परावर्तन पर प्रार्थित है। इस तरह प्राचीनतम ने कसी व बीतनें हिंदी काहार्य पर शिखस में कही सा की महत्त्वपूर्ण (ज्ञापन) बोली। २ राष्ट्रीय नाम ही तरह अद्वैत, अनन्य डोर्साइड व्याख्या के प्राप्त पर निस्संदेह के कारण कविता ने कसी व्यवस्थापन का कारण कहा है। १ मनस्वाद बस्ता की दृष्टि कर बड़ा, लघुवित है, प्राचीन-व्याख्या कवि की चर्चा नाम तक का विस्तार है, कहा, विराम तथा त्वरण नीति हैं आवश्यक बसा की शाब्दिक है, प्राचीनवादी कवि की व्याख्या बसा का पूक्रेम है, 

दौरान का बार बर्तन-बिन्धन कर जनता बाहर की विषयक कुछ है, प्राचीनवादी कवि का दृष्टिकोण बसा हुआ तक विश्व तथा विश्वस्ताय। धर्मवादा तथा अपशा कर निवध करा। । अग्रीजा हां या त्यासमान - अनुपात के उपरांत तथा संप्रसार ने हिंदी के प्राचीनवादी कवियों ने पूरी तारीख है साध कहीं अपाध भर्ति की है। ३ त्रिविषय विभव बिजली से हेतु एवं अद्वैत परिप्रेक्ष्यों की उड़कर प्राचीनवादी कवि ने इसे की निमंत्रण और राम्य का कारण भी आने के है। प्राचीनतम का प्राचीनतम नेष्टर ने नये अवसरों की आवश्यकता की गदगद ? नए नए सूक्ष्म के शीर्ष-शीर्षक है, कृतिका प्राचीनवादी कवियों ने इसके अवसर के कारण ग्राम नहीं की, इसके अवसर उनका उद्गम हुआ। नये का उद्धीरण है है। वामनार्थ कविता का आम्रह रहने के कारण कौटि कल्पना का आये का नहीं किया गया। दर्शन, धार्मिक और विश्वास को रंग प्राचीनवादी कवि जीवन पसंद का आम्रह कर ही महत्त्वपूर्ण नामते रहे।

-------------------------------

१. डॉ. रामचंद्र निवृत : हिंदी धार्मिक का हास्यवाद, पृ ९० डॉ. नेशन, पृ ५५।

२. डॉ. निवृत : प्राचीनतम, पृ ५५।
(२२६)

(३) प्रभावीकरण स्वतः निम्नलिखित पात्र-गूढ़:

राष्ट्रीयता वा देश प्रेम तत्त्वका गुण:

शायावद के स्वरूप देशवासियों की स्वतंत्रता की साधन का एक प्रमुख बाबाबन था। उस कला की परिस्थितियों के समय गृह के साथ एक उल्लास रहा था - वह था स्वातंत्र्य प्रारूप। प्रभावीकरण का व्यवहार के कारण के साथ की पारस्परिक स्थितिया - स्वतंत्र एक प्रवन्ध था, परम्परा एवं दौरान के विचारियों में स्पष्ट बनार था। शायावद के प्रबुद्ध था या नहीं था जो नात्से गायनी के बीच दर्द से प्रभावित होते हैं। गोर्जन तर्क के रूप में जानवाद (साहित्य की कविता के शायावद) था।

हाया की उच्च प्रारूप करने का प्रभाव था। प्रभावीकरण वहीं नाने को गणना आमतौर का जानवाद के दृष्टि में स्नेह का प्रभाव नहीं बनार था। गोर्जन का व्यवहार पहुंच तो ज्यों के रूप में करने में, खिलाव दर्दा बनाने में उसे कोई फाइक नहीं थी। हाया की किस्मत का व्यवहार करने के दर्द गायनी का था। हाया के ज्यों का समस्त प्रबुद्ध नहीं है। खि: प्रभाववाद का राष्ट्र व्यवहार अन्य प्रस- वाद का कोई वापस नहीं है।

1. डा० नोल्ला: आधुनिक राष्ट्रीय कारक की पृथ्वी प्रभावित, पृ० २०२।
(२२३)

राष्ट्र की धरती उसके राष्ट्रीय (प्रार्थनावादी काव्य) है लिए समानहीन नहीं है। यह अपनी स्वतंत्रता नामकरण का साधन है। जब दुसरे नामों के रूप में उन्हें उनके प्रति कहते हैं तो पूर्ण नहीं नामकरण पर्याप्त उसके लिए कठोर अन्य के पाने की कस्ता है।

सबका प्रति हृदय, किया कुष्ठा तुलना
सृजित नहीं, अग्नि कठोर अन नागरिक दर्शी।
और फिर देहरू! तुम्हारी कुष्ठा का खिला खिला रथनायक है,
बन्धु का वह रितल हलत करता
देखिये! तुम्हारे रूप जात निव शीश चुकाता।

यह और उस काव्य की वंदेमा अन्यत्त नामकरण हौंस कविता का बना में है
वो सुररी। और नारे-नारे का भावना है जीवन समाट पाण्डा को व्यक्त कारण है।
बैठे कवि के शब्दों में -

केत हमारी दूरग हमारी
धेरा देख हमारा है
करीब देख हमारे दरका
वन्या वन्या व्यास है।°

प्रार्थनावादी कवि की नामकरण ने उपार चारी का कार्य रखरखावों ने की किया
है। इस क्रिया ने कवि को प्रकृतिवादिक की स्वागत दें-दें-दें-दें-दें-
वासियों को भी करनेवाला नामेव्यक्त लनाये में सम्मान अनेक दिया है।

नाम
मेरे मित्र
तैरी नुस्खे वहीं
वने क्षण के अविश्वास।

---------------------------------------------------
1. नागाड़ैन : लंब, श्रृं, २५४४ के ७, पृ४४५।
फिर उड़े वैदिक फातमा
गुंज कर उठार उठे थे
प्रकट बैरी गान।

चिराजन चरचा के कान्ठ है। चरचा की विहंग उनकी कह निचि है। चरचा पर बन्दर गुप तिन्दी है। चरचा पर सरसर नीं निन्दी है। इस घट पर एक बुन्दर बुंदर में वे तन्मय लग जाते है और हन की। अथो वे कहते हैं:

जून्दर बुन्दर
जून्दर में
का बुन्दर
बुन्दर हुतर।

तथा करी
में पर प्रहुंगा
चर वरह
हुनला तर्पी
आर नियत
अयवी का
बुन्दर हुन्दर
बुन्दर हुन्दर।

राज्यीयता की मानना विन्यराज्यीयता की मानना के स्वरूप पर केवल पंक्तिकाला
स्पष्टी कर देती है। 1 कविता का वृद्धि एक निस्क्रिया की सुविधा को ब्यक्त करता
है। उनकी ही समायोजित है:

ने देशा है फि
पृथवी की स्वारण र पर

----------------------------------------------------

1. रामेश रामराम: अलंक संदूर, पृष्ठ ६६५।
2. ग्राह्य : चरचा, पृष्ठ ८४।
वहाँ की क्वेश्चा या लाइर
वस्त्र पर एक पेरी इक्षुवाली है।
वहाँ है गोर गहरा एक पेरा पी,
जब पेरी उपस्थित, निच्छ सम्यवार खैँ।
एक पेरा यी वस्त्र पर प्राण प्रक्षिप्त है।
क्यूंकि, तमस, गिनत
कहें आलम-हाय-फिक्त !

दीवी साहित्य में प्रक्षिप्त है: कवि अनना नामक चर्चा। यस शब्द से नक्षर शब्द
अति है: भीत है है शब्दों में देखें कि --
देख नहरा चर्चा अनना कवि नहरा के ठाउँ
नया लेलार व्याख्याकी, नया उत्साह व्याख्याकी।

दीवी कहते हैं की तारह रामायण शहर की राष्ट्रीय मात्रा नर्तक को कव्त्तारी--
प्रक्षिप्त की और खोर करती है। नया भारत कविया विकेल, कहते भी उत्सप्तवन
है वहाँ नर्तक की दृष्टि करती है और उसके प्रति आपकी अनमोल-कथा फक्त है और
उत्सप्तवन जोड़ी है कभी पहाड़पुर्णि प्रकट की है। नर्तक के मात्राने के बतौर हर्म
हर प्रक्षिप्तकी भी हस्तिनेश्वरी योगदानों में होते हैं:

बारी उत्स-प्रक्षिप्त की और पारम्परिक अक्षित
बारी वन-जन में नर्तक की जन्म वित्तिकरत
इस नामकृति पर करार प्रशिक्षा नाम-जन
नर्तक जवेन है जबुत्र रहें।

शोभण तथा लेलारा कवि है प्रति समाचार एवं उनकी समाचारा -मानवीय मुख्या

के नये अर्थ में:

---------------------------
1. पुकारतात: नर्तक का पूर्व देखा कवि, पृ २३९.
2. रामायणकालीन समाचार, कपिल हर्म, पृ ४४.
काव्य की साहाय्यक बातों के लिए, फिर से दोनों सही हैं जिन्हें रचना करने का उपयोग है:

ताल होने वाले नाटकों में गाती हैं,
रामी देवी के दृश्यों को देखते ही कांड के लिए नाटक होते हैं वर्तमान,
कंठी ही बानी पर रूप होते हैं,
कांडों-कांडों,
राज्य की बादशाही में घड़े हो जाते हैं हुनावा का।

काव्य की साहाय्यक बातें कोई न रखते (प्राप्ति अनुसार) (तस्वीर के समय दिये गये) कारण)
बेदवा का स्वर रिश्ते नहीं है। काव्य एक दीन हुनवाए के अभाव तक को लेकर
वहादुरता व्यक्त करती है:

दीन दु:खी वह दुःखा
वाग्नी की शर चर में कांड का
अपनी बायारी में जोङ्डा
ताप रहा है कांड का।

वहादुरता का स्वर दु:खायों पर पहुँचे वैवेकस्वरूप युद्धायों की गुरुकुल तक काव्य का
स्वर विस्तारित हुआ है:

अद्ध और पहुँच लानाश्यों
वैवेकस्वरूप युद्ध की पार
छुटानें की बुद्धास्तों पर
do काट रही अपनी राजनी।

----------------------------------
2. केदारनाथ अग्रवाल: सूर की गंगा , पुं. 20.
2. शब्द , , , , पुं 20.
3. शंकर गौड़ वेळेद हुनन : प्रसाद-पुस्तक , पुं. 2.
(२३२)

काट रही थी एन मुन्न की आनंद पीठ रहे थे। आनंद के रुप नबनाचा बन सहायता ने उरकिया पात्र के तप में लगा है। लेकिन वह है कि वह सर्वश्रद्धा जन बतात मैठन की वापसी है। वह धुमर में आनंद रीता के इरा प्रथम है।

जोशि-कर्म, गृह - दीन
सुमारंश का क्षेष भंग - मुखता र्याता
भाग रविवारां तु है
कित कर्म तारा
पते प्रेम में गाँव मिट गयी
गर-पूजा के वन्दन की रेता
भाव-भावना एक दुर्लभ पर
टट रहे वह ध्वन में बोलता।

पक्का की कहानी और वैज्ञानिक र्याता काव्य तो सहायता की पागे करती है।
कहानी दीन का वशधर ठीक उपर आया है, एन पवित्रता में -

पर्वत अन्वेषण पर चढ़े बंधे
कहारें आ रहे हैं पक्का
और वह न स्वा आते
ऐहे जाने बिच्चे हुए
जाने-जाने दुखे जाने
एक व्यापा वह रहे हुए
अभी भ्रमण कुछ विचार लन नय
रजनाव गम्ये हुए पक्का।

-------------------------------------------------------------------------------
1. डाः आनंद प्रकाश दीक्षित : आचार के ओकेब्ब सिंहकी काव्य, संकलन मिलिंग
    पुस्तके वरा ६०-६०५.
2. संकलनका रामेश्वर रामचंद, राह दीपक - पक्का कहिता है।
और वह स्वाभाविक ना सिक्सार वौंषणि के बारे में निजी हुके जाते वौंषणि के नवायत बुबा तक , पुत्रा तक एवं देवादुस्त आंगि में गई होता है वह शरद बह चनारा चनारा मीठे लैँग है । कवि के शब्दों में --

में तुम जोंगामे जो बनता है हुईँ

........................

में कसकट गई केटा है
केटे -डोबे कै नीं गई केटा है
दीवार कच्चा में गुजरे चुराता है
dुहारे आँगाएं होता है ।

कवि के जन्म दु:स्त की पीज़ा का नाम करने के लिए विभेद हो उठा है :

पुत्राओं के तिरी हैं पीज़ा की दलच है
वैज्ञानिक बाल्ट परमार्थ गुनघर है अन है
दल नींवा एक है जैसे कि
हुंलों का दर्द है ।

मानव - चनारा का जन्म का नाम करने के लिए विभेद हो उठा है :

धारावाहिक कवियाँ ने बैंक जीतने से प्रभावित होकर मानव चनारा नामक चनारा के गुलाब का निर्माण करने की कविताएँ में किया था , प्रभावित कवियाँ के कवियों ने पी नाम - चनारा नामक गुलाब का उक्ति नामा में नहलत पक्षा है । मानव चनारा की कवियों के सम्मानित किए विना मुक्ता ने प्रेम नहीं हार दिखा । यदि वायु चनारा रिंगी ने शक्ति बदली है तो मुक्ता चनारा को साहित्य की वृत्ति नहीं करता ? कवि कहते हैं --

वी चनारा यह वायु शहदा दूकाराजी है
श्रीमान के पावन कविताओँ की झड़ा झगा

-------------------

१. मुक्तिवार्ता, : चनार का हुक देखा है , पुस्तक ६४।
२. वही " " , पुस्तक ६४।
(232)

कपड़े नीले एक दृष्टि से रतना करते हैं
क्या मुख्य उस दक्षिण की अंकियार कर
पर्वत देखना, पर्वत की दीवार, उदंडमुखत्कुपण
करी हो लेना इस द्वारा जो जनन अमृत
उन्नी के मूल विश्वास आकर्षक।

काव्य द्वारा विश्वास की कहानी का अखेर कराना बाह्य है। मुख्य है पाबंध
ने काव्य का आर्थितादायी है। कहाँ झेलौ, नार्ति, पर्वत, कहाँ हो वेद की अंकियार सकते
की प्रतिकृत्य रतना आकर्षक नामाच हैं। यह भङ्कताय के काव्य ने सकता की कहानी
का गान किया है:

एक बीज में निषिद्ध कांव्य वन-रक्ताद—
एक विषम ने विषम कांव्य चिन्तु गान,
देश-जाति, पर्वत, कहाँ वाचौ अक्षर
एक ही हूड़ वार्राठ ने प्रभुमान।
रूप-नाम-नेत्र दुर्जया नहीं पड़ियन
एक स्नेह विषम चरित मिलन प्राकाश।

वानव जनानव फैला करी। कल्याण से न निनित्त होपौि, न आ तकौि। उसे
कच दबाय उपाय प्राप्तवादी काव्य की दीपदाता है, और वह विश्वास का अखेर
कर देना। इसी नाम को व्याख्या करते हुए सूफीचा की पंक्तियां इस्तेमाल हैं।
काव्य का आगरह इस पंक्तियों में सकता हैं उद्देश्य है एक मीठे है, कल्याण पहली।
काव्य इन पंक्तियों में कहते हैं:

विकसित चित्र की अथा पर दूरित तक रीतियने न देखी।
यदि धाता कर दु उन्नी विखलार मां की कोई तैरी।

-------------------------------------
1. गांधी , पृ २२५.
2. विकल्पादित विहरुदाने अकादमिय विनिर्द काव्य , पृ ७७
नानकदास नाम का प्रतिष्ठिता:

प्राणविवादी कंकाल के कांवर है न केवल प्राणविवाद करना, दीन-दुलिया को फिक्त दे देना का यथार्थ किया है, परन्तु उनके प्रबंध नहीं। सहानुभूति की व्यवहार की है। नागालूर, कैलाप, संसार में, दुम्प, और बुलियावाद उन उपेक्षाओं के अधिकांश निकट पहुँच है। प्राणविवाद के अस्तित्व में ही उनकी दुवाक्क इन्हें धार्मिक व्यवस्था के दिशा में प्राण देने का लक्ष्य प्रस्तुत करने में उपकर के बाद देती है। प्राणविवादी कंकाल उस कारण से है, और लोक के मानववादी कंकाल है, फिर यह प्राण है स्वरूप यत्नव्यवहार को प्रवर्तित करते है। उनके धर्म के बाद वह बुलियाद की क़िला। प्राणविवाद कंकाल के केवल श्रौच्या दे जो प्राणविवाद का ही है, फिर शुरू है। उस श्रौच्या के निंदाकार जाते हुए उनकी लीपलाई-बिच के कारण। प्राणविवाद कंकाल के नम अपने श्रौच्या के दर्शन कर उसमें नव आत्मा बिचवाद परता है। वह स्पष्ट उन पर्वतवादकरों के निंदा श्रीसिस करता है विशेषज्ञ मानव-धर्मवादी करने चलता है ग्रंथित हो सक।

प्राणविवाद कंकाल सबके कारण बात होते है क्षेत्र कांवर प्राणविवाद है और उसके अनुसार प्राणविवाद कंकाल पुष्टि है।

---------------------------
1. खिलंश | बिलंशुमेढ़ निवास विप्रवाद करूर है नया, २० ९।
2. डाँट निलियोर निवार, प्राणविवाद, २० ४५-४५।
(२३५)

कीर्तिका मानव - महिला तुलना
हुन मानव-जीवन के बारे
हुन मानव - जीवन के कारण
हुन मानव कीमत के बारे
खिलु वाक्यार रे निजाज मुन
अपना अभिनव बनाते चारती पर
अनन्त विकास पिलाते
चाहिए वचन क्षण का।

मदुर्या की बोधण वे लुगा करने वाली यह गद्वीरीत्व ही उन्हें प्रतिविधीत बनाती है।
गदवी बोधण, वाल्स दे पुनित ही उक्त हा उद्ग्र है। कवि एक बड़ी-दी वाल्स-
विवाह से अपना आज्ञाका स्वर व्यक्त करते हैं: वाल्स का पुलिमण स्वर जिन्हा
उख्यात है -

पर क्रिक्क के वृद्ध क्रिक्क है इतना
क्रिकर वाल्सा अवश्य में बिखरा
मभी नायरत करेगा कोखरा चाण ये
चारी चारी की स्वामीन करेगा।

मदुर्या की बोधण वे उमावत है फिर प्रलिप स्वर्णिम कवि विवाह के बाहर की
खेलादों के स्वर में वाल्सवाटर वाही का चुनाव रहे प्रतिवास करते हैं। इन परिवारों
में कवि की बाणी तोड़ उठी है:

१० वाह वाही दादरीं की नहीं मिला एक खाना
११ वा, अन, खाना निभे चर्कर वाहीं बने तमाम
११ वा-पहुंच वाही फिलानाँ में बदन मुट्ट वाहीं

नहीं मिली कुमार की निर ये पर बुझारीं मंगरायीं।
नोकर ताकी का वह रही दाँता होगा हरम दर
बुधवा सुकूरा से नारीले गीत प्रसन्न निवास नूहर।

शोभण के दारा प्रायत्न का कैसे काव्य की तबर में है है। कविता का यही कारण इंटे से बाहा है। कल्पना विषयक में ही हुम का कारण देखे है।

कवि के शब्दों में -

दे नानक के धड़ी दैवत
दे हुम के अपना वरण रंगिन
धर्म रूप के महामाय
वास्तव सम्पूर्ण दिली।

दस्ताने वाले वर्तमान में बहू की उपेक्षान, विज्ञान, ज्ञान आन कवि को मिल जाते हैं
कवि की नाटक की चम्पत्व के उनमें साथ मूर्तित मैती मान होता है। कवि की
ध्वनिता का प्रारंभ वन दुर्ग उजाड़ जाता हैं किंवा है है कवि अपनी नाट भी
प्रारंभ व्यक्त करते हैं:

कुछ प्रम होता हैं न फक प्रत्येक पत्थर में
काला फीरा है,
छाए दांवी में जाप्पा फीरा है
प्रत्येक नुकसान में निवास फीरा है
कुछ प्रम होता हैं न कि प्रत्येक वाणी में
पवालाय दीढ़ है
पत्थर में तब में ते लढ़राना फांसा है
प्रत्येक दर में दे तिर जाना फांसा है
यह वर्तमान हुन ही को संबंध दिये फिरता है
कवी जो ध्वनित है।

2. साहित्यकोष, जैन-३, दैत्यकुल ग्निन, प्राणिवादी काव्य है पृ७५ अध्य.
3. रागमय रायमय, (साहित्यिक) निकली पत्थर, पृ३५ अध्य.
4. बाळ का शुद्ध छिड़ा है, पृ७२ अध्य।
नारी स्वातन्त्र्य की मायना : 

हायावायदी काव्य में नारी की बन्दन्नी अवस्था कवि को ग्रास नहीं है, वहाँ चुक कराये गईं नारी के बारे, मानव, विराजमानी नारी की कवि के काव्य ने कायम की है। प्रर्थिवादी काव्य में नारी की दाबीय अवस्था की ओर आदर्श के भाव बाल रहे हैं, तैत्तिक और उत्तरी स्वर्गीय दुर्गाजन प्रकाश के रूप में प्रमाण दिया है। नारी की यह स्वतंत्रता का चित्त हमारा ध्यान वाक्ष्प्रृत करता है। यह तैत्तिक कव्य के समर्थन में -

बाजा नहीं नारी का उद्यम
कर्म का वाचा
बारा हे पर माताएँ
जनता है बनाए जाता।

कवि का यह धार्मिक कवि अनुसार है कि नारी की यह अवस्था का उद्यम यह पुर्वीयादी स्वतंत्र धर्म करता है। का तर कह स्वतंत्र रहेगी, धीर जनाए की स्वर्णित ओर नारी की स्वातंत्र्य में दुनार नहीं पद करती है। वार्तक स्वर्णित की स्वतंत्र में उनके लिए स्वतंत्र जनाए की अवस्था है। आचरण यह धुन-धुन बालक नारी के चर्चा पर की उद्धरण पापी पैट। नारी की परास का देश नहीं की बात है, रखता है केवल ना स्वातंत्र बनना। कवि की उद्यमी दिना कव्यकवाला में व्यक्त हैः

पापी पैट पाने में ही लैंड भरता हुई गई है
बारा पर पत्थर पर ना की कार पर कही गयी है
किसका स्वीकार आउँच पथ पर धीर हुई काच पढ़ा है
यह कित्ता कहाँ फहराया है।

यदि नव निमाण (बालरितिक) अनुसार है तत्सृवीयादी धर्म का नाम ही

1. शिवमलं गांव, प्रलय सुनगन, पुष्प २।
2. शिवमलंकों गांवें सुनने, बीस ने गान, पुष्प ४६।
करी है। क्योंकि उनी भवस्था के कारण ही नारी का इलाक्ष-पाक्षिक बोध में है। यह दृश्यता बदलती ही है, कराव का यह दुःख है:

विज रहा पुत्र नारील ज्ञान
बांहो से थोके ठुकरे में
कर्म ओपरा पानन वाल हो नचिरा से ठुके ठुकरे में।

बारे काव्य की व्यंजनता आर्य पर बोध जो वह स्वाभाविक है।

(सामान्य) कार्त्तिक, मुख्य के प्रवम में:

राज्यार्थी-सार्वत्रिक कार्त्तिक कृप्या अन्तर्गत सन्तोष मुख के संबंध मानक पहल मुख की तरह की गयी है। प्राणिवारी काव्यार्थ के अन्तर्गत कराव उदय मुख पर जोड़ा है। यह बंशों दी परम हुल नाता गया था, परन्तु आनंदी के संबंध में कार्त्तिक प्रकट होते है। नतीजा, अनुभूति का जनन हो लेकिन स्वरुप उद्धरण मुख की आश्वास्का है। का जीवन पारंपरिक है उस दशा जीवन मुख की मनाये बापहरा उपदेश का आवश्यकता है। कार्त्तिक के प्रकट है हाय काव्य के प्रभाव एवं काव्य प्रकटिक प्रकट कर रही के राष्ट्र, संस्कृति के विषय में काव्य कल्पना करता है। कार्त्तिक के प्रकाश हैं द्वारा काव्य बहुरस्त विश्वास बारे प्राचीन वामनवाज पर कारारी बोध कर बलता है। काव्य की इच्छा है:

कर तुन मिलुएँ, दिला हुइ
तु माने पारा रा का कर्म
परायता विनिमय तांका दिला
मती गद्दि का उप्रेस कर।

1. प्रथम भुजन, पृ 8.
2. सभी भुजन: कन्या काव्य: नो मुख्य, पृ 88.
3. भारती, पृ 27.
वर यहाँकी नहीं हैं। जानिन्त है, वह भविष्यत पदार्थों को नष्ट कर नहीं निभाया का पुनरुत्थ कर जाती है, तथा जीवन में, जो वायुहृदय में। जानिन्त से गुलाम ने - क्षणभर के लिए, एक नये पुत्त के बज़े काट दंत है। प्रतिवादी काव्य सांसारिक भाषाभा दृष्टिकोण वक्ता कही बहाय नदी में नाओ उठाए, तो वह रात का प्यारा नहीं है। उसे वही क्षेत्र में निर्दार करने वाले नहीं करना है। काव्य की पुकार न्याय संगीत हैं:

बात वो में अब तरफ आदेश में हैं। अनुवाद हैं।
यह न मझारों में किसी देखी रूह का भयावह बनाता है।
बाबा हूँ भक्त कर बैठा विषादता की कहानी,
वो सुख बहुती कड़े में वसूल, मोहम उन पक्षी।
बन मानो संग्रहण अर्थ में विनोभ प्राकीकरण का
गुड़ उठाने वह राह हूँ खुदकार जलाए।

काव्य क्रांति के दारा है। काव्य और जीवन संदर्भ में है विराम वाक्य करना चाहिए है।
जानिन्त के स्वर उसके गान में नूट पड़े हैं, उन्हें काव्य की वाणी में:

क्षेत्र हूँ वाक्य कर हूँ हर दुर्गे बार पर
काव्य हूँ, नया पुत्त बुरे यथार्थ अपनायें
उन गानों में अपने शिक्षा गान गरेंगे
जिसकी वीने गायर है।

काव्य आगामी भाषा को कही राह लाना वाष्ट्र है:
काव्य विरामित अन्वेषण से आगे-आगे, आगामी भाषा, तब तक वे एक रचर खड़े।

---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------
1. श्लोकप्रम विश्वास दुखता ही नवा है (बान के भक्तिप्रम फिंडी कविता)
2. भावास अनन्त प्रकाश की चिठ्ठी, पृ. ७४.
3. भावास हृदय का काव्य को पुल्ल पर विचारण की काव्य का बैंक, पृ. ७६.
4. वैदिक
भारतवादी काव्य की ज्यानित है इसके अल्पसाधनों और सौंपणा का कच्चा ही है। इसके भाषा से एक रंगवास है। काव्य की नवीन सूचे के उद्देश्य की फांकी होती है। काव्य एक गोल आर्थिक साथ बोलते हैं:

नयी। नयी कहाँ रंगकर पहरी। कादें के हुए बहुत है। ये व्यक्ताओँ
बाद कहनी दु:ख और सुख के वे व्यक्ताओँ
पावरंजा दिया। यह साथ ही बनी वह हरियाली।
लापरों बने देही रूप हारे पुराने की वारै। १

भारतवादी। काव्य दीन-मुत्यायों के हुँकारे वे वारै। वहाँ निराकर नहीं,
उन्हे विवाह है। यहाँ बाहर है कि ज्यानित की फिरणे गढ़ वन को विवाही ना
कर नये बिदास को किसी जागेंं और घरें। यह राज फिरणे यह बोनी विवाह
बाहें।

वारा कूड़ा। जुला की बसाते हुए एक काव्य वे ज्यानित को चीकार रूप कर की है। श्रीरंग-विक्रण पुरानी मानवाणी, विद्वानों की मित्र करने के लिए
ज्यानित उन्मायवर है। साथ ताम एक गयों ने परंपरागत मुख्य एक ईव्वर, करण,
श्रीरंग विक्रण, तथ्यों आदि मुख्य पर कृपया करे हुए उन्हें आवश्यक कर
विदिया है। इम्प्रेशन स्वरूप है कि पुरातन परिस्थितियों और मुख्य काव्य के नवीन
वाँतीक न बननें। न चिन्कित होने। इसी बुझकी का उन मुख्यों के प्राति वास्तव
प्राप्त है:

ईव्वर ईव्वर में बाबू फूंक गया बंजारा,
उड़न उड़न उड़न। कंठा फुलका का पर
मी बोढ़ कर की बोढ़, पर इतना बुझा।
तुना उड़न चड़ा अलसे देश बस उच्चार। २

र. हम्मदीं (राधामश्व शाना) पृ. ५० अक।
र. बिबीराज रंगीं (विक्वाद बहुता ही) गया। पृ. ५४ एक।
काव्य नुमा की दृष्टि से प्राणिवादी काव्यता :

प्राणिवादी काव्यता की शेषों तौर पर आदर्श सिद्धांत शिल्पकृति लाये हैं के कारण उसका भावरत्न हायावादी कविता की भाव-समृद्धि के लायक लगता नहीं दिखता। प्राणिक प्राणिवादी काव्य चरित्रक गान के रस्सिया पर सृष्टि नामक का प्राचीन इत्यादि है। उसके उसके मनुष्य का सामने व्यापक आरंभिक शैले और व्यापक प्राणवैद्यक कुल उत्साह रहित है। प्राणिवादी के वास्तव में एक 'विश्वस्त वस्त्रस्वाद' का प्राभाव कहते हैं वर्ष: यह व्यावहारिक है उद्देश्य है की जितना यह तैयार है। आदर्शात्मक दृष्टिकोण फिर से यह भाव के बाद के वैश्विक साहित्य के रूप में विश्व के दृष्टिकोण है। परंतु यहाँ वन्न चरित्र के प्राणिवाद के लिए कहते हैं। यह छोटा है यह जितना साहित्यिक नहीं है। विज्ञान की 'वर्तमान' में प्रौढ़ विश्वस्त रूप में कहते हैं। केवल अन्य आदर्शात्मक दृष्टिकोण की जिकी की गंगा 'में उर्मिलारुप और नर्तकी की कविता' की बहुत पाठ को बाला करने में सहाय है। उन कविताओं में रूपांतरित नाव की दृष्टि हुई है और यह छोटे ज्ञान अन्त धारण करती है। प्रकृति के मनुष्य रूप में देखने और चर्चा स्वर्गगंगा के साथ उसके देखने का गहन धार्मिक प्राणिवादी कविता से है, ऐसीहासिक दृष्टिकोण यह लाभान्वयन नहीं है। रुपांतरित आदर्शात्मक भावना है सफाई बन श्रीवास्तवके 'दृष्टि के तरीके' द्वारा उपयुक्त बनाए वह धारा ने मानने 'विश्वस्त दृष्टिकोण', मानवीय दृष्टिकोण को फ्रेम किया है। दूसरी तरीके से नाम गाने वाले हिंदु कवियाँ ने वास्तव से सबका दृष्टि मन करना नहीं है जो इस धारा की कविता में प्रक्रिया के तरीके को उद्देश्य हैं। इस धारा की कविता में उद्देश्य के नहीं नित्य जी वाहा वाहा कविता में प्राप्त है, यह तरीके द्वारा उपयुक्त इन कवियों ने एक नया वाहा धारा से अपने को प्रेरित किया है, इसने कि नहीं वाहा निकालक हमें धूम-दृष्टि में बड़ा बनाया जाया गया है।

9. आदर्शात्मक हिंदी प्राणिवाद गिरजाधर: हिंदी साहित्य, पृ. ३०४।
निष्कर्ष:

इक विशिष्ट तत्त्ववाद पर जायगार्थ हक प्रभावितो यह विभावादी करकला अपने दूरी तथा कुल करकला है। हिंदी करकला के विकार में एक नया अन्य वापसी है। उसने करकला को व्यावहारिक न नामकर अन-काव्य के भीतर, जतन के लिए प्रवाहित किया। जीवन है ही वार्तित्य का उद्यम होता है, यह जल्द है वह वार्तित्य की वीणा पाना है उजना ही वल्त्त है। जीवन का इन क्रियाओं ने गुणस्तिकश व्यक्ति कर जीवन है वन नाता बढ़ रही। वार्तित्य किसी नदिया का उदार वार्तित्य उन के लिए ही। देख वार्तित्य की सांसारिक मूल्य में एक नवीन दृष्टिकोण उपस्थित किया। यही करकला सामान्यिक जीवन की वास्तविकता को देख वन, इसमें उसकी उपस्थितित की दैर्घ्य ही जीवन के संस्कार से व्यवहारिक, सीटीय और शरद करी।

इसे विचारितों उसे कहने एक्षेत्री दृष्टिकोण को वार्तित्य करने हेतु कारण बोलिती है। उस पर वह बाहर यह है, जीवन है वन, पहुँच इस कार्यक्षेत्र ने उपज्वित कर दिखाई है नहीं है, तैयार परिचय पता की वास्तविकता का गान वह करकला करती है; वास्तविक पुरुषों का उसने जानने किया है जानन। परन्तु ज्ञान होने पर वह वार्तित्य और विविधता के साथे नवीन निर्माण का विचार किये है। जागरण हजारों प्रबाह का वह क्षण नहीं है, प्रवाहितों वास्तविक बहुत पहले उद्देश्य वह वार्तित्य है। इसमें वास्तविक प्रवाह का प्रश्न नहीं हुआ तां में इसकी संस्कारार्द जवानिक है। वरिक्ष प्रभावितों कार्य कोई विशेष मतवाद नहीं है, विकार यह एक नवार्थ प्रवाहितों वार्तित्यचक्र है, विकारीका का यह कथन वल्त्त है वह सूचना विविधता रखने वह कोई हार्पर नहीं है।